१८-१-९९ ओम् शान्ति ''अव्यक्त-बापदादा'' मधुबन

वर्तमान समय के प्रमाण वैराग्य वृत्ति को इमर्ज कर साधना का वायुमण्डल बनाओ

आज स्नेह के सागर बापदादा अपने अति स्नेही बच्चों से मिल रहे हैं। आज का दिन विशेष स्नेह का दिन है। अमृतवेले से लेकर चारों ओर के बच्चे स्नेह की लहरों में लहरा रहे हैं। हर एक बच्चे के दिल का स्नेह दिलाराम बाप के पास पहुँच गया। बापदादा भी सभी बच्चों को स्नेह के रेसपान्स में स्नेह और समर्थ-पन का वरदान दे रहे हैं। आज के दिन को बापदादा यज्ञ की स्थापना में विशेष परिवर्तन का दिन कहते हैं। आज के दिन ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में बैकबोन बन अपने बच्चों को साकार रूप में विश्व के मंच पर प्रत्यक्ष किया। इसलिए इस दिवस को बच्चों के प्रत्यक्षता का दिन कहा जाता है। समर्थ दिवस कहा जाता है। विल पावर देने का दिवस कहा जाता है। ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में कार्य करा रहा है। अलग नहीं है, साथ ही है सिर्फ गुप्त रूप में करा रहा है। यह अव्यक्ति दिवस बच्चों के कार्य को तीव्र गति में लाने का दिवस है। अभी भी हर एक बच्चे की छत्रछाया बन पालना का कर्तव्य कर रहे हैं। जैसे माँ बच्चों के लिए छत्रछाया होती है ऐसे ही अमृतवेले से लेकर ब्रह्मा माँ चारों तरफ के बच्चों की रेख-देख करते रहते हैं। साकार में निमित्त बच्चे हैं लेकिन भाग्य विधाता ब्रह्मा माँ हर बच्चे के भाग्य को देख बच्चों को विशेष शक्ति, हिम्मत, उमंग-उत्साह की पालना करते रहते हैं। शिव बाप तो साथ में है ही लेकिन विशेष ब्रह्मा का पालना का पार्ट है।

आज के दिन भाग्य विधाता ब्रह्मा हर बच्चे को विशेष स्नेह के रिटर्न में वरदान का भण्डार भण्डारी बन बांटते हैं। जो बच्चा जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित हो मिलन मनाते हैं उस हर एक बच्चे को जो वरदान चाहिए वह सहज प्राप्त होता है। वरदानों का खुला भण्डार है, जो चाहिए, जितना चाहिए उतना प्राप्त होने का श्रेष्ठ दिवस है। **स्नेह का रिटर्न होता है - सहज वरदान की**

गिफ्ट। तो गिफ्ट में मेहनत नहीं करनी पड़ती है, सहज प्राप्ति होती है। गिफ्ट मांगी नहीं जाती है, स्वत: ही प्राप्त होती है। पुरुषार्थ से वरदान के अनुभूति की प्राप्ति अलग चीज़ है लेकिन आज के दिन ब्रह्मा माँ स्नेह के रिटर्न में वरदान देते हैं। तो आज के दिन सभी ने सहज वरदान प्राप्त होने की अनुभूति की? अभी भी सच्चे दिल के स्नेह का रिटर्न वरदान प्राप्त कर सकते हो। **वरदान प्राप्त करने का साधन है - दिल का स्नेह।** जहाँ दिल का स्नेह है, वो स्नेह ऐसा खजाना है जिस खजाने द्वारा, बापदादा द्वारा जो चाहे अविनाशी वरदान प्राप्त कर सकते हो। वह स्नेह का खजाना हर बच्चे के पास है? स्नेह का खजाना है तब तो पहुंचे हो ना! स्नेह खींचकर लाया है और स्नेह में रहना बहुत सहज है। पुरुषार्थ की मेहनत नहीं करनी पड़ती क्योंकि स्नेह का अनुभव हर आत्मा को होता ही है। सिर्फ अब जो बिखरा हुआ स्नेह था, कुछ कहाँ, कुछ कहाँ था, वह बिखरा हुआ स्नेह एक के ही साथ जोड़ लिया है क्योंकि पहले अलग-अलग संबंध था, अब एक में सर्व संबंध हैं। तो सहज सर्व स्नेह एक से हो गया। इसलिए हर एक कहता है मेरा बाबा। तो स्नेह किससे होता है? मेरे से। सभी कहते हैं ना मेरा बाबा, या दादियों का बाबा है? महारथियों का बाबा है? सबका बाबा है ना! आज के दिन कितने बार हर एक बच्चे ने दिल से कहा - मेरा बाबा, मेरा बाबा। सभी ने मेरा-बाबा, मेरा-बाबा कह रूहरिहान की ना! सारा दिन क्या किया? स्नेह के पुष्प बापदादा को अर्पित किया। बापदादा के पास स्नेह के पुष्प बहुत बढ़िया से बढ़िया पहुंच रहे थे। स्नेह तो बहुत अच्छा रहा, अब बाप कहते हैं स्नेह का स्वरूप साकार में इमर्ज करो। वह है समान बनना। अभी यह समान बनने का लक्ष्य तो सभी के पास है, अभी साकार में लक्षण दिखाई दें। जिस भी बच्चे को देखें, जो भी मिले, संबंध-सम्पर्क में आये, उन्हों को यह लक्षण दिखाई दें कि यह जैसे परमात्मा बाप, ब्रह्मा बाप के गुण हैं, वह बच्चों के सूरत और मूरत से दिखाई दें। अनुभव करें कि इनके नयन, इनके बोल, इन्हों की वृत्ति वा वायब्रेशन न्यारे हैं। मधुबन में आते हैं तो बाप ब्रह्मा के कर्म साकार में होने के कारण भूमि में तपस्या, कर्म और त्याग के वायब्रेशन समाये हुए होने के कारण यहाँ सहज

अनुभव करते हैं कि यह संसार न्यारा है क्योंकि ब्रह्मा बाप और विशेष बच्चों के वायब्रेशन से वायुमण्डल अलौकिक बना हुआ है। ऐसे ही जो बच्चा जहाँ भी रहता है, जो भी कर्मक्षेत्र है, हर एक बच्चे से बाप समान गुण, कर्म और श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल अनुभव में आये, इसको बापदादा कहते हैं - बाप समान बनना। जो अभी तक संकल्प है बाप समान बनना ही है, वह संकल्प अभी चेहरे और चलन से दिखाई दे। जो भी संबंध-सम्पर्क में आये उनके दिल से यह आवाज निकले कि यह आत्मायें बाप समान हैं। (बीच-बीच में खांसी आ रही है) आज माइक खराब है, मिलना तो है ना। यह भी तो माइक है ना, यह माइक नहीं चलता तो यह माइक भी काम का नहीं। कोई हर्जा नहीं यह भी मौसम का फल है।

तो बापदादा अभी सभी बच्चों से यह प्रत्यक्षता चाहते हैं। जैसे वाणी द्वारा प्रत्यक्षता करते हो तो वाणी का प्रभाव पड़ता है, उससे भी ज्यादा प्रभाव गुण और कर्म का पड़ता है। हर एक बच्चे के नयनों से यह अनुभव हो कि इन्हों के नयनों में कोई विशेषता है। साधारण नहीं अनुभव करें। अलौकिक हैं। उन्हों के मन में क्वेश्चन उठे कि यह कैसे बनें, कहाँ से बनें। स्वयं ही सोचें और पूछें कि बनाने वाला कौन? जैसे आजकल के समय में भी कोई बढ़िया चीज़ देखते हो तो दिल में उठता है कि यह बनाने वाला कौन है! ऐसे अपने बाप समान बनने की स्थिति द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करो। आजकल मैजारिटी आत्मायें सोचती हैं कि क्या इस साकार सृष्टि में, इस वातावरण में रहते हुए ऐसे भी कोई आत्मायें बन सकती हैं! तो आप उन्हों को यह प्रत्यक्ष में दिखाओ कि बन सकता है और हम बने हैं। आजकल प्रत्यक्ष प्रमाण को ज्यादा मानते हैं। सुनने से भी ज्यादा देखने चाहते हैं तो चारों ओर कितने बच्चे हैं, हर एक बच्चा बाप समान प्रत्यक्ष प्रमाण बन जाए तो मानने और जानने में मेहनत नहीं लगेगी। फिर आपकी प्रजा बहुत जल्दी-जल्दी तैयार हो जायेगी। मेहनत, समय कम और प्रत्यक्ष प्रमाण अनुभव करने से जैसे प्रजा का स्टैम्प लगता जायेगा। राजे रानी तो आप बनने वाले हैं ना!

बापदादा एक बात का फिर से अटेन्शन दिला रहे हैं कि **वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो।** बापदादा ने हर बच्चे को चाहे प्रवृत्ति में है, चाहे सेवाकेन्द्र पर है, चाहे कहाँ भी रहते हैं, स्थूल साधन हर एक को दिये हैं, ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसके पास खाना, पीना, रहना इसके साधन नहीं हो। जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। अगर कोई को कमी है तो वह उसके अपने अलबेलेपन या आलस्य के कारण है। बाकी ड्रामानुसार बापदादा जानते हैं कि आवश्यक साधन सबके पास हैं। जो आवश्यक साधन हैं वह तो चलने ही हैं। लेकिन कहाँ-कहाँ आवश्यकता से भी ज्यादा साधन हैं। साधना कम है और साधन का प्रयोग करना या कराना ज्यादा है। इसलिए बापदादा आज बाप समान बनने के दिवस पर विशेष अन्डरलाइन करा रहे हैं - **कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया वह भी बहुत अच्छा किया, अब साधना को बढ़ाना अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना।** ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट घड़ी तक बच्चों को साधन बहुत दिये लेकिन स्वयं साधनों के प्रयोग से दूर रहे। होते हुए दूर रहना - उसे कहेंगे वैराग्य। लेकिन कुछ है ही नहीं और कहे कि हमको तो वैराग्य है, हम तो हैं ही वैरागी, तो वह कैसे होगा। वह तो बात ही अलग है। सब कुछ होते हुए नॉलेज और विश्व कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी साधनों के बजाए बेहद की वैराग्य वृत्ति हो। जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्ठी में पड़े हुए थे। यह ८४ वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की अभी कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। विश्व की आत्माओं के कल्याण के प्रति भी इस समय इस विधि की आवश्यकता है क्योंकि चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पदमपति भी हैं लेकिन इच्छाओं से वह भी परेशान हैं। वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी का विशेष कारण यह हद की इच्छायें हैं। अब आप अपने बेहद की

वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती। आप वृक्ष की जड़ हैं, ब्राह्मणों का स्थान वृक्ष में कहाँ दिखाया है? जड़ में दिखाया है ना! तो आप फाउण्डेशन हैं, आपकी लहर विश्व में फैलेगी इसलिए बापदादा विशेष साकार में ब्रह्मा बाप समान बनने की विधि, वैराग्य वृत्ति की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहा है। हर एक से अनुभव हो कि यह साधनों वश नहीं, साधना में रहने वाले हैं। होते हुए वैराग्य वृत्ति हो। आवश्यक साधन यूज़ करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। **अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ।** समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। सेवा का विस्तार इस वर्ष में बहुत किया। इस वर्ष चारों ओर बड़े-बड़े प्रोग्राम किये और सेवा से सहयोगी आत्मायें भी बहुत बने हैं, समीप आये हैं, सम्पर्क में आये हैं, लेकिन क्या सिर्फ सहयोगी बनाना है? यहाँ तक रखना है क्या? सहयोगी आत्मायें अच्छी-अच्छी हैं, अब उन सहयोगी क्वालिटी वाली आत्माओं को और संबंध में लाओ। अनुभव कराओ, जिससे सहयोगी से सहज योगी बन जाएं। इसके लिए एक तो साधना का वायुमण्डल और दूसरा बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो इससे सहज सहयोगी सहज योगी बन जायेंगे। उन्हों की सेवा भले करते रहो लेकिन साथ में साधना, तपस्या का वायुमण्डल आवश्यक है।

अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या से करनी है। अभी मन्सा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा सेवा की टचिंग हो, उसकी आवश्यकता है। समय समीप आ रहा है, निरन्तर स्थितियाँ और निरन्तर पॉवरफुल वायुमण्डल की आवश्यकता है। बाप समान बनना है तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो। यही ब्रह्मा बाप की अन्त तक विशेषता देखी। न वैभव में लगाव रहा, न बच्चों में.. सबसे वैराग्य वृत्ति। तो आज के दिन का बाप समान बनने का पाठ पक्का

करना। बस ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। ऐसा दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ा-येगा।

बाकी सभी बच्चे सोचते होंगे कि आज प्राइज़ मिलना है। अभी देखो चारों ओर के बच्चे तो हैं नहीं, तो सिर्फ आप आये हुए को प्राइज़ दें! प्राइज तो है ही परन्तु बापदादा कहते हैं - हर एक सारे वर्ष में सर्व बन्धनों से मुक्त रहे! लिस्ट निकाली थी ना। कितने बंधन निकाले थे? (०५) अच्छा तो ०५ ही बंधन से स्वप्न तक भी मुक्त, स्वप्न में भी कोई बंधन की रूप-रेखा न आई हो, इसको कहा जाता है मुक्त। तो हाथ तो बहुत सहज उठाते हैं, बाबा को पता है हाथ उठवायेंगे तो बहुत प्रकार के हाथ उठेंगे लेकिन फिर भी बापदादा कहते हैं कि जिस चेकिंग से आप हाथ उठाने के लिए तैयार हैं, बापदादा को पता है कितने तैयार हैं, कौन तैयार हैं। अभी भी और अन्तर्मुखी बन सूक्ष्म चेकिंग करो। अच्छा कोई को दुःख नहीं दिया, लेकिन जितना सुख का खाता जमा होना चाहिए उतना हुआ? नाराज़ नहीं किया, राज़ी किया? व्यर्थ नहीं सोचा लेकिन व्यर्थ के जगह पर श्रेष्ठ संकल्प इतने ही जमा हुए? सबके प्रति शुभ भावना रखी लेकिन शुभ भावना का रेसपान्स मिला? वह चाहे बदले नहीं बदले, लेकिन आप उससे सन्तुष्ट रहे? ऐसी सूक्ष्म चेकिंग फिर भी अपने आपकी करो और अगर ऐसी सूक्ष्म चेकिंग में पास हो तो बहुत अच्छे हो। ऐसी पास आत्मायें अपने-अपने सेवाकेन्द्र पर चारों ओर सेन्टर पर अपना नाम, रिजल्ट सब बातों में कितना परसेन्ट रहा? सुख कितने को दिया? राज़ी कितने रहे? नाराज़ को राजी किया? कि जो राज़ी है उसको ही राज़ी किया? तो यह सब चेकिंग करके पास विद ऑनर हैं, तो अपना नाम, अपने टीचर को लिख करके दो और टीचर जो छोटे-छोटे सेन्टर हैं, उन्हों के ऊपर जो बड़ी बहिनें मुकरर हैं, वह उन्हों से पास करावें फिर ज़ोन के पास सब नाम आवें। ज़ोन के पास सब नाम इक्ट्ठे करो फिर वह ज़ोन वाली ऐसी पास वाली आत्माओं के नाम मधुबन में भेजें, फिर इनाम मिलेगा। फिर ताली बजायेंगे। जो ऐसे पास विद ऑनर होंगे उसको तो प्राइज मिलना ही चाहिए, वह मिलेगी लेकिन सच्ची दिल से, सच्चे बाप को अपना

सच्चा पोतामेल बताना और प्राइज़ लेना क्योंकि बापदादा के पास सबके संकल्प तो पहुंचते हैं ना। तो जो हाथ उठाने वाले हैं ना, उसमें बापदादा ने देखा कि मिक्स बहुत हैं और बिना समझ के हाथ उठा देते हैं। तो कोई मिक्स वाले हाथ उठा दें और बापदादा प्राइज़ नहीं देवे तो अच्छा नहीं है। इसलिए कायदे-प्रमाण अगर पास विद ऑनर हैं तो उसकी तो बहुत-बहुत महिमा है और ऐसे का नाम तो सभी ब्राह्मणों में प्रसिद्ध होना चाहिए ना। अच्छा है, मैजारिटी ने मेहनत अच्छी की है, अटेन्शन रहा है परन्तु सम्पूर्ण की बात है। जिन्होंने मेहनत की है, उन्हों को आज प्राइज़ के बजाए मुबारक दे रहे हैं। फिर प्राइज़ देंगे। ठीक है ना!

अच्छा - दूसरी बात थी कि सभी ज़ोन वालों को मार्च तक माइक लाना है, सभी को याद तो है। तो पहले मार्च में बापदादा ज़ोन वालों से रिजल्ट लेंगे, किसने और किस क्वालिटी का माइक तैयार किया। आप कहेंगे यह माइक है लेकिन होगा छोटा माइक। समझो जिस नगर का माइक निकला, उसी नगर का माइक है, ज़ोन का भी नहीं है, तो उसको छोटा माइक कहेंगे ना। तो ऐसा कौन सा माइक तैयार किया है, वह बापदादा पूछेंगे। अगर कोई ज़ोन वाले लास्ट में नहीं भी आ सके तो अपनी चिटकी लास्ट टर्न में लिखकर भेजें, आवें तो ज़ोन के हेडस् को निमन्त्रण है। अगर नहीं आ सकते हैं, न आने का कोई ऐसा कारण है तो अपनी चिटकी भेज देंगे तो भी चलेगा। फिर बापदादा उन सभी माइक के संगठन का प्रोग्राम रखेंगे, जिसमें सभी तरफ के माइक स्टेज पर आयेंगे। उन्हों का विशेष प्रोग्राम रखेंगे, ऐसे नहीं कि मार्च में माइक भी लेकर आवें। माइक को वहाँ ही रहने दो, आप आना। जो माइक है उन्हों को तो धूमधाम से मंगायेंगे ना। उन्हों की स्वागत भी तो अच्छी करनी है ना। तो उन्हों का स्पेशल प्रोग्राम रखेंगे और फिर प्राइज देंगे नम्बरवन, टू, थ्री। ठीक है। ज़ोन वालों को स्पष्ट हुआ? मार्च में रिजल्ट लानी है। अच्छा।

अभी क्या याद रखा? कौन सी बात को अन्डरलाइन किया? बेहद का वैराग्य। अभी आत्माओं को इच्छाओं से बचाओ। बिचारे बहुत दु:खी हैं। बहुत परेशान हैं। तो अभी रहमदिल बनो। रहम की लहर बेहद के वैराग्य वृत्ति द्वारा

फैलाओ। अभी सभी ऊंचे ते ऊंचे परमधाम में बाप के साथ बैठ सर्व आत्माओं को रहम की दृष्टि दो। वायब्रेशन फैलाओ। फैला सकते हैं ना? तो बस अभी परमधाम में बाप के साथ बैठ जाओ। वहाँ से यह बेहद के रहम का वायुमण्डल फैलाओ। (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा।

चारों ओर के सर्व अति स्नेही बच्चों को, सर्व चारों ओर के साधना करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, बापदादा को सारे दिन में बहुत प्यारे-प्यारे, मीठे-मीठे दिल के गीत सुनाने वाले, रूह-रिहान करने वाले शक्तियों के, गुणों के वरदान से झोली भरने वाले, बापदादा को सबके गीत, खुशी के गीत स्नेह के गीत, रूहानी नशे के गीत, मीठी-मीठी बातें बहुत-बहुत दिल को लुभाने वाली सुनाई दी और बापदादा भी सुनने और मिलने में लवलीन थे। तो ऐसे दिल के सच्चे, दिल के आवाज़ सुनाने वाले बच्चे महान हैं और सदा महान रहेंगे, ऐसे मीठे-मीठे बच्चे सदा बेहद के वैराग्य वृत्ति को अपनाने वाले, दृढ़ निश्चय बुद्धि बच्चों को बापदादा एक के बदले पदमगुणा रिटर्न स्नेह दे रहे हैं। दिलाराम के दिल पर रहने वाले सभी बच्चों को बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

जो बाहर भी सुन रहे हैं उन्हों को भी बाबा देख रहे हैं और बापदादा दूर नहीं देखते हैं लेकिन सभी तरफ के बच्चों को सम्मुख देख यादप्यार और मुबारक और याद सौगात वा याद पत्रों का रिटर्न कर रहे हैं कि सदा उड़ती कला में उड़ने वाले बच्चे सदा आबाद हैं, सदा ही आबाद रहेंगे। अच्छा।

दादी जी से:-

आज के दिन को स्मृति दिवस कहते हैं, तो स्मृति में क्या रहा? समर्थ का वरदान याद रहा? आपको तो डायरेक्ट विल कर ली ना? अच्छा पार्ट बजा रही हो। बापदादा देख रहे हैं, वृद्धि भी बहुत हो रही है और यह वृद्धि भी सेवा का सबूत ही है। तो बच्चों की सेवा को देख बापदादा तो खुश होते हैं। बाप गुप्त हो गये, अभी सभी के मुख पर क्या है? अभी तो सभी के मुख पर सामने बच्चे ही हैं। ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं तो अभी बच्चे प्रत्यक्ष हुए। अभी बाप प्रत्यक्ष होना है। बाप ने पहले बच्चों को प्रत्यक्ष किया। अभी बाप प्रत्यक्ष होंगे तो फिर तो समाप्ति हो जायेगी ना। इसलिए पहले बच्चे प्रत्यक्ष हो रहे हैं

फिर बाप होंगे। फिर भी बहुत अच्छा, सेवा का उमंग-उत्साह अच्छा है, अभी निर्विघ्न बनाने की ज्यादा लहर फैलाओ। यह भी लहर फैल जायेगी तो सहज हो जायेगा।

आज सभी तरफ अच्छा वायुमण्डल था (सभी स्नेह में डूबे हुए थे) दिन का महत्व होता है। इस दिन का भी महत्व है। (दादी जानकी ने खास याद दिया है)

८९-७-६६ ओम् शान्ति ''अव्यक्त-बापदादा'' मधुबन

''शिव अवतरण और एकानामी के अवतार''

आज त्रिमूर्ति शिव बाप अपने अति प्यारे-प्यारे, मीठे-मीठे सालिग्राम बच्चों से मिलने आये हैं। आज के दिन शिव और सालिग्रामों का विशेष दिवस है। तो बाप को बच्चों से मिलकर खुशी हो रही है कि बच्चों का बर्थ डे बाप मनाने आये हैं और बच्चे कहते हैं कि हम बाप का बर्थ डे मनाने आये हैं। बाप को भी खुशी है, बच्चों को भी खुशी है। क्यों? क्योंकि यह बर्थ डे सारे कल्प में न्यारा और प्यारा है। सारे कल्प में ऐसा बर्थ डे किसका भी मनाया नहीं जाता है। बाप और बच्चों का साथ में एक ही समय पर बर्थ डे हो - यह और किसी भी समय वा किसी का भी होता ही नहीं है। तो पहले बापदादा बच्चों को पदम-पदम-पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। बच्चों की मुबारक तो अमृतवेले से बहुत-बहुत दिल से, दिल की मुबारक बापदादा के पास पहुंच ही गई है। बापदादा इतने सब बच्चों को, सालिग्रामों को देख यही खुशी के गीत दिल में गाते हैं कि वाह सिकीलधे बच्चे वाह! वाह लाडले बच्चे वाह! वाह अलौकिक जन्म, अलौकिक बर्थ डे मनाने वाले वाह! तो बापदादा हर बच्चे के लिए वाह-वाह का गीत गा रहे हैं क्योंकि इतनी सारी विश्व की आत्माओं में से कितने थोड़े से आप बच्चे ऐसे पदमापदम भाग्यवान बने हो और आगे भी भाग्यवान रहेंगे। अमर भाग्यवान आधाकल्प रहेंगे। एक जन्म का वरदान नहीं है, अनेक जन्म अमर वरदानी बन गये। ऐसे बच्चों को अपना स्वमान कितना स्मृति में रहता है? इस अलौकिक बर्थ डे वा अलौकिक जन्म का अखुट वर्सा बाप जन्मते ही बच्चों को देते हैं। जन्मते ही स्मृति का श्रेष्ठ तिलक हर बच्चे को बाप ने दे दिया है। तिलक लगा हुआ है ना? ब्राह्मण जीवन है तो तिलक भी अविनाशी है। ब्राह्मणों के मस्तक में तिलक, यह श्रेष्ठ भाग्य की निशानी है।

तो आप सभी और चारों ओर के बच्चे दूर बैठे भी बहुत उमंग-उत्साह से यह न्यारा और प्यारा बर्थ डे मना रहे हैं। मना रहे हैं ना? सभी खुश हो रहे हैं कि

बाप हमारा बर्थ डे मना रहे हैं और हम बाप का मना रहे हैं। कितनी खुशी है! खुशी को माप सकते हैं? माप है? इस दुनिया में, इस अलौकिक खुशी का कोई माप करने का साधन निकला ही नहीं है। अगर आपको कहें कि सागर जितनी खुशी है? तो क्या कहेंगे? कि सागर तो कुछ भी नहीं है। अच्छा आकाश जितनी है? तो आकाश से भी ऊंचे आपका घर है, आपका सूक्ष्मवतन है। इसलिए कोई माप-तौल निकला नहीं है, न निकल सकता है। इतनी खुशी है तो एक हाथ की ताली बजाओ। (सभी ने ताली बजाई) खुशी है - इसमें तो सभी ने हाथ उठाया, मुबारक हो। अभी दूसरा प्रश्न है, (समझ गये हैं तो हँस रहे हैं) बापदादा हर बच्चे को सदा खिला हुआ रूहानी गुलाब देखने चाहते हैं। आधा खिला हुआ नहीं, सदा और फुल। खिला हुआ फूल कितना प्यारा लगता है। देखने में ही मजा आता है। और थोड़ा भी मुरझा जाता है तो क्या करते हो? किनारे कर लेते हो। बापदादा किनारे नहीं करते लेकिन वह स्वयं ही किनारे हो जाता है।

आज तो मनाने का दिन है ना! मुरली तो सदा सुनते ही हो। आज तो खूब खुशी में मन से नाचो और गाओ। मन से नाचो, पांव से नहीं। पांव से नाचना शुरू करेंगे तो घमसान हो जायेगा। लेकिन बापदादा देख रहे हैं कि बच्चे नाच भी रहे हैं और मीठे-मीठे बाप की महिमा और अपने अलौकिक महिमा के गीत भी बहुत गा रहे हैं। बाबा को आपके मन का आवाज पहुंच रहा है। सब देशों से आवाज आ रहा है। बाप का आवाज सुन भी रहे हैं और बाप भी उन्हों का आवाज सुन रहा है। बाप भी कहते हैं हे विश्व के बहुत-बहुत स्नेही बच्चे खूब नाचो, खूब गाओ और काम ही क्या है! ब्राह्मणों का काम क्या है? योग लगाना भी क्या है? मेहनत है क्या? योग का अर्थ ही है आत्मा और परमात्मा का मिलन। तो मिलन में क्या होता है? खुशी में नाचते हैं। बाप की महिमा के मीठे-मीठे गीत दिल ऑटोमेटिक गाती है। ब्राह्मणों का काम ही यह है, गाते रहो और नाचते रहो। यह मुश्किल है? नाचना गाना मुश्किल है? नहीं है ना। जिसको मुश्किल लगता है वह हाथ उठाओ। आजकल तो नाचने गाने की सीजन है, तो

आपको भी क्या करना है? नाचो, गाओ। सहज है ना? सहज है तो काँध तो हिलाओ। मुश्किल तो नहीं है ना? जान-बूझ कर सहज से हटकर मुश्किल में चले जाते हो। मुश्किल है नहीं, बहुत सहज है क्योंकि बाप जानते हैं कि आधा-कल्प मुश्किल की जीवन व्यतीत की है इसलिए इस समय सहज है। मुश्किल वाला कोई है? कभी-कभी मुश्किल लगता है? जैसे कोई चलते-चलते रास्ता भूलकर और रास्ते में चला जाए तो मुश्किल लगेगा ना। ज्ञान का मार्ग मुश्किल नहीं है। ब्राह्मण जीवन मुश्किल नहीं है। ब्राह्मण के बजाए क्षत्रिय बन जाते हो तो क्षत्रिय का काम ही होता है लड़ना, झगड़ना... वह तो मुश्किल ही होगा ना! युद्ध करना तो मुश्किल होता है, मौज मनाना सहज होता है।

डबल फारेनर्स मौज मनाने वाले हो ना! एक हाथ की ताली बजाओ। मौज में हो? वहाँ जाकर मूंझ तो नहीं जायेंगे? देखो, आज के शिव जयन्ती का महत्व दो बातों का है। एक इस दिवस पर व्रत रखते हैं। डबल फारेनर्स को तो मनाना ही नहीं पड़ा। भारत में ही मनाते हैं तो इस दिवस का महत्व है - व्रत रखना और दूसरा है जागरण करना। तो आप सबने व्रत भी ले लिया है ना? पक्का व्रत लिया है? या कभी कच्चा, कभी पक्का? कच्ची चीज़ अच्छी लगती है? पका हुआ सब अच्छा लगता है ना! तो व्रत क्या लिया है? बापदादा ने सबसे पहला व्रत कौन सा दिया? जब स्मृति का तिलक लगा तो पहला-पहला व्रत कौन सा लिया? याद है ना? सम्पूर्ण पवित्र भव। बाप ने कहा और बच्चों ने धारण किया। तो पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लेकिन ब्रह्मा समान हर संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता - इसको कहा जाता है ब्रह्मचारी और ब्रह्माचारी। हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्व हो। हर कर्म में, कर्म और योग अर्थात् कर्मयोगी का अनुभव हो - इसको कहा जाता है ब्रह्माचारी। ब्रह्मा बाप को देखा हर बोल महावाक्य, साधारण वाक्य नहीं क्योंकि आपका जन्म ही साधारण नहीं, अलौ-किक है। अलौकिकता का अर्थ ही है पवित्रता। तो रोज़ रात को अपना टीचर बनकर चेक करो और अपने को परसेन्टेज़ के प्रमाण अपने आपको ही मार्क्स

दो। बनना 100 परसेन्ट है। लेकिन हर रोज़ अपने आपको देखो, दूसरे को नहीं देखना। बापदादा ने देखा है कि अपने बजाए दूसरों को देखने लग जाते हैं, वह सहज होता है। तो अपने को देखो कि आज के दिन संकल्प, बोल और कर्म में कितनी परसेन्ट रही?

आप लोगों ने इस वर्ष चारों ओर क्या सन्देश दिया है? परिवर्तन सभी फंक्शन में सुनाया है। जहाँ तहाँ भाषण किया है तो परिवर्तन के टॉपिक पर बहुत अच्छे-अच्छे भाषण किये हैं। तो इस वर्ष चारों ओर सेवा में औरों को भी परिवर्तन का लक्ष्य बहुत अच्छे धूमधाम से दिया है, बापदादा खुश है। तो आप अपने लिए भी यह चेक करो कि हर रोज़, हर दिन क्या परसेन्टेज़ में परिवर्तन हुआ? परिवर्तन चढ़ती कला का हो, गिरती कला का नहीं। बापदादा भी हर एक बच्चे का चार्ट देखता है। आप सोचेंगे सभी बच्चों का देखते हैं या कोई विशेष का देखते हैं! बापदादा सभी बच्चों का चार्ट कभी-कभी देखते हैं, रोज़ नहीं देखते लेकिन कभी-कभी देखते हैं - चाहे वह लास्ट है, चाहे फास्ट है। सभी हँस रहे हैं तो बापदादा ही सुना देवे कि क्या चार्ट है? आज का दिन मनाने का है ना, इसलिए नहीं सुनाते हैं। लेकिन आगे के लिए इशारा दे रहे हैं कि आज के दिन का जो महत्व है व्रत लेना अर्थात् दृढ़ संकल्प लेना। व्रत को कभी सच्चे भक्त तोड़ते नहीं हैं। तो बापदादा बच्चों को फिर से आगे के लिए इशारा दे रहे हैं कि अभी भी पहला फाउण्डेशन संकल्प शक्ति कभी-कभी वेस्ट ज्यादा और निगेटिव वेस्ट से थोड़ा कम है। इस संकल्प शक्ति का उपयोग जितना स्व प्रति वा विश्व के प्रति करना है उतना और बढ़ाओ क्योंकि संकल्प के आधार पर बोल और कर्म होता है तो संकल्प शक्ति का परिवर्तन करो। जो वेस्ट और निगेटिव जाता है, उसे परिवर्तन कर विश्व कल्याण के प्रति कार्य में लगाओ। बापदादा संकल्प के खजाने को सर्व श्रेष्ठ मानते हैं इसलिए इस संकल्प के खजाने प्रति एकानामी के अवतार बनो। आज के दिन को अवतरण का दिन कहा जाता है तो बापदादा की सभी बच्चों प्रति यही शुभ आशा है कि आज के दिन **शिव अवतरण के साथ आप सभी एकानामी के अवतार बनो।** संकल्प में एकानामी

की अर्थात् वेस्ट से बचाया, तो और सभी खजाने ऑटोमेटिक बच जायेंगे। तो 99 में क्या होगा? 99 चालू हो गया। पहले सोच रहे थे, 99 में क्या होगा? कुछ हुआ क्या? फरवरी तो आ गई। अगर होगा भी तो आपको क्या है? आपको कोई नुकसान है? भय है? क्या होगा, उसका भय होता है? आपके लिए अच्छा ही होगा। दुनिया के लिए कुछ भी हो जाए आपको निर्भय और हर्षितमुख हो खेल देखना है। खेल में खून भी दिखाते हैं तो प्यार भी दिखाते हैं। लड़ाई भी दिखाते हैं तो अच्छी बातें भी दिखाते हैं। फिर खेल में भय होता है क्या? क्या होगा, क्या हुआ, क्या हुआ? यह सोचते हैं क्या? मजे से बैठकर देखते हैं। तो यह भी बेहद का खेल है। अगर जरा भी भय वा घबराहट होगी - क्या हो गया, क्या हो गया... ऐसा तो होना नहीं चाहिए, क्यों हो गया तो ऐसी स्थिति वाले को इफेक्ट आयेगा। अच्छे में अच्छी स्थिति और गड़बड़ की स्थिति में खुद भी गड़बड़ में आ जायेंगे, हलचल में आ जायेंगे। इसलिए 99 हो या 2 हजार हो, आपको क्या है? होने दो खेल। मजे से देखो। घबराना नहीं। हाय यह क्या हो गया! संकल्प में भी नहीं आये। सब पूछते हैं 99 में क्या होगा? कुछ होगा, नहीं होगा। बापदादा कहते हैं आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफाई करो, उसको लम्बा-लम्बा झाड़ू दिया है, सफा करो। तो घबराते क्यों हो? आपके आर्डर से वह सफाई करायेगी तो आप क्यों हलचल में आते हो? आपने ही तो आर्डर दिया है। तो अचल-अडोल बन मन और बुद्धि को बिल्कुल शक्तिशाली बनाए अचल-अडोल स्थिति में स्थित हो जाओ। प्रकृति का खेल देखते चलो। घबराना नहीं। आप अलौकिक हो, साधारण नहीं हो। साधारण लोग हलचल में आयेंगे, घबरायेंगे। अलौकिक, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें खेल देखते अपने विश्व कल्याण के कार्य में बिजी रहेंगे। अगर मन और बुद्धि को फ्री रखा तो घबरायेंगे। मन और बुद्धि से लाइट हाउस हो, लाइट फैलायेंगे, इस कार्य में बिजी रहेंगे तो बिजी आत्मा को भय नहीं होगा, साक्षीपन होगा; और कोई भी हलचल हो अपने बुद्धि को सदा ही क्लीयर रखना, क्यों क्या में बुद्धि को बिजी वा भरा हुआ नहीं रखना, खाली रखना। एक बाप और मैं..

तब समय अनुसार चाहे पत्र, टेलीफोन, टी.वी. वा आपके जो भी साधन निकले हैं, वह नहीं भी पहुंचे तो बापदादा का डायरेक्शन क्लीयर कैच होगा। यह साइंस के साधन कभी भी आधार नहीं बनाना। यूज़ करो लेकिन साधनों के आधार पर अपनी जीवन को नहीं बनाओ। कभी-कभी साइंस के साधन होते हुए भी यूज़ नहीं कर सकेंगे। इसलिए साइलेन्स का साधन - जहाँ भी होंगे, जैसी भी परि-स्थिति होगी बहुत स्पष्ट और बहुत जल्दी काम में आयेगा। लेकिन अपने बुद्धि की लाइन क्लीयर रखना। समझा। आप ही तो आह्वान कर रहे हैं कि जल्दी-जल्दी गोल्डन एज आ जावे। तो गोल्डन एज में यह सफाई चाहिए ना। तो प्रकृति अच्छी सफाई करेगी।

तो आज के दिन संकल्प नहीं लेकिन दृढ़ संकल्प क्या लिया? **एकानामी का अवतार बनना ही है।** चाहे संकल्प में, चाहे बोल में, चाहे साधारण कर्म की एकानामी। और दूसरी बात - सदा बुद्धि को क्लीयर रखना। जिसको दूसरे शब्दों में बापदादा कहते हैं - सच्ची दिल पर साहेब राजी। सच्ची दिल, साफ दिल। वर्तमान समय में सच्चाई और सफाई की आवश्यकता है। दिल में भी सच्चाई, परिवार में भी सच्चाई और बाप से भी सच्चाई। समझा। आज के दिन कहना नहीं था लेकिन कह दिया। बापदादा का प्यार है ना तो जरा भी कमजोरी बापदादा देख नहीं सकते। बापदादा सदा हर बच्चे को अपने जैसा सम्पूर्ण देखने चाहते हैं।

चारों ओर हलचल है, प्रकृति के सभी तत्व खूब हलचल मचा रहे हैं, एक तरफ भी हलचल से मुक्त नहीं हैं, व्यक्तियों की भी हलचल है, प्रकृति की भी हलचल है, ऐसे समय पर जब इस सृष्टि पर चारों ओर हलचल है तो आप क्या करेंगे? सेफ्टी का साधन कौन सा है? सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानी बना लो तो हलचल में अचल रह सकते हो। इसमें टाइम तो नहीं लगेगा? क्या होगा? अभी ट्रायल करो - एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ स्थित कर सकते हो? (ड्रिल) इसको कहा जाता है - साधना। अच्छा।

देश-विदेश के चारों ओर के बाप के लव में लवलीन आत्माओं को, सदा

स्वयं को ब्रह्माचारी स्थिति में स्थित करने वाले स्नेही, सहयोगी बच्चों को, सदा एकनामी और एकानामी को कार्य में लगाने वाले हिम्मतवान बच्चों को, सदा हलचल में भी अचल रहने वाले निर्भय आत्माओं को, सदा मौज मनाने वाले, बाप के समीप रहने वाले बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

बच्चों के सब कार्ड मिले। बापदादा देख रहे हैं, सभी ने जन्म दिन के कार्ड और फारेन वालों ने प्यार के दिवस के कार्ड भेजे हैं, तो प्यार का सागर बाप सभी बच्चों को शिवरात्रि के साथ-साथ प्यार के लवलीन दिवस की भी मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

दादियों से:- फारेन भी अच्छा आगे बढ़ रहा है। अभी बचपन पूरा हुआ। अभी अच्छे अनुभवी हो गये हैं। पहले जो बचपन होता था ना वह अभी मैजारिटी का खत्म हो गया है। भारत में भी वृद्धि अच्छी है। ६ लाख चाहिए, वह तो बन रहे हैं ना। माला भी बन रही है तो ६ लाख भी बन रहे हैं। दोनों ही बन रहे हैं। लास्ट सो फास्ट भी कोई-कोई आ रहे हैं। अच्छा है। बापदादा तो लास्ट नम्बर वाले पर भी खुश हैं। बाप को तो पहचान लिया है।

झण्डा लहराने के पश्चात बापदादा के उच्चारे हुए मधुर महावाक्य:-

आज बाप और बच्चों के दोनों के बर्थ डे की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। जैसे अभी सभी खूब खुशी में नाच रहे हैं, ऐसे अमर भव। जैसे यह झण्डा लहराया और पुष्पों की वर्षा हुई, ऐसे ही सदा अपने दिल में बाप की याद का यह झण्डा लहराता रहे। नीचे ऊपर नहीं हो। कभी भी याद का झण्डा नीचे नहीं हो, ऊंचा हो। तो दुनिया वाले अहो भाग्य, अहो बाप यह पुष्पों की वर्षा दुआओं के साथ आप सबके ऊपर करेंगे। तो एक तरफ याद का झण्डा लहराओ, दूसरे तरफ जो आज बाप का सन्देश मिला - एकानामी का अवतार बनो, तो ऐसे दृढ़ संकल्प का झण्डा अपने दिल में लहराना। और साथ में सेवा के प्रति सदा चारों ओर सर्व आत्माओं के आगे बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा लहराना। यह है झण्डे का महत्व। एक दिन आयेगा, आया कि आया जब सब लोग बाप की महिमा करते, प्रत्यक्षता के झण्डे के नीचे आयेंगे। सहारा लेंगे और आप

सहारेदाता बाप के बच्चे, मास्टर सहारेदाता होंगे। आया कि आया। अच्छा।

चारों ओर के देश, शहर, गांव, चारों ओर के बच्चों को, सबसे पहले छोटे-छोटे गांव वाले बच्चों को याद-प्यार और मुबारक। साथ में आप सबको भी मुबारक। कितनी मुबारक दें। जितना आप धारण कर सकते हो उससे भी ज्यादा मुबारक।

८-३-९९ ओम् शान्ति ''अव्यक्त-बापदादा'' मधुबन

होली मनाना अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र बनकर संस्कार मिलन मनाना

आज बापदादा चारों ओर के अपने होलीएस्ट और हाइएस्ट बच्चों को देख रहे हैं। विश्व में सबसे हाइएस्ट ऊंचे ते ऊंचे श्रेष्ठ आत्मायें आप बच्चों के सिवाए और कोई है? क्योंकि आप सभी ऊंचे ते ऊंचे बाप के बच्चे हैं। सारे कल्प में चक्र लगाकर देखो तो सबसे ऊंचे मर्तबे वाले और कोई नज़र आते हैं? राज्य अधिकारी स्वरूप में भी आपसे ऊंचे राज्य अधिकारी बने हैं? फिर पूजन और गायन में देखो जितनी पूजा विधिपूर्वक आप आत्माओं की होती है उससे ज्यादा और किसी की है? वन्डरफुल राज़ ड्रामा का कितना श्रेष्ठ है जो आप स्वयं चैतन्य स्वरूप में, इस समय अपने पूज्य स्वरूप को नॉलेज के द्वारा जानते भी हो और देखते भी हो। एक तरफ आप चैतन्य आत्मायें हैं और दूसरे तरफ आपके जड़ चित्र पूज्य रूप में हैं। अपने पूज्य स्वरूप को देख रहे हो ना? जड़ रूप में भी हो और चैतन्य रूप में भी हो। तो वन्डरफुल खेल है ना! और राज्य के हिसाब से भी सारे कल्प में निर्विघ्न, अखण्ड-अटल राज्य एक आप आत्माओं का ही चलता है। राज़े तो बहुत बनते हैं लेकिन आप विश्वराज़न वा विश्वराजन की रॉयल फैमिली सबसे श्रेष्ठ है। तो राज्य में भी हाइएस्ट, पूज्य रूप में भी हाइएस्ट और अब संगम पर परमात्म वर्से के अधिकारी, परमात्म मिलन के अधिकारी, परमात्म प्यार के अधिकारी, परमात्म परिवार की आत्मायें और कोई बनती हैं? आप ही बने हो ना? बन गये हो या बन रहे हो? बन भी गये और अब तो वर्सा लेकर सम्पन्न बन बाप के साथ-साथ अपने घर में भी चलने वाले हैं। संगम का सुख, संगमयुग की प्राप्तियां, संगमयुग का समय सुहाना लगता है ना! बहुत प्यारा लगता है। राज्य के समय से भी संगम का समय प्यारा लगता है ना? प्यारा है या जल्दी जाने चाहते हो? फिर पूछते क्यों हो कि बाबा विनाश कब होगा? सोचते हो ना - पता नहीं विनाश कब होगा? क्या होगा? हम कहाँ

होंगे? बापदादा कहते हैं जहाँ भी होंगे - याद में होंगे, बाप के साथ होंगे। साकार में या आकार में साथ होंगे तो कुछ नहीं होगा। साकार में कहानी सुनाई है ना। बिल्ली के पूंगरे भट्ठी में होते हुए भी सेफ रहे ना! या जल गये? सब सेफ रहे। तो आप परमात्म बच्चे जो साथ होंगे वह सेफ रहेंगे। अगर और कहाँ बुद्धि होगी तो कुछ न कुछ सेक लगेगा, कुछ न कुछ प्रभाव होगा। साथ में कम्बाइन्ड होंगे, एक सेकण्ड भी अकेले नहीं होंगे तो सेफ रहेंगे। कभी-कभी कामकाज या सेवा में अकेले अनुभव करते हो? क्या करें अकेले हैं, बहुत काम है! फिर थक भी जाते हैं। तो बाप को क्यों नहीं साथी बनाते! दो भुजा वालों को साथी बना देते, हजार भुजा वाले को क्यों नहीं साथी बनाते। कौन ज्यादा सहयोग देगा? हजार भुजा वाला या दो भुजा वाला?

संगमयुग पर ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं हो सकते। सिर्फ जब सेवा में, कर्मयोग में बहुत बिजी हो जाते हो ना तो साथ भी भूल जाते हो और फिर थक जाते हो। फिर कहते हो थक गये, अभी क्या करें! थको नहीं, जब बापदादा आपको सदा साथ देने के लिए आये हैं, परमधाम छोड़कर क्यों आये हैं? सोते, जागते, कर्म करते, सेवा करते, साथ देने के लिए ही तो आये हैं। ब्रह्मा बाप भी आप सबको सहयोग देने के लिए अव्यक्त बनें। व्यक्त रूप से अव्यक्त रूप में सहयोग देने की रफ्तार बहुत तीव्र है, इसलिए ब्रह्मा बाप ने भी अपना वतन चेंज कर दिया। तो शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों हर समय आप सबको सहयोग देने के लिए सदा हाज़िर हैं। आपने सोचा बाबा और सहयोग अनुभव करेंगे। अगर सेवा, सेवा, सेवा सिर्फ वही याद है, बाप को किनारे बैठ देखने के लिए अलग कर देते हो, तो बाप भी साक्षी होकर देखते हैं, देखें कहाँ तक अकेले करते हैं। फिर भी आने तो यहाँ ही हैं। तो साथ नहीं छोड़ो। अपने अधिकार और प्रेम की सूक्ष्म रस्सी से बांधकर रखो। ढीला छोड़ देते हो। स्नेह को ढीला कर देते हो, अधिकार को थोड़ा सा स्मृति से किनारा कर देते हो। तो ऐसे नहीं करना। जब सर्वशक्तिवान साथ का आफर कर रहा है तो ऐसी आफर सारे कल्प में मिलेगी? नहीं मिलेगी ना? तो बापदादा भी साक्षी होकर देखते हैं, अच्छा देखें

कहाँ तक अकेले करते हैं!

तो संगमयुग के सुख और सुहेज़ों को इमर्ज रखो। बुद्धि बिजी रहती है ना तो बिजी होने के कारण स्मृति मर्ज हो जाती है। आप सोचो सारे दिन में किसी से भी पूछें कि बाप याद रहता है या बाप की याद भूलती है? तो क्या कहेंगे? नहीं। यह तो राइट है कि याद रहता है लेकिन इमर्ज रूप में रहता है या मर्ज रहता है? स्थिति क्या होती है? इमर्ज रूप की स्थिति या मर्ज रूप की स्थिति, इसमें क्या अन्तर है? इमर्ज रूप में याद क्यों नहीं रखते? इमर्ज रूप का नशा शक्ति, सहयोग, सफलता बहुत बड़ी है। याद तो भूल नहीं सकते क्योंकि एक जन्म का नाता नहीं है, चाहे शिव बाप सतयुग में साथ नहीं होगा लेकिन नाता तो यही रहेगा ना! भूल नहीं सकता है, यह राइट है। हाँ कोई विघ्न के वश हो जाते हो तो भूल भी जाता है लेकिन वैसे जब नेचरल रूप में रहते हो तो भूलता नहीं है लेकिन मर्ज रहता है। इसलिए बापदादा कहते हैं - बार-बार चेक करो कि साथ का अनुभव मर्ज रूप में है या इमर्ज रूप में? प्यार तो है ही। प्यार टूट सकता है? नहीं टूट सकता है ना? तो प्यार जब टूट नहीं सकता तो प्यार का फ़ायदा तो उठाओ। फ़ायदा उठाने का तरीका सीखो।

बापदादा देखते हैं प्यार ने ही बाप का बनाया है। प्यार ही मधुबन निवासी बनाता है। चाहे अपने स्थान पर कैसे भी रहें, कितना भी मेहनत करें लेकिन फिर भी मधुबन में पहुंच जाते हैं। बापदादा जानते हैं, देखते हैं, कई बच्चों को कलि-युगी सरकमस्टांश होने के कारण टिकेट लेना भी मुश्किल है परन्तु प्यार पहुंचा ही देता है। ऐसे है ना? प्यार में पहुंच जाते हैं लेकिन सरकमस्टांश तो दिनप्रति-दिन बढ़ते ही जाते हैं। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी तो होता ही है। लेकिन स्थूल सहयोग भी कहाँ न कहाँ कैसे भी मिल जाता है। चाहे डबल फारेनर्स हों, चाहे भारतवासी, सबको यह बाप का प्यार सरकमस्टांश की दीवार पार करा लेता है। ऐसे है ना? अपने-अपने सेन्टर्स पर देखो तो ऐसे बच्चे भी हैं जो यहाँ से जाते हैं, सोचते हैं पता नहीं दूसरे वर्ष आ सकेंगे या नहीं आ सकेंगे लेकिन फिर भी पहुंच जाते हैं। यह है प्यार का सबूत। अच्छा।

आज होली मनाई? मना ली होली? बापदादा तो होली मनाने वाले होली-हंसों को देख रहे हैं। सभी बच्चों का एक ही टाइटल है होलीएस्ट। द्वापर से लेकर किसी भी धर्मात्मा या महात्मा ने सर्व को होलीएस्ट नहीं बनाया है। स्वयं बनते हैं लेकिन अपने फालोअर्स को, साथियों को होलीएस्ट, पवित्र नहीं बनाते और यहाँ पवित्रता ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार है। पढ़ाई भी क्या है? आपका स्लोगन भी है ''पवित्र बनो-योगी बनो''। स्लोगन है ना? पवित्रता ही महानता है। पवित्रता ही योगी जीवन का आधार है। कभी-कभी बच्चे अनुभव करते हैं कि अगर चलते-चलते मन्सा में भी अपवित्रता अर्थात् वेस्ट वा निगेटिव, परचिंतन के संकल्प चलते हैं तो कितना भी योग पावरफुल चाहते हैं, लेकिन होता नहीं है क्योंकि जरा भी अंशमात्र संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता है तो जहाँ अपवित्रता का अंश है वहाँ पवित्र बाप की याद जो है, जैसा है वैसे नहीं आ सकती। जैसे दिन और रात इक्ट्ठा नहीं होता। इसीलिए बापदादा वर्तमान समय पवित्रता के ऊपर बार-बार अटेन्शन दिलाते हैं। कुछ समय पहले बापदादा सिर्फ कर्म में अपवित्रता के लिए इशारा देते थे लेकिन अभी समय सम्पूर्णता के समीप आ रहा है इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता का अंश धोखा दे देगा। तो मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें पवित्रता अति आवश्यक है। मन्सा को हल्का नहीं करना क्योंकि मन्सा बाहर से दिखाई नहीं देती है लेकिन मन्सा धोखा बहुत देती है। ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए। बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको खुश करना - यह भी अपने को धोखा देना है।

बापदादा देखते हैं कभी-कभी बच्चे अपने को इसी आधार पर अच्छा समझ, खुश समझ धोखा दे देते हैं, दे भी रहे हैं। दे देते हैं और दे भी रहे हैं। यह भी एक गुह्य राज़ है। क्या होता है, बाप दाता है, दाता के बच्चे हैं, तो सेवा युक्तियुक्त नहीं भी है, मिक्स है, कुछ याद और कुछ बाहर के साधनों वा खुशी के आधार पर है, दिल के आधार पर नहीं लेकिन दिमाग के आधार पर सेवा

करते हैं तो सेवा का प्रत्यक्ष फल उन्हों को भी मिलता है; क्योंकि बाप दाता है और वह उसी में ही खुश रहते हैं कि वाह हमको तो फल मिल गया, हमारी अच्छी सेवा है। लेकिन वह मन की सन्तुष्टता सदाकाल नहीं रहती और आत्मा योगयुक्त पावरफुल याद का अनुभव नहीं कर सकती, उससे वंचित रह जाते। बाकी कुछ भी नहीं मिलता हो, ऐसा नहीं है। कुछ न कुछ मिलता है लेकिन जमा नहीं होता। कमाया, खाया और खत्म। इसलिए यह भी अटेन्शन रखना। सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं, फल भी अच्छा मिल गया, तो खाया और खत्म। जमा क्या हुआ? अच्छी सेवा की, अच्छी रिजल्ट निकली, लेकिन वह सेवा का फल मिला, जमा नहीं होता। इसलिए **जमा करने की विधि है - मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्रता।** फाउन्डेशन पवित्रता है। सेवा में भी फाउन्डेशन पवित्रता है। स्वच्छ हो, साफ हो। और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता। होली का अर्थ ही है - पवित्रता। अपवित्रता को जलाना। इसीलिए पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं और फिर पवित्र बन संस्कार मिलन मनाते हैं। तो होली का अर्थ ही है - जलाना, मनाना। बाहर वाले तो गले मिलते हैं लेकिन यहाँ संस्कार मिलन, यही मंगल मिलन है। तो ऐसी होली मनाई या सिर्फ डांस कर ली? गुलाबजल डाल दिया? वह भी अच्छा है खूब मनाओ। बापदादा खुश होते हैं गुलाबजल भले डालो, डांस भले करो लेकिन सदा डांस करो। सिर्फ ३-DD मिनट की डांस नहीं। एक दो में गुणों का वायब्रेशन फैलाना - यह गुलाबजल डालना है। और जलाने को तो आप जानते ही हो, क्या जलाना है! अभी तक भी जलाते रहते हो। हर वर्ष हाथ उठाकर जाते हैं, बस दृढ़ संकल्प हो गया। बापदादा खुश होते हैं, हिम्मत तो रखते हैं। तो हिम्मत पर बापदादा मुबारक भी देते हैं। हिम्मत रखना भी पहला कदम है। लेकिन बापदादा की शुभ आशा क्या है? समय की डेट नहीं देखो। ७ हजार में होगा, ७DDD में होगा, ७DD३ में होगा, यह नहीं सोचो। चलो एवररेडी नहीं भी बनो इसको भी बाप-दादा छोड़ देते हैं, लेकिन सोचो बहुतकाल के संस्कार तो चाहिए ना! आप लोग ही सुनाते हो कि बहुतकाल का पुरुषार्थ, बहुतकाल के राज्य अधिकारी बनाता

है। अगर समय आने पर दृढ़ संकल्प किया, तो वह बहुतकाल हुआ या अल्प-काल हुआ? किसमें गिनती होगा? अल्पकाल में होगा ना! तो अविनाशी बाप से वर्सा क्या लिया? अल्पकाल का। यह अच्छा लगता है? नहीं लगता है ना! तो बहुतकाल का अभ्यास चाहिए, कितना काल है वह नहीं सोचो, जितना बहुतकाल का अभ्यास होगा, उतना अन्त में भी धोखा नहीं खायेंगे। बहुतकाल का अभ्यास नहीं तो अभी के बहुतकाल के सुख, बहुतकाल की श्रेष्ठ स्थिति के अनुभव से भी वंचित हो जाते हैं। इसलिए क्या करना है? बहुतकाल करना है? अगर किसी के भी बुद्धि में डेट का इन्तजार हो तो इन्तजार नहीं करना, इन्तजाम करो। बहुतकाल का इन्तजाम करो। डेट को भी आपको लाना है। समय तो अभी भी एवररेडी है, कल भी हो सकता है लेकिन समय आपके लिए रुका हुआ है। आप सम्पन्न बनो तो समय का पर्दा अवश्य हटना ही है। आपके रोकने से रुका हुआ है। राज्य अधिकारी तो तैयार हो ना? तख्त तो खाली नहीं रहना चाहिए ना! क्या अकेला विश्वराजन तख्त पर बैठेगा! इससे शोभा होगी क्या? रॉयल फैमिली चाहिए, प्रजा चाहिए, सब चाहिए। सिर्फ विश्वराजन तख्त पर बैठ जाए, देखता रहे कहाँ गई मेरी रॉयल फैमिली। इसलिए बापदादा की एक ही शुभ आशा है कि सब बच्चे चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, जो भी अपने को ब्रह्माकुमारी या ब्रह्माकुमार कहलाते हैं, चाहे मधुबन निवासी, चाहे विदेश निवासी, चाहे भारत निवासी – हर एक बच्चा बहुतकाल का अभ्यास कर बहुतकाल के अधिकारी बनें। कभी-कभी के नहीं। पसन्द है? एक हाथ की ताली बजाओ। पीछे वाले होशियार हैं, अटेन्शन से सुन रहे हैं। बापदादा पीछे वालों को अपने आगे देख रहा है। आगे वाले तो हैं ही आगे। (मेडीटेशन हाल में बैठकर मुरली सुन रहे हैं) नीचे वाले बापदादा के सिर के ताज होकर बैठे हैं। वह भी ताली बजा रहे हैं। नीचे वालों को त्याग का भाग्य तो मिलना ही है। आपको सम्मुख बैठने का भाग्य है और उन्हों के त्याग का भाग्य जमा हो रहा है। अच्छा बापदादा की एक आश सुनी! पसन्द है ना! अभी अगले वर्ष क्या देखेंगे? ऐसे ही फिर भी हाथ उठायेंगे! हाथ भले उठाओ, दो-दो उठाओ परन्तु मन का हाथ भी उठाओ।

दृढ़ संकल्प का हाथ सदा के लिए उठाओ।

बापदादा एक-एक बच्चे के मस्तक में सम्पूर्ण पवित्रता की चमकती हुई मणी देखने चाहते हैं। नयनों में पवित्रता की झलक, पवित्रता के दो नयनों के तारे, रूहानियत से चमकते हुए देखने चाहते हैं। बोल में मधुरता, विशेषता, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं। कर्म में सन्तुष्टता, निर्माणता सदा देखने चाहते हैं। भावना में - सदा शुभ भावना और भाव में सदा आत्मिक भाव, भाई-भाई का भाव। सदा आपके मस्तक से लाइट का, फरिश्ते पन का ताज दिखाई दे। दिखाई देने का मतलब है अनुभव हो। ऐसे सजे सजाये मूर्त देखने चाहते हैं। और ऐसी मूर्त ही श्रेष्ठ पूज्य बनेगी। वह तो आपके जड़ चित्र बनायेंगे लेकिन बाप चैतन्य चित्र देखने चाहते हैं।

अच्छा - चारों ओर के सदा बापदादा के साथ रहने वाले, समीप के सदा के साथी, सदा बहुतकाल के पुरुषार्थ द्वारा बहुतकाल का संगमयुगी अधिकार और भविष्य राज्य अधिकार प्राप्त करने वाले अति सेन्सीबुल आत्मायें, सदा अपने को शक्तियों, गुणों से सजे-सजाये रखने वाले, बाप की आशाओं के दीपक आत्मायें, सदा स्वयं को होलीएस्ट और हाइएस्ट स्थिति में स्थित रखने वाले बाप समान अति स्नेही आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

सर्व विदेश वा देश में दूर बैठे हुए भी सम्मुख अनुभव करने वालों को बापदादा का बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार।

दादी जी से:- बापदादा आपको सदा मुबारकें बहुत देते हैं। तन की दुआयें भी देते हैं, मन का साथ भी देते हैं और सेवा के साथी भी बनते हैं। ऐसे अनुभव होता है? तन की दुआयें भी बहुत मिलती हैं। यह दवाई बहुत अच्छी मिल रही है। बाकी हिसाब-किताब तो ब्रह्मा बाप ने भी चुक्तू किया तो सबको करना है। सब सूली से कांटा हो जाता है, बाकी दुआयें बहुत मिलती हैं। परिवार द्वारा भी तो बापदादा द्वारा भी। अमृतवेले से लेकर रात तक बापदादा दुआओं से मालिश करते रहते हैं। ऐसे अनुभव होता है ना? आप नहीं चल रही हैं, चलाने वाला चला रहा है, इसीलिए अथक हैं। अच्छा।

स्पेशल दुआयें हैं। (दादी जानकी से) स्पेशल दुआयें हैं ना? सब निमित्त बनने वालों को स्पेशल दुआयें मिलती हैं। आप फारेनर्स से क्या चाहती हो? (सभी बापदादा के गले में पिरो जायें) यह तो बहुत कुछ चाहती हैं, आप भी बहुत कुछ करते हो ना! यह प्यार की पालना दे रही हैं, इतना अटेन्शन रखना - यही दिल का प्यार है। जिससे प्यार होता है ना उसकी कमी देख नहीं सकते। (बापदादा ने दादी, दादी जानकी को साथ में बिठाया)

यह दादियाँ जो हैं ना - यह बाप के बड़े भाई हैं। तो भाई तो साथ बैठते हैं ना? अच्छी मेहनत नहीं लेकिन मुहब्बत अच्छी करते हैं। बापदादा भी निमित्त बनने वालों को और जो करने वाले हैं उन्हों को देखकर खुश होते हैं। आप भी कम नहीं हो। और यह भी कम नहीं हैं। अच्छा।

(शान्तिवन से यहाँ अच्छा लगता है) लेकिन अनेक वंचित रह जायेंगे। सभी भाई बहिनों का ख्याल तो रखना है ना। यह तो होली का चांस आपको मिल गया है।

विदेशी भाई बहिनों से:- पहला चांस डबल फारेनर्स को मिला है। देखो सबका डबल फारेनर्स से कितना प्यार है। पहला चांस आपको ही मिला है। अच्छा है, बापदादा सेवा में वृद्धि का उमंग-उत्साह देख खुश होता है। बापदादा वतन में भी आपकी मीटिंग्स, प्लैन, प्रोग्राम, रूहरिहान सब कुछ देखते हैं। अच्छा चांस भी मिलता है। हर साल फारेन में इतना संगठन तो नहीं हो सकता है। यहाँ एक तो कितना बेहद का बड़ा परिवार है, यह देखने को मिलता है, सबका परिचय हो जाता है। और दूसरा पावरफुल पालना भी मिलती है, प्यार भी मिलता है। और बीच-बीच में थोड़ी सी स्ट्रिक की आंख दिखाना भी जरूरी है। अटेन्शन है लेकिन अटेन्शन को अन्डरलाइन हो जाता है। ऐसे अनुभव करते हो जो मधुबन में पालना मिलती है तो अन्डरलाइन तो होती है ना! और समीप भी आते हैं।

बापदादा को डबल फारेनर्स की, मैजारिटी की एक विशेषता वर्तमान समय की बहुत अच्छी लगती है, एक तो जो बार-बार समथिंग-समथिंग कहते थे

ना, वह अभी मैजारिटी का कम है। पहले तो छोटी-छोटी बात में कहते थे समथिंग, समटाइम। लेकिन अभी अच्छे हिम्मत वाले बन आगे बढ़ रहे हैं। बचपन पूरा हुआ है, कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ में यूथ हैं और कहाँ-कहाँ वानप्रस्थ के नजदीक हैं। तो यूथ वालों को अभी भी थोड़ी लहर आती है। आयु में यूथ नहीं, पुरुषार्थ में। फिर भी पहले और अभी में अन्तर है। अभी नॉलेजफुल हो गये हैं। समझ गये हैं - क्या करना है, कैसे चलना है, इसके नॉलेजफुल बन गये हैं। बाकी क्या रहा है? अभी पावरफुल बनना है, उसमें अन्डरलाइन करो। सेन्टर भी बढ़ते जाते हैं। हिम्मत रखकर सेन्टर खोलते अच्छे हैं। जो सभी सेन्टर्स सम्भालते हैं, सेन्टर पर रहते हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा - तो सेन्टर पर रहने वाले वा निमित्त बनने वाले कभी थकावट होती है? थोड़ी-थोड़ी होती है? थोड़ा टाइम होती है फिर ठीक हो जाते हैं। अच्छा है, देखो आप लोगों को एक विशेष लिफ्ट है सेवा की। भारत में तो पहले ट्रेनिंग करते हैं फिर ट्रायल पर रहती फिर टीचर बनती और आप लोग सीधा ही सेन्टर इन्चार्ज बन जाते। तो यह चांस तो अच्छा है ना। डबल काम करते हैं। हिम्मत के कारण आगे बढ़ रहे हो और बढ़ते रहेंगे। जॉब भी करते, सेन्टर भी सम्भालते, थककर आते फिर थोड़े टाइम में अपने को रिफ्रेश कर फिर सेन्टर सम्भालते, यह देख करके बापदादा को कभी-कभी दिल में विशेष प्यार आता है। डबल बिजी हो गये ना। लेकिन डबल कार्य करने का डबल फायदा भी होता है। सेवा करना अर्थात् अपने पुण्य का खाता जमा करना और जितना नि:स्वार्थ, युक्तियुक्त सेवा भाव से सेवा करते हैं, उतनी पुण्य की पूंजी जमा करते हो। और वही पुण्य की पूंजी, खजाना साथ में ले जायेंगे। उस पुण्य की कमाई आधाकल्प की कमाई हो जायेगी। तो पुण्य आत्मायें अच्छी हो। मैं निमित्त सेवाधारी पुण्य आत्मा हूँ, यह स्मृति छोटे-छोटे पापों से मुक्त कर देती है। तो सदा चेक करो कि आज के दिन मन्सा द्वारा या सेवा द्वारा कितने पुण्य जमा किये? और पुण्य के आधार से छोटी-छोटी बातें कितनी समाप्त हो गई? खर्च कितना हुआ और बचत कितनी हुई? अगर बार-बार विघ्न आते हैं और उसको मिटाने के लिए गुण और शक्तियों का खर्च करते

हैं तो वह कितना हुआ? और योगयुक्त अवस्था से बाप को साथी बनाकर सेवा करने में पुण्य का खाता कितना जमा हुआ? सबसे बड़े से बड़े मल्टीमल्युनर आप हो। एक दिन में देखो कितनी कमाई करते हो? इतनी कमाई न फारेन में कोई कर सकता है, न भारत में कर सकता है। तो मल्टी मल्टी लगाते जाओ जैसे हिसाब में बिन्दी लगाओ तो बढ़ जाता है ना। एक के आगे एक बिन्दी लगाओ तो 10 हो जाता है और दो बिन्दी लगाओ तो 100 हो जाता है और लगाओ तो हजार हो जाता है, बिन्दी की कमाल है। तो आप ऐसे बिन्दी लगाते जाओ, मल्टी मल्टी मल्टी-मिल्युनर हो जाओ।

अच्छा - सब ठीक हो? पाण्डव ठीक हैं? बहुत अच्छा। बापदादा को भी नाज़ है कि विश्व में जहाँ भी जाओ बाप के बच्चे हैं। आप लोगों को भी नशा होता है ना जिस देश में भी जाओ तो क्या कहेंगे? हमारा घर है। ऐसे लगता है ना कितने घर हो गये हैं आपके? इतने घर किसके होंगे? सभी कहते हो बाबा का घर है, बाबा के घर में जा रहे हैं। कितने लाडले हो गये हो। इसीलिए सदा खुश। स्वप्न में भी दु:ख की लहर नहीं आवे। स्वप्न भी आवें तो खुशी के। उदासी के नहीं, थकावट के नहीं, मूंझने वाले नहीं। खुशी के। तो ऐसे है? ऐसे खुश रहो जो आपका खुशी का चेहरा देख रोने वाले भी खुश हो जाएं। ऐसी खुशी है ना? रोने वाले को हँसा सकते हो ना! चेहरा बदली नहीं हो। कभी ऐसा, कभी ऐसा नहीं। सदा मुस्कराता रहे। अच्छा - कितने परसेन्ट रिफ्रेश हुए? 100 परसेन्ट या 90 परसेन्ट? 101 परसेन्ट अच्छा।

अच्छा - दूसरे वर्ष जब आयेंगे तो 101 होगा या नीचे जायेगा या ऊपर जायेगा? सभी का ऊपर जायेगा! जो समझते हैं देखेंगे, जाने के बाद पता पड़ेगा। चाहते तो ऐसे हैं लेकिन देखेंगे, वह हाथ उठाओ। ऐसे कोई हैं? फर्स्ट टाइम वाले हाथ उठाओ। अच्छा...।

दूसरा ग्रुप :- आबू निवासी, सेवाधारी, हॉस्पिटल निवासी तथा पार्टियों से :-

सभी अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख हर्षित होते हैं? सदा हर्षित। कभी-कभी तो

नहीं? सभी कहते हैं बाप मिला सब कुछ मिला। जब सब मिला, तो जहाँ सर्व प्राप्ति हैं, वहाँ सदा खुशी है ही। ऐसे है ना? खुशी कम तब होती है जब कोई अप्राप्ति है। तो कोई अप्राप्ति है क्या? तो सदा खुश। खुशी अपनी खुराक है। तो खुराक को कोई छोड़ता है क्या? तो सदा खुश रहने वाले, औरों को भी खुशी बांटते हैं। जब भी आपको कोई देखे तो खुशी की झलक दिखाई दे। ऐसे अनुभव करते हो? बापदादा सदा हर बच्चे को खुशनसीब की नज़र से देखते हैं। खुशनसीब हैं और खुशमिजाज हैं। कभी चेहरा बदली तो नहीं होता? थोड़ा सा सोच में, थोड़ा सा कनफ्युज़ चेहरा तो नहीं होता है ना! या थोड़ा-थोड़ा हो जाते हो? कनफ्युज़ होते हो? हाँ हाँ कह रहे हो? कभी-कभी होते हैं। कभी-कभी भी नहीं। बाप के बच्चे सदा एकरस रहते हैं। कभी किस रस में, कभी किस रस में, नहीं। एकरस, सदा खुश। ठीक है ना? अभी नहीं बदलना। आज के दिन इसको जला दो। खत्म। कुछ भी हो, बाप साथ है, मूंझने की क्या बात है। कनफ्युज़ होने की क्या बात है। बाप के साथ का सहयोग लो, अकेले समझते हो तो मौज के बजाए मूंझ जाते हो। तो मूंझना नहीं। ठीक है ना? अभी भी मूंझेंगे। (नहीं) अभी नहीं मूंझ रहे हो, मौज में हो इसलिए कहते हो कि नहीं मूंझेंगे! कुछ भी हो जाए लेकिन मौज नहीं जाए। ठीक है ना या मौज चली जायेगी? मौज नहीं जानी चाहिए। सेवा का बल है तो उस बल को कार्य में लगाओ। सिर्फ सेवा नहीं करो लेकिन सेवा का बल जो बाप से मिलता है, उसको काम में लगाओ। सिर्फ सेवा कर रहे हैं, सेवा कर रहे हैं तो थक जाते हो, मूंझ भी जाते हो लेकिन बाप के साथ का अनुभव, जहाँ बाप है वहाँ मौज ही मौज है। तो साथ को इमर्ज करो, सुनाया ना - याद करते हो लेकिन साथ को यूज़ नहीं करते, इसीलिए मूंझ जाते हो। संगमयुग मौजों का युग है या मूंझने का युग है? मौज का है तो फिर मूंझते क्यों हो? अभी अपने जीवन की डिक्शनरी से मूंझना शब्द निकाल दो। निकाल लिया? पक्का। या थोड़ा-थोड़ा दिखाई देगा? एकदम मिटा दो। परमात्मा के बच्चे और मौज में नहीं रहे तो और कौन रहेगा और कोई है क्या? तो सदा मौज ही मौज है। सभी अपनी ड्युटी पर खुश हो? या थोड़ा-थोड़ा ड्युटी में खिटखिट

है? कुछ भी हो जाए, यह पेपर पास करना है। बात नहीं है, पेपर है। तो पेपर पास करने में खुशी होती है ना। क्लास आगे बढ़ते हैं ना! तो बात हो गई, समस्या आ गई यह नहीं सोचो। पेपर आया पास हुआ, मौज मनाओ। जब बच्चे पेपर पास करके आते हैं तो कितने मौज में होते हैं, मूंझते हैं क्या! यह पेपर तो आयेंगे। पेपर ही अनुभव में आगे बढ़ाते हैं, इसलिए सदा मौज में रहने वाले। सेवाधारी नहीं लेकिन मौज में रहने वाले। सदा यह अपना टाइटल याद करो। हॉस्पिटल के सेवाधारी हैं, नहीं, मौज में रहने वाले सेवाधारी हैं। अच्छा।

डाक्टर्स तो मौज में रहते हो ना? पेशेन्ट को मौज दिलाने वाले। बहुत अच्छा। (बापदादा सभी से हाथ उठवाकर मिल रहे हैं।)

सभी बहुत-बहुत पुण्य का खाता जमा कर रहे हो। वैरायटी गुलदस्ता सबसे प्यारा लगता है। वैरायटी की सदा शोभा होती है, सुन्दरता होती है, इसलिए प्यारा लगता है। तो स्थान अनेक हैं लेकिन हैं सब एक। एक ही लक्ष्य है, एक ही मत है और एक ही बाप है, एक ही परिवार है और अवस्था भी एकरस। एकरस है ना? और रस में नहीं जाना, माया खा जायेगी। इसलिए एकरस रहना। माया को भी आपसे प्यार है ना। ८४ जन्मों का प्यार है। लेकिन आप जानते हो कि माया से प्यार रखना है या बाप से? तो जहाँ बाप होगा वहाँ माया नहीं आयेगी। माया भाग जायेगी, हिम्मत ही नहीं होगी बाप के नजदीक आने की। कोई भी परिस्थिति आवे तो दिल से बाबा कहा, परिस्थिति भागी। अनुभव है ना! भगाना आता है या बिठाना आता है? उसको बिठाना नहीं। भगाओ, दूर से भगाओ। आ जावे फिर निकालने की मेहनत करो, वह भी नहीं करना। दूर से ही भगाओ। बाप का हाथ पकड़ लो तो देखेगी यह तो बाप का हाथ पकड़ा हुआ है तो भाग जायेगी। तो सदा मायाजीत। ठीक है ना! देखो आज नजदीक में तो बैठे हो ना। चांस तो मिला ना। अभी तो नहीं कहेंगे हमको तो कभी चांस नहीं मिला। मिल गया ना? बड़ा परिवार है तो बांटकर मिलता है। अच्छा तो सब खुशराजी। बापदादा का शब्द याद है ना - सदा। कभी कभी वाले नहीं, सदा। हॉस्पिटल वाले भी अच्छी मेहनत कर रहे हैं। हॉस्पिटल का कार्य भी

बढ़ रहा है। अच्छा।

तीसरा ग्रुप - मधुबन निवासी भाई बहिनों से :-

मधुबन निवासी अर्थात् कर्म में मधुरता और वृत्ति में बेहद का वैराग्य। वन में क्या होता है? बेहद का वैराग्य होता है ना! तो मधुबन निवासी अर्थात् एकस्ट्रा गिफ्ट के अधिकारी। गिफ्ट है ना! कितने निश्चिंत हो। अपनी ड्युटी बजाई और मौज में रहे। मदोगरी करनी है, जिज्ञासुओं को सम्भालना है, इससे तो फ्री हैं ना! ज्यादा में ज्यादा ८ घण्टा ड्युटी। कम ही है। इतफ़ाक कभी एक्स्ट्रा देनी पड़ती होगी। लेकिन और जिम्मेवारी तो नहीं है ना। चलो बिजली वाले को बिजली की जिम्मेवारी या जो भी ड्युटी है, एक ही ड्युटी है ना। अनेक तो नहीं है। तो ८ घण्टा तो ड्युटी के लिए बापदादा ने दिया है, कभी ८७ घण्टा भी हो जाता होगा, तो भी ८ घण्टा आराम, अच्छा ८७ घण्टा ड्युटी तो भी ४ घण्टा तो बचता है। ८७ घण्टा से ज्यादा तो ड्युटी होगी नहीं। ८७ घण्टे में तो सारा दिन आ गया। फिर कभी रात को करनी पड़ती होगी तो दिन में हल्का होगा। तो कम से कम ४ घण्टा पावरफुल योग रहता है? निरन्तर याद तो है ही लेकिन पावरफुल याद वह कम से कम ४ घण्टे है? तो मधुबन निवासियों को स्पेशल अटेन्शन रखना है कि हमें चारों ओर पावरफुल याद के वायब्रेशन फैलाने हैं क्योंकि आप ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर बैठे हो। स्थान तो ऊंचा है ना! इससे ऊंचा तो कोई है नहीं। तो ऊंची टावर जो होती है, वह क्या करती है? सकाश देती है ना! लाइट माइट फैलाते हैं ना। तो कम से कम ४ घण्टे ऐसे समझो हम ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर बैठ विश्व को लाइट और माइट दे रहा हूँ। यह तो आपको अच्छी तरह से अनुभव है कि मधुबन का वायब्रेशन चाहे कमजोरी का, चाहे पावर का - दोनों ही बहुत जल्दी फैलता है। अनुभव है ना! मधुबन में सुई भी गिरती है तो वह आवाज भी पहुंचता है क्योंकि मधुबन निवासियों की तरफ सबका अटेन्शन होता है। मधुबन वाले समझो विजय प्राप्त करने और कराने के निमित्त हैं। मधुबन की महिमा कितनी सुनते हो! मधुबन के गीत भी गाते हो ना। तो मधुबन के दीवारों की महिमा है या मधुबन निवासियों की महिमा है! किसकी महिमा है? आप सबकी।

तो ऐसे अपनी जिम्मेवारी समझो। सिर्फ अपना काम किया, ड्युटी पूरी की यह जिम्मेवारी नहीं। मधुबन का वायुमण्डल चारों ओर वायुमण्डल बनाता है। बाप-दादा को खुशी है कि आपस में संगठन बनाकर उन्नति के प्लैन वा रूहरिहान करते हैं। यह बहुत अच्छा है, इसको छोड़ना नहीं। संगठन में लाभ होता है और सारा दिन समझो कर्मणा किया, थोड़ा समय भी आपस में उन्नति की रूहरिहान करने से चेंज हो जाते हैं। उमंग-उत्साह भी बढता है। तो बापदादा को यह अच्छा लगता है, जो ग्रुप बनाकर बैठते हो उसको हल्का नहीं करो और पावरफुल बनाओ। मिस भी नहीं करना चाहिए। आप समझो हमारे में तो ताकत है, हमने तो सब कुछ कर लिया है, नहीं। सहयोग देना भी सेवा है। बैठने की जरूरत नहीं हो, लेकिन बैठना - यह बहुत सेवा है। बापदादा ने समाचार सुना है, अच्छा है। इसको और बढ़ाओ। मुरली तो सुनते हो लेकिन मुरली सुनने के बाद कर्मणा में चले जाते हो तो बीच-बीच में कर्म कान्सेस भी हो जाते हो। कुछ योग लगाते हो, कुछ कर्म कान्सेस हो जाते हो। लेकिन आपस में ऐसी रूहरिहान करना - यह एक दो को रिफ्रेश करना है। वायुमण्डल को पावरफुल बनाना है। तो इस खुशखबरी पर बाबा बहुत खुश है।

अभी सबको कम से कम ४ घण्टे का चार्ट दादी को देना चाहिए। पसन्द है? ४ से ६ हो जाए तो कम नहीं करना। ६ हो जाए, ८ हो जाए बहुत अच्छा। लेकिन कम से कम ४ घण्टा, इक्ट्ठा नहीं मिले कोई हर्जा नहीं। ३० मिनट ∩D मिनट पावरफुल स्टेज बनाओ - टोटल में ४ घण्टा होना चाहिए। चाहे आधा घण्टा मिलता है, चाहे ३० मिनट मिलता है लेकिन जमा ४ घण्टा होना चाहिए। हो सकता है? जो समझते हैं हो सकता है वह हाथ उठाओ। अच्छा यह तो सभी एवररेडी हैं। बापदादा खुश है, हिम्मत बहुत अच्छी है। बापदादा एकस्ट्रा मदद देगा, हिम्मत नहीं हारना। हिम्मत रखेंगे तो परिवार की भी मदद, बड़ों का भी मन से सहयोग मिलेगा। और बापदादा तो एक का पदमगुणा देता ही है। तो सबको पसन्द है? अच्छा - ४ घण्टे से कम नहीं करना। एक दिन अगर ४ घण्टे नहीं हो तो दूसरे दिन ६ घण्टे करके ४ घण्टे पूरे करना। कर सकते हो? देखो, सोच

समझकर हाँ करो। अभी प्रभाव में आकर हाँ नहीं करो। कर सकते हैं? (दादी से) देख रही हो ना। सभी ने हाथ उठाया है। इन्हों को तो मुबारक का इनाम है। एडवांस में मुबारक है। इनाम को छोडना नहीं। बहुत अच्छा। बापदादा तो मधुबन निवासियों को सदा नयनों के सामने देखते हैं। नूरे रत्न देखते हैं। मधुबन निवासी बनना कोई छोटी सी बात नहीं है। मधुबन निवासी बनना अर्थात् अनेक गिफ्ट के अधिकारी बनना। देखो, स्थूल गिफ्ट भी मधुबन में बहुत मिलती है ना! और कितना स्वमान मिलता है। अगर मधुबन वाला कहाँ भी जाता है तो किस नजर से सभी देखते हैं? मधुबन वाला आया है। तो इतना अपना स्वमान सदा इमर्ज रखो। मर्ज नहीं, इमर्ज। ठीक है ना?

अभी बापदादा चार्ट पूछते रहेंगे? १५-१५ दिन के बाद चार्ट की रिजल्ट देखेंगे। ठीक है ना! चार्ट में देना - हाँ या ना। ऊपर तारीख लिखना और नीचे हाँ ना, हाँ ना। बस दो या ३ या ४ घण्टा पावरफुल याद रही। बस, ज्यादा नहीं लिखना। पढ़ने का टाइम नहीं मिलता है ना। मधुबन निवासियों से सभी का प्यार है और आप लोगों को कितनी दुआयें मिलती हैं। जो आई.पी. भी आते हैं, योग शिविर में आते हैं, कान्फ्रेन्स में आते हैं तो मधुबन की सेवा देखकरके दुआयें तो देते हैं ना। हर एक के दिल से निकलता है - वाह सेवाधारी वाह! तो दुआयें भी तो जमा हो रही हैं। तो कमाल करके दिखाना। मधुबन वालों का रिकार्ड ४ घण्टे का जरूर हो, ज्यादा भी हो तो और अच्छा। यही प्रवृत्ति वालों को, सेन्टर वालों को, सभी को पावरफुल बनायेगा। निमित्त आप बनो। अच्छा। खुशराजी हैं, यह पूछने की आवश्यकता है? या खुश रहते ही हो, पूछने की आवश्यकता है? खुश तो सभी हैं ही। सभी के चेहरे देखो, सभी के दांत निकले हुए हैं। बहुत अच्छे हो। अपनी विशेषता देखो और उसको कार्य में लगाओ।

विशेष मधुबन की बहिनों से बात कर रहे हैं। बापदादा सब देखते हैं। बापदादा से कुछ छिपता नहीं है। अन्दर का भी देखता है, तो बाहर का भी देखता है। मधुबन की बहिनें विशेष अपनी-अपनी विशेषता को कार्य में लगाओ। हर एक में विशेषतायें हैं, ऐसे नहीं कोई विशेषता नहीं है। सभी में हैं। सिर्फ उसको

कार्य में लगाने से वृद्धि को प्राप्त होती जायेंगी। औरों की भी विशेषता देखो और अपनी विशेषता कार्य में लगाओ। कम नहीं हैं। सभी क्या बुलाते हैं! मधुबन की बहिनें। मधुबन नाम आने से ही कितनी खुशी हो जाती है। तो मधुबन की बहिनें कम नहीं हैं। सभी के दुआओं की पात्र हो। पुण्य का खाता जितना बनाने चाहो उतना बना सकते हो। चांस है। समय को जितना सफल करने चाहो उतना कर सकते हो। चांस तो है ना! या चांस नहीं मिलता है? चांस आपेही लो, चांस ऐसे नहीं मिलेगा। कोई कहे हाँ यह करो, नहीं। चांस लो। चांस लेने से क्या बन जायेंगे? चांसलर। मधुबन वाले भाग्यवान तो हैं ही लेकिन अपने भाग्य को कार्य में लगाओ। समझा। बहिनें हैं सिकीलधी और भाई हैं बहुत। सिकीलधी हैं ना! बहुत अच्छा है। अभी ७ घण्टे में पहला नम्बर बहिनें आनी चाहिए। ऐसे नहीं कहना - यह हो गया ना। यह होना नहीं चाहिए ना! यह नहीं। करना ही है। पक्का! इन्हों की फोटो निकालो। अच्छा। ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति १३-२-९९ 'अव्यक्त बापदादा' मधुबन

कर्मातीत अवस्था तक पहुंचने के लिए कन्ट्रोलिंग पावर को बढ़ाओ, स्वराज्य अधिकारी बनो

आज बापदादा चारों ओर के अपने राज दुलारे परमात्म प्यारे बच्चों को देख रहे हैं। यह परमात्म दुलार वा परमात्म प्यार बहुत थोड़े बच्चों को प्राप्त होता है। बहुत थोड़े ऐसे भाग्य के अधिकारी बनते हैं। ऐसे भाग्यवान बच्चों को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। राज दुलारे अर्थात् राजा बच्चे। तो अपने को राजा समझते हो? नाम ही है राजयोगी। तो राजयोगी अर्थात् राजे बच्चे। वर्तमान समय भी राजे हो और भविष्य में भी राजे हो। अपना डबल राज्य पद अनुभव करते हो ना? अपने आपको देखो कि मैं राजा हूँ? स्वराज्य अधिकारी हूँ? हर एक राज्य-कारोबारी आपके आर्डर में कार्य कर रहे हैं? राजा की विशेषता क्या होती है, वह तो जानते हो ना? रूलिंग पावर और कन्ट्रोलिंग पावर दोनों पावर आपके पास हैं? अपने आपसे पूछो कि राज्य कारोबारी सदा कन्ट्रोल में चल रहे हैं?

बापदादा आज बच्चों की कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर चेक कर रहे थे, तो बताओ क्या देखा होगा? हर एक जानते तो हैं। बापदादा ने देखा कि अभी भी अखण्ड राज्य अधिकार सभी का नहीं है। अखण्ड, बीच-बीच में खण्डित होता है। क्यों? सदा स्वराज्य के बदले पर राज्य भी खण्डित कर देता है। पर राज्य की निशानी है - यह कर्मेन्द्रियां पर-अधीन हो जाती हैं। माया के राज्य का प्रभाव अर्थात् पर-अधीन बनाना। वर्तमान समय मैनारिटी तो ठीक हैं लेकिन मैजारिटी माया के वर्तमान समय के विशेष प्रभाव में आ जाते हैं। जो आदि अनादि संस्कार हैं उसके बीच-बीच में मध्य के अर्थात् द्वापर से अभी अन्त तक के संस्कार के प्रभाव में आ जाते हैं। स्व के संस्कार ही स्वराज्य को खण्डित कर

देते हैं। उसमें भी विशेष संस्कार व्यर्थ सोचना, व्यर्थ समय गँवाना और व्यर्थ बोल-चाल में आना, चाहे सुनना, चाहे सुनाना। एक तरफ व्यर्थ के संस्कार, दूसरे तरफ अलबेलेपन के संस्कार भिन्न-भिन्न रॉयल रूप में स्वराज्य को खण्डित कर देते हैं। कई बच्चे कहते हैं कि समय समीप आ रहा है लेकिन जो संस्कार शुरू में इमर्ज नहीं थे, वह अभी कहाँ-कहाँ इमर्ज हो रहे हैं। वायुमण्डल में संस्कार और इमर्ज हो रहे हैं, इसका कारण क्या? यह माया के वार का एक साधन है। माया इसी से अपना बनाकर परमात्म मार्ग से दिलशिकस्त बना देती है। सोचते हैं कि अभी तक ऐसे ही है तो पता नहीं समानता की सफलता मिलेगी या नहीं मिलेगी! कोई न कोई बात में जहाँ कमजोरी होगी, उसी कमजोरी के रूप में माया दिलशिकस्त बनाने की कोशिश करती है। बहुत अच्छा चलते-चलते कोई न कोई बात में माया संस्कार पर अटैक कर, पुराने संस्कार इमर्ज करने का रूप रखकर दिलशिकस्त करने की कोशिश करती है। लास्ट में सब संस्कार समाप्त होने हैं इसलिए कभी-कभी रहे हुए संस्कार इमर्ज हो जाते हैं। लेकिन बापदादा आप सभी भाग्यवान बच्चों को इशारा दे रहे हैं - घबराओ नहीं, माया की चाल को समझ जाओ। **आलस्य और व्यर्थ - इसमें निगेटिव भी आ जाता है - इन दोनों बातों पर विशेष अटेन्शन रखो।** समझ जाओ कि यह माया का वर्तमान समय वार करने का साधन है।

बाप के साथ का अनुभव, कम्बाइन्ड-पन का अनुभव इमर्ज करो। ऐसे नहीं कि बाप तो है ही मेरा, साथ है ही है। साथ का प्रैक्टिकल अनुभव इमर्ज हो। तो यह माया का वार, वार नहीं होगा, माया हार खा लेगी। यह माया की हार है, वार नहीं है। सिर्फ घबराओ नहीं, क्या हो गया, क्यों हो गया! हिम्मत रखो, बाप के साथ को स्मृति में रखो। चेक करो कि बाप का साथ है? साथ का अनुभव मर्ज रूप में तो नहीं है? नॉलेज है कि बाप साथ है, नॉलेज के साथ-साथ बाप की पावर क्या है? ऑलमाइटी अथॉरिटी है तो सर्व शक्तियों की पावर इमर्ज रूप में अनुभव करो। इसको कहा जाता है बाप के साथ का अनुभव होना। अलबेले नहीं बन जाओ – बाप के सिवाए और है ही कौन, बाप ही तो है। जब बाप ही है

तो वह पावर है? जैसे दुनिया वालों को कहते हो अगर परमात्मा व्यापक है तो परमात्म गुण अनुभव होने चाहिए, दिखाई देने चाहिए। तो बापदादा भी आपको पूछते हैं कि अगर बाप साथ है, कम्बाइन्ड है तो वह पावर हर कर्म में अनुभव होती है? दूसरों को भी अनुभव होती है? क्या समझते हो? डबल फारेनर्स क्या समझते हो? पावर है? सदा है? पहले क्वेश्चन में तो सब हाँ कर देते हैं। फिर जब दूसरा क्वेश्चन आता है, सदा है? तो सोच में पड़ जाते हैं। तो अखण्ड तो नहीं हुआ ना! आप चैलेन्ज क्या करते हो? अखण्ड राज्य स्थापन कर रहे हो या खण्डित राज्य स्थापन कर रहे हो? क्या कर रहे हो? अखण्ड है ना! टीचर्स बोलो अखण्ड है? तो अभी चेक करो अखण्ड स्वराज्य है? राज्य अर्थात् प्रालब्ध सदा का लेना है या बीच-बीच में कट हो जाए तो कोई हर्जा नहीं? ऐसे चाहते हो? लेने में तो सदा चाहिए और पुरुषार्थ में कभी-कभी चलता है, ऐसे? फारेनर्स को कहा था ना कि अपने जीवन की डिक्शनरी से समटाइम और समथिंग शब्द निकाल दो। अभी समटाइम खत्म हुआ? जयन्ती बोलो। रिजल्ट देंगी ना। तो समटाइम खत्म है? जो समझते हैं, समटाइम शब्द सदा के लिए समाप्त हो गया, वह हाथ उठाओ। खत्म हो गया या खत्म होगा? लम्बा हाथ उठाओ। वतन की टी.वी. में तो आपके हाथ आ गये, यहाँ की टी.वी. में सभी के नहीं आते। यह कलियुगी टी.वी. है ना, वहाँ जादू की टी.वी. है इसलिए आ जाता है। बहुत अच्छा फिर भी बहुतों ने उठाया है, उन्हों को सदाकाल की मुबारक हो। अच्छा। अभी भारतवासी जिसका प्रैक्टिकल सदाकाल स्वराज्य है, सर्व कर्मेन्द्रियां लॉ और आर्डर में हैं, वह हाथ उठाओ। पक्का हाथ उठाना, कच्चा नहीं। सदा याद रखना कि सभा में हाथ उठाया है। फिर बापदादा को बातें बहुत मीठी-मीठी बताते हैं। कहते हैं बाबा आप तो जानते हो ना, कभी-कभी माया आ जाती है ना! तो अपने हाथ की लाज़ रखना। अच्छा है। फिर भी हिम्मत रखी है तो हिम्मत नहीं हारना। हिम्मत पर बापदादा की मदद है ही है।

आज बापदादा ने देखा कि वर्तमान समय के अनुसार अपने ऊपर, हर कर्मेन्द्रियों के ऊपर अर्थात् स्वयं की स्वयं प्रति जो कन्ट्रोलिंग पावर होनी चाहिए

वह कम है, वह और ज्यादा चाहिए। बापदादा बच्चों की रूहरिहान सुन मुस्करा रहे थे, बच्चे कहते हैं कि पावरफुल याद के चार घण्टे होते नहीं हैं। बापदादा ने आठ घण्टे से ४ घण्टा किया और बच्चे कहते हैं दो घण्टा ठीक है। तो बताओ कन्ट्रोलिंग पावर हुई? और अभी से अगर यह अभ्यास नहीं होगा तो समय पर पास विद आनर, राज्य अधिकारी कैसे बन सकेंगे! बनना तो है ना? बच्चे हँसते हैं। आज बापदादा ने बच्चों की बातें बहुत सुनी हैं। बापदादा को हँसाते भी हैं, कहते हैं ट्रैफिक कन्ट्रोल ३ मिनट नहीं होता, शरीर का कन्ट्रोल हो जाता है, खड़े हो जाते हैं, नाम है मन के कन्ट्रोल का लेकिन मन का कन्ट्रोल कभी होता, कभी नहीं भी होता। कारण क्या है? कन्ट्रोलिंग पावर की कमी। इसे अभी और बढ़ाना है। आर्डर करो, जैसे हाथ को ऊपर उठाना चाहो तो उठा लेते हो। क्रेक नहीं है तो उठा लेते हो ना! ऐसे मन, यह सूक्ष्म शक्ति कन्ट्रोल में आनी है। लाना ही है। ऑर्डर करो - स्टॉप तो स्टॉप हो जाए। सेवा का सोचो, सेवा में लग जाए। परमधाम में चलो, तो परमधाम में चला जाये। सूक्ष्मवतन में चलो, सेकण्ड में चला जाए। जो सोचो वह आर्डर में हो। अभी इस शक्ति को बढ़ाओ। छोटे-छोटे संस्कारों में, युद्ध में समय नहीं गंवाओ, आज इस संस्कार को भगाया, कल उसको भगाया। कन्ट्रोलिंग पावर धारण करो तो अलग-अलग संस्कार पर टाइम नहीं लगाना पड़ेगा। नहीं सोचना है, नहीं करना है, नहीं बोलना है। स्टॉप। तो स्टॉप हो जाए। यह है कर्मातीत अवस्था तक पहुंचने की विधि। तो कर्मातीत बनना है ना? बापदादा भी कहते हैं आप को ही बनना है। और कोई नहीं आयेंगे, आप ही हो। आपको ही साथ में ले जायेंगे लेकिन कर्मातीत को ले जायेंगे ना। साथ चलेंगे या पीछे-पीछे आयेंगे? (साथ चलेंगे) यह तो बहुत अच्छा बोला। साथ चलेंगे, हिसाब चुक्तू करेंगे? इसमें हाँ जी नहीं बोला। कर्मातीत बनके साथ चलेंगे ना। साथ चलना अर्थात् साथी बनकर चलना। जोड़ी तो अच्छी चाहिए या लम्बी और छोटी? समान चाहिए ना! तो कर्मातीत बनना ही है। तो क्या करेंगे? अभी अपना राज्य अच्छी तरह से सम्भालो। रोज अपनी दरबार लगाओ। राज्य अधिकारी हो ना! तो अपनी दरबार लगाओ, कर्मचारियों से हालचाल पूछो।

चेक करो ऑडर में हैं? ब्रह्मा बाप ने भी रोज़ दरबार लगाई है। कापी है ना। इन्हों को बताना, दिखाना। ब्रह्मा बाप ने भी मेहनत की, रोज़ दरबार लगाई तब कर्मातीत बनें। तो अभी कितना टाइम चाहिए? या एवररेडी हो? इस अवस्था से सेवा भी फास्ट होगी। क्यों? एक ही समय पर मन्सा शक्तिशाली, वाचा शक्ति-शाली, संबंध-सम्पर्क में चाल और चेहरा शक्तिशाली। एक ही समय पर तीनों सेवा बहुत फास्ट रिजल्ट निकालेगी। ऐसे नहीं समझो कि इस साधना में सेवा कम होगी, नहीं। सफलता सहज अनुभव होगी। और सभी जो भी सेवा के निमित्त हैं अगर संगठित रूप में ऐसी स्टेज बनाते हैं तो मेहनत कम और सफ-लता ज्यादा होगी। तो विशेष अटेन्शन कन्ट्रोलिंग पावर को बढ़ाओ। संकल्प, समय, संस्कार सब पर कन्ट्रोल हो। बहुत बार बापदादा ने कहा है - आप सब राजे हो। जब चाहो जैसे चाहो, जहाँ चाहो, जितना समय चाहो ऐसा मन बुद्धि लॉ और आर्डर में हो। आप कहो नहीं करना है, और फिर भी हो रहा है, कर रहे हैं तो यह लॉ और आर्डर नहीं है। तो स्वराज्य अधिकारी अपने राज्य को सदा प्रत्यक्ष स्वरूप में लाओ। लाना है ना? ला भी रहे हैं लेकिन बापदादा ने कहा ना - सदा शब्द एड करो। बापदादा अभी लास्ट में आयेंगे, अभी एक टर्न है। एक टर्न में रिजल्ट पूछेंगे। ८४ दिन होते हैं ना। तो ८४ दिन में कुछ तो दिखायेंगे या नहीं? टीचर्स बोलो, ८४ दिन में रिजल्ट होगी?

अच्छा - मधुबन वाले ८४ दिन में रिजल्ट दिखायेंगे। अभी कहो हाँ या ना! अभी हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) अपने हाथ की लाज़ रखना। जो समझते हैं कोशिश करेंगे, ऐसे कोशिश वाले हाथ उठाओ। ज्ञान सरोवर, शान्तिवन वाले उठो। (बापदादा ने मधुबन, ज्ञानसरोवर, शान्तिवन के मुख्य निमित्त भाई बहिनों को सामने बुलाया)

बापदादा ने तो आप सबका साक्षात्कार कराने के लिए बुलाया है। आप लोगों को देखकर सभी खुश होते हैं। अभी बापदादा चाहते क्या हैं, वह बता रहे हैं। चाहे पाण्डव भवन, चाहे शान्तिवन, चाहे ज्ञान सरोवर, चाहे हॉस्पिटल चार धाम तो हैं। पांचवा छोटा है। चारों में ही बापदादा की एक आश है – बापदादा

तीन मास के लिए चारों धाम में अखण्ड, निर्विघ्न, अटल स्वराज्यधारी, राजाओं का रिजल्ट देखने चाहते हैं। तीन मास यहाँ वहाँ से कोई भी और बातें नहीं सुनने में आवें। सब स्वराज्य अधिकारी नम्बरवन, क्या तीन मास की ऐसी रिजल्ट हो सकती है? (निर्वैर भाई से) - पाण्डवों की तरफ से आप हो। हो सकता है? दादी तो है लेकिन साथ में यह जो सामने बैठे हैं, सब हैं। तो हो सकता है? (दादी कहती है हो सकता है।) जो पाण्डव भवन वाले बैठे हैं वह हाथ उठाओ, हो सकता है। अच्छा मानो कोई कमजोर है, उसका कुछ हो जाता है फिर आप क्या करेंगे? आप समझते हो कि साथ वालों को भी साथ देते हुए रिजल्ट निकालेंगे, इतनी हिम्मत रखते हो? हो सकता है या सिर्फ अपनी हिम्मत है? दूसरों की बात को भी समा सकते हो? उसकी गलती समा सकते हो? वायुमण्डल में फैलाओ नहीं, समा दो, इतना कर सकते हो? जोर से बोलो हाँ जी। मुबारक हो। ౨ मास के बाद रिपोर्ट देखेंगे। किसी भी स्थान से कोई भी रिपोर्ट नहीं निकलनी चाहिए। एक दो को वायब्रेशन दे समा देना और प्यार से वायब्रेशन देना। झगड़ा नहीं हो।

ऐसे ही डबल विदेशी भी रिजल्ट देंगे ना। सभी को बनना है ना। डबल विदेशी जो समझते हैं अपने सेन्टर पर, साथियों के साथ ౨ मास की रिजल्ट निकालेंगे, वह हाथ उठाओ। जो समझते हैं कोशिश करेंगे, कह नहीं सकते, वह कोई हैं तो हाथ उठा लो। साफ दिल हैं, साफ दिल वालों को मदद मिलती है। अच्छा। (फिर बापदादा ने सभी ज़ोन के भाई बहिनों से भी हाथ उठवाये तथा अपने स्थान पर खड़ा किया। पहले महाराष्ट्र, दिल्ली, कनार्टक के भाई बहिनों को खड़ा किया और वायदा कराया। फिर यू.पी. वालों को सेवा की मुबारक दी।

यू.पी.:- ([illegible] हैं) पहले यू.पी. वालों को सेवा की मुबारक है। सभी ने अच्छी हिम्मत कर सेवा में अपना तन, मन, समय और धन भी सफल किया और पुण्य का खाता जमा किया इसलिए सभी की दुआयें सेवा का फल स्वत: ही मिलता है। तो अच्छा किया, हिम्मत की और सफलता प्राप्त की, इसलिए मुबारक हो। और सबकी दुआयें भी हैं। अच्छा - जो समझते हैं कि रिजल्ट

निकालनी ही है, तो हाँ जी करो। जो समझते हैं कोशिश करके देखेगे वह खड़े रहो बाकी बैठ जाओ।

(इसके बाद गुजरात, इन्दौर, पंजाब, इस्टर्न-(नेपाल, आसाम, उड़ीसा, बंगाल-बिहार) राजस्थान, भोपाल, आगरा, तामिलनाडु आदि सभी ज़ोन वालों को बापदादा ने सभा में खड़ा करके वायदे कराये।)

मैजारिटी तो उमंग-उत्साह में हैं बाकी जिन्होंने कोशिश में हाथ उठाया, वह भी राइट हैं। लेकिन बापदादा कहते हैं हिम्मत रखने से, दृढ़ संकल्प करने से सब अच्छा हो जाता है। मास्टर सर्वशक्तिवान बन अगर संकल्प करो तो क्या नहीं कर सकते हो। जब विश्व को परिवर्तन कर सकते हो तो क्या अपने को नहीं कर सकते हो! इसीलिए जिन्होंने हाँ की है उनको बापदादा यही कहते हैं कि सदा यह संकल्प अमृतवेले इमर्ज करना कि हमें निर्विघ्न रहना ही है और कोशिश वाले सदा अमृतवेले योग के बाद यह दृढ़ संकल्प रिवाइज करो कि हिम्मते बच्चे मददे बाप है। तो इससे कोशिश करने के बजाए सफलता अनुभव करते जायेंगे। बाकी बापदादा सभी बच्चों के रिजल्ट को देख खुश तो सदा है ही फिर भी हिम्मत के ऊपर विशेष मुबारक दे रहे हैं। तीन मास का अभ्यास सदाकाल का अनुभवी बना देगा। अगर अपने उमंग-उत्साह से किया तो। मजबूरी से किया ३ मास पास करने हैं, फिर तो सदाकाल का नहीं होगा। लेकिन उमंग-उत्साह से किया तो सदाकाल के लिए अनादि अविनाशी संस्कार इमर्ज हो जायेंगे। समझा।

अच्छा - चारों ओर के सर्व स्वराज्य अधिकारी आत्माओं को, सदा अखण्ड राज्य के पात्र आत्माओं को, सदा बाप के समान कर्मातीत स्थिति में पहुंचने वाले, बाप को फालो करने वाले तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा एक दो को शुभ भावना, शुभ कामना का सहयोग देने वाले शुभचिंतक बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- आप निमित्त बनी हुई आत्माओं के अन्दर जो तीव्र पुरुषार्थ का संकल्प इमर्ज रहता है वह औरों को भी बल देकर चला रहा है। दिलशिकस्त

आत्माओं में बल भर रहा है। और सभी नया उमंग लेकर जाते हैं। चाहे कुछ भी हो, थोड़ी बहुत खिटपिट तो होती है परन्तु अपने पुरुषार्थ का उमंग मैजारिटी ले जाते हैं। इसलिए धीरे-धीरे सब ठीक हो रहा है, हो जायेगा। कम नहीं होगा, बढ़ता जायेगा। अच्छा है बापदादा को नाज़ है कि ब्रह्मा बाप के साथी बच्चे अच्छा साथ निभा रहे हैं। कम नहीं हैं। साथ निभाने में अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। तो बाप-दादा दोनों ही अपने साथ निभाने वाले साथी बच्चों को बार-बार मुबारक क्या देंगे, दुआयें देते रहते हैं। अच्छा पार्ट बजा रहे हो। साकार में स्तम्भ बन गये हैं, जिसके आधार पर सब आगे चल रहे हैं। इसलिए आप लोगों को सहज पुरुषार्थ है, दुआओं से आपका खाता बहुत-बहुत बढ़ रहा है। अच्छा है।

([illegible] तारीख को दादी का छोटा आपरेशन है) पता है, क्या है, कुछ नहीं है। हुआ पड़ा है कोई ऐसी बात नहीं है। खिटखिट से निकाल देना अच्छा है। आगे भी तो सेवा करनी है ना। मुख्य पार्टधारी हैं तो उसकी ज्यादा सम्भाल की जाती है। चलाना नहीं पड़ता है। ध्यान देना ही पड़ता है। कुछ नहीं है। अच्छा - ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति ''अव्यक्त बापदादा'' ३०.३.९९ मधुबन

तीव्र पुरुषार्थ की लगन को ज्वाला रूप बनाकर बेहद के वैराग्य की लहर फैलाओ

आज बापदादा हर एक बच्चे के मस्तक पर तीन लकीरें देख रहे हैं। जिसमें एक लकीर है - परमात्म पालना के भाग्य की लकीर। यह परमात्म पालना का भाग्य सारे कल्प में अब एक बार ही मिलता है, सिवाए इस संगमयुग के यह परमात्म पालना कभी भी नहीं प्राप्त हो सकती। यह परमात्म पालना बहुत थोड़े बच्चों को प्राप्त होती है। दूसरी लकीर है - परमात्म पढ़ाई के भाग्य की लकीर। परमात्म पढ़ाई यह कितना भाग्य है जो स्वयं परम आत्मा शिक्षक बन पढ़ा रहे हैं। तीसरी लकीर है - परमात्म प्राप्तियों की लकीर। सोचो कितनी प्राप्तियां हैं। सभी को याद है ना - प्राप्तियों की लिस्ट कितनी लम्बी है! तो हर एक के मस्तक में यह तीन लकीर चमक रही हैं। ऐसे भाग्यवान आत्मायें अपने को समझते हो? पालना, पढ़ाई और प्राप्तियां। साथ-साथ बापदादा बच्चों के निश्चय के आधार पर रूहानी नशे को भी देख रहे हैं। हर एक परमात्म बच्चा कितना रूहानी नशे वाली आत्मायें हैं! सारे विश्व में और सारे कल्प में सबसे हाइएस्ट भी हैं, महान भी हैं और होलीएस्ट भी हैं। आप जैसी पवित्र आत्मायें तन से भी, मन से भी देव रूप में सर्व गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी और कोई बनता नहीं है। और फिर हाइएस्ट भी हो, होलीएस्ट भी हो साथ-साथ रिचेस्ट भी हो। बापदादा स्थापना में भी बच्चों को स्मृति दिलाते थे और फ़लक से अखबारों में भी डलवाया कि ''ओम मण्डली रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड''। यह स्थापना के समय की आप सबकी महिमा है। एक दिन में कितना भी बड़े ते बड़ा मल्टी-मल्टी मिल्युनर हो लेकिन आप जैसा रिचेस्ट हो नहीं सकता। इतना रिचेस्ट बनने का साधन क्या है? बहुत छोटा सा साधन है। लोग रिचेस्ट बनने के लिए कितनी मेहनत करते हैं और आप कितना सहज मालामाल बनते जाते हो।

जानते हो ना साधन! सिर्फ छोटी सी बिन्दी लगानी है बस। बिन्दी लगाई, कमाई हुई। आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा फुलस्टाप लगाना, वह भी बिन्दी है। तो बिन्दी आत्मा को याद किया, कमाई बढ़ गई। वैसे लौकिक में भी देखो, बिन्दी से ही संख्या बढ़ती है। एक के आगे बिन्दी लगाओ तो क्या हो जाता? DD, दो बिन्दी लगाओ, तीन बिन्दी लगाओ, चार बिन्दी लगाओ, बढ़ता जाता है। तो आपका साधन कितना सहज है! ''मैं आत्मा हूँ'' - यह स्मृति की बिन्दी लगाना अर्थात् खजाना जमा होना। फिर ''बाप'' बिन्दी लगाओ और खजाना जमा। कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में ड्रामा का फुलस्टाप लगाओ, बीती को फुल-स्टाप लगाया और खजाना बढ़ जाता। तो बताओ सारे दिन में कितने बार बिन्दी लगाते हो? और बिन्दी लगाना कितना सहज है! मुश्किल है क्या? बिन्दी खिसक जाती है क्या?

बापदादा ने कमाई का साधन सिर्फ यही सिखाया है कि बिन्दी लगाते जाओ, तो सभी को बिन्दी लगाने आती है? अगर आती है तो एक हाथ की ताली बजाओ। पक्की है ना! या कभी खिसक जाती है, कभी लग जाती है? सबसे सहज बिन्दी लगाना है। कोई इस आंखों से ब्लाइन्ड भी हो, वह भी अगर कागज पर पेन्सिल रखेगा तो बिन्दी लग जाती है और आप तो त्रिनेत्री हो, इसलिए इन तीन बिन्दियों को सदा यूज़ करो। क्वेश्चन मार्क कितना टेढ़ा है, लिखकर देखो, टेढ़ा है ना? और बिन्दी कितनी सहज है। इसलिए बापदादा भिन्न-भिन्न रूप से बच्चों को समान बनाने की विधि सुनाते रहते हैं। **विधि है ही बिन्दी।** और कोई विधि नहीं है। अगर विदेही बनते हो तो भी विधि है - बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है। इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा है - अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रूहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दियों का तिलक मस्तक पर लगाओ, वह लाल बिन्दियों का तिलक लगाने नहीं शुरू करना लेकिन स्मृति का तिलक लगाओ। और चेक करो - किसी भी कारण से यह स्मृति का तिलक मिटे नहीं। अवि-नाशी, अमिट तिलक है?

बापदादा बच्चों का प्यार भी देखते हैं, कितने प्यार से भाग-भाग कर मिलन मनाने पहुंचते हैं और फिर आज हाल में भी मिलन मनाने के लिए कितनी मेहनत से, कितने प्यार से नींद, प्यास को भूलकर पहले नम्बर में नजदीक बैठने का पुरुषार्थ करते हैं। बापदादा सब देखते हैं, क्या-क्या करते हैं वह सारा ड्रामा देखते हैं। बापदादा बच्चों के प्यार पर न्योछावर भी होते हैं और यह भी बच्चों को कहते हैं जैसे साकार में मिलने के लिए दौड़-दौड़ कर आते हो ऐसे ही बाप समान बनने के लिए भी तीव्र पुरुषार्थ करो, इसमें सोचते हो ना कि सबसे आगे ते आगे नम्बर मिले। सबको तो मिलता नहीं है, यहाँ साकारी दुनिया है ना! तो साकारी दुनिया के नियम रखने ही पड़ते हैं। बापदादा उस समय सोचते हैं कि सब आगे-आगे बैठ जाएं लेकिन यह हो सकता है? हो भी रहा है, कैसे? पीछे वालों को बापदादा सदा नयनों में समाया हुआ देखते हैं। तो सबसे समीप हैं नयन। तो पीछे नहीं बैठे हो लेकिन बापदादा के नयनों में बैठे हो। नूरे रत्न हो। पीछे वालों ने सुना? दूर नहीं हो, समीप हो। शरीर से पीछे बैठे हैं लेकिन आत्मा सबसे समीप है। और बापदादा तो सबसे ज्यादा पीछे वालों को ही देखते हैं। देखो नजदीक वालों को इन स्थूल नयनों से देखने का चांस है और पीछे वालों को इन नयनों से नजदीक देखने का चांस नहीं है इसलिए बापदादा नयनों में समा लेता है।

बापदादा मुस्कराते रहते हैं, दो बजता है और लाइन शुरू हो जाती है। बापदादा समझते हैं कि बच्चे खड़े-खड़े थक भी जाते हैं लेकिन बापदादा सभी बच्चों को प्यार का मसाज़ कर लेते हैं। टांगों में मसाज़ हो जाता है। बापदादा का मसाज़ देखा है ना - बहुत न्यारा और प्यारा है। तो आज सभी इस सीज़न का लास्ट चांस लेने के लिए चारों ओर से भाग-भागकर पहुंच गये हैं। अच्छा है। बाप से मिलन का उमंग-उत्साह सदा आगे बढ़ाता है। लेकिन बापदादा तो बच्चों को एक सेकण्ड भी नहीं भूलता है। बाप एक है और बच्चे अनेक परन्तु अनेक बच्चों को भी एक सेकण्ड भी नहीं भूलते क्योंकि सिकीलधे हो। देखो कहाँ-कहाँ देश-विदेश के कोने-कोने से बाप ने ही आपको ढूंढा। आप बाप को ढूंढ सके?

भटकते रहे लेकिन मिल नहीं सके और बाप ने भिन्न-भिन्न देश, गांव, कस्बे जहाँ-जहाँ भी बाप के बच्चे हैं, वहाँ से ढूंढ लिया। अपना बना लिया। गीत गाते हो ना - मैं बाबा का और बाबा मेरा। न जाति देखी, न देश देखा, न रंग देखा, सबके मस्तक पर एक ही रूहानी रंग देखा - ज्योति बिन्दु। डबल फारेनर्स क्या समझते हैं? बाप ने जाति देखी? काला है, गोरा है, श्याम है, सुन्दर है? कुछ नहीं देखा। मेरा है - यह देखा। तो बताओ बाप का प्यार है या आपका प्यार है? किसका है? (दोनों का है) बच्चे भी उत्तर देने में होशियार हैं, कहते हैं बाबा आप ही कहते हो कि प्यार से प्यार खींचता है, तो आपका प्यार है तो हमारा है तब तो खींचता है। बच्चे भी होशियार हैं और बाप को खुशी है कि इतना हिम्मत, उमंग-उत्साह रखने वाले बच्चे हैं।

बापदादा के पास ΠϿ दिन के चार्ट का बहुत बच्चों का रिजल्ट आया है। एक बात तो बापदादा ने चारों ओर की रिजल्ट में देखी कि मैजॉरिटी बच्चों का अटेन्शन रहा है। परसेन्टेज़ जितनी स्वयं भी चाहते हैं उतनी नहीं है, परन्तु अटेन्शन है और दिल ही दिल में जो तीव्र पुरुषार्थी बच्चे हैं वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लक्ष्य से आगे बढ़ भी रहे हैं। और आगे बढ़ते-बढ़ते मंजिल पर पहुंच ही जायेंगे। मैनारिटी अभी भी कभी अलबेलेपन में और कभी आलस्य के वश अटेन्शन भी कम दे रहे हैं। उन्हों का एक विशेष स्लोगन है - हो ही जायेंगे, जायेंगे.... जाना है नहीं, जायेंगे। हो ही जायेगा - यह है अलबेलापन। जाना ही है, यह है तीव्र पुरुषार्थ। बापदादा वायदे बहुत सुनते हैं, बार-बार वायदे बहुत अच्छे करते हैं। बच्चे वायदे इतनी अच्छी हिम्मत से करते हैं जो उस समय बापदादा को भी बच्चे दिलखुश मिठाई खिला देते हैं। बाप भी खा लेते हैं। लेकिन वायदा अर्थात् पुरुषार्थ में ज्यादा से ज्यादा फायदा। अगर फायदा नहीं तो वायदा समर्थ नहीं है। तो वायदा भले करो फिर भी दिलखुश मिठाई तो खिलाते हो ना! साथ-साथ तीव्र पुरुषार्थ की लगन को अग्नि रूप में लाओ। ज्वालामुखी बनो। समय प्रमाण रहे हुए जो भी मन के, सम्बन्ध-सम्पर्क के हिसाब-किताब हैं उसको ज्वाला स्वरूप से भस्म करो। लगन है, इसमें बापदादा भी पास करते हैं

लेकिन अभी लगन को अग्नि रूप में लाओ।

विश्व में एक तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि होगी, दूसरे तरफ आप बच्चों का पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि ज्वाला रूप में आवश्यक है। यह ज्वाला रूप इस भ्रष्टाचार, अत्याचार के अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी। आपकी लगन ज्वाला रूप की हो अर्थात् पावरफुल योग हो, तो यह याद की अग्नि, उस अग्नि को समाप्त करेगी और दूसरे तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करायेगी। बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्जवलित करायेगी। एक तरफ भस्म करेगी दूसरे तरफ शीतल भी करेगी। बेहद के वैराग्य की लहर फैलायेगी। बच्चे कहते हैं - मेरा योग तो है, सिवाए बाबा के और कोई नहीं, यह बहुत अच्छा है। परन्तु **समय अनुसार अभी ज्वाला रूप बनो।** जो यादगार में शक्तियों का शक्ति रूप, महाशक्ति रूप, सर्व शस्त्रधारी दिखाया है, अभी वह महा शक्ति रूप प्रत्यक्ष करो। चाहे पाण्डव हैं, चाहे शक्तियां हैं, सभी सागर से निकली हुई ज्ञान नदियां हो, सागर नहीं हो, नदी हो। ज्ञान गंगाये हो। तो ज्ञान गंगायें अब आत्माओं को अपने ज्ञान की शीतलता द्वारा पापों की आग से मुक्त करो। यह है वर्तमान समय का ब्राह्मणों का कार्य।

सभी बच्चे पूछते हैं कि इस साल क्या सेवा करें ? तो बापदादा पहली सेवा यही बताते हैं कि अभी समय अनुसार सभी बच्चे वानप्रस्थ अवस्था में हैं, तो वानप्रस्थी अपने समय, साधन सभी बच्चों को देकर स्वयं वानप्रस्थ होते हैं। तो आप सभी भी अपने समय का खजाना, श्रेष्ठ संकल्प का खजाना अभी औरों के प्रति लगाओ। अपने प्रति समय, संकल्प कम लगाओ। औरों के प्रति लगाने से स्वयं भी उस सेवा का प्रत्यक्षफल खाने के निमित्त बन जायेंगे। मन्सा सेवा, वाचा सेवा और सबसे ज्यादा - चाहे ब्राह्मण, चाहे और जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं उन्हों को कुछ न कुछ मास्टर दाता बनके देते जाओ। नि:स्वार्थ बन खुशी दो, शान्ति दो, आनंद की अनुभूति कराओ, प्रेम की अनुभूति कराओ। देना है और देना माना स्वत: ही लेना। जो भी जिस समय, जिस रूप में सम्बन्ध-

सम्पर्क में आये कुछ लेकर जाये। आप मास्टर दाता के पास आकर खाली नहीं जाये। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - चलते-फिरते भी अगर कोई भी बच्चा सामने आया तो कुछ न कुछ अनुभूति के बिना खाली नहीं जाता। यह चेक करो जो भी आया, मिला, कुछ दिया वा खाली गया? खजाने से जो भरपूर होते हैं वह देने के बिना रह नहीं सकते। अखुट, अखण्ड दाता बनो। कोई मांगे, नहीं। दाता कभी यह नहीं देखता कि यह मांगे तो दें। अखुट महादानी, महादाता स्वयं ही देता है। तो पहली सेवा इस वर्ष - महान दाता की करो। आप दाता द्वारा मिला हुआ देते हो। ब्राह्मण कोई भिखारी नहीं हैं लेकिन सहयोगी हैं। तो आपस में ब्राह्मणों को एक दो में दान नहीं देना है, सहयोग देना है। यह है पहला नम्बर सेवा। और साथ-साथ बापदादा ने विदेश के बच्चों की खुशखबरी सुनी तो बापदादा ने देखा कि जो इस सृष्टि के आवाज फैलाने के निमित्त बापदादा ने जो माइक नाम दिया है तो विदेश के बच्चों ने आपस में इस कार्य को किया है और जब प्लैन बना है तो प्रैक्टिकल होना ही है। लेकिन भारत में भी जो ८२ ज़ोन हैं, हर एक ज़ोन से कम से कम एक ऐसा विशेष निमित्त सेवाधारी बनें, जिसको माइक कहो या कुछ भी कहो, आवाज फैलाने वाले कोई निमित्त बनाओ, यह बापदादा ने कम से कम कहा है लेकिन अगर बड़े-बड़े देश में ऐसे निमित्त बनने वाले हैं तो सिर्फ ज़ोन वाले नहीं लेकिन बड़े देशों से भी ऐसे तैयार कर प्रोग्राम बनाना है। बापदादा ने विदेश के बच्चों को दिल ही दिल में मुबारक दी, अभी मुख से भी दे रहे हैं कि प्रैक्टिकल में लाने का प्लैन पहले बापदादा के सामने लाया। वैसे बापदादा जानते हैं कि भारत में और ही सहज है लेकिन अभी कुछ क्वालिटी की सेवा कर सहयोगी समीप लाओ। बहुत सहयोगी हैं लेकिन संगठन में उन्हों को और समीप लाओ।

साथ-साथ बापदादा का यह संकल्प है कि हर एक बड़े शहरों की जो एरिया होती है, वह बहुत बड़ी होती है, हर एक सेन्टर को अपनी एरिया से ऐसे विशेष तैयार करना आवश्यक है क्योंकि समय समीप आ रहा है और लास्ट समय आप सभी को स्वयं अपना परिचय नहीं देना है, आपकी तरफ से वह

स्पीच करे, वह स्पीकर हो और आप सर्चलाइट हो। तो हर एक को अपनी एरिया से ऐसा माइक निकालना है। हर एक एरिया में कोई न कोई विशेष बिजनेसमैन कहो वा ऐसा भिन्न-भिन्न वर्ग का कोई मुख्य होता ही है। अपने-अपने सेन्टर पर अपनी एरिया की विशेष आत्माओं को तैयार करो। वह सुनावे कि यह ज्ञान क्या है। आप अभी लास्ट समय साक्षात्कार मूर्त, फरिश्ता बन दृष्टि दो और वह स्पीकर बने। स्पीकर बनना तो सभी सीख गये हैं, छोटी-छोटी टीचर्स भी स्पीच बहुत अच्छा करती हैं। स्पीच सभी करते हो। अभी स्पीकर औरों को तैयार करो। आपकी दृष्टि वा दो वचन सभी को ऐसी भासना दें जैसे कई समय की स्पीच कर ली है। ऐसा समय आना ही है।

अभी समय भी फास्ट गति ले रहा है, सिर्फ समय बार-बार फास्ट होकर आप लोगों को ऐसे पीठ करके (मुड़करके) देखता है कि हमारे मालिक तेज रफतार से आ रहे हैं वा समय फास्ट जा रहा है? मालिक तो आप हो ना? तो आपको बार-बार देखता है, फास्ट आ रहे हैं! इसलिए इस वर्ष क्वालिटी की सेवा में विशेष अटेन्शन दो। हर एक सेन्टर की रिजल्ट आनी चाहिए कि हमारे सेन्टर पर किस वर्ग के और कितनी क्वालिटी की सेवा हो रही है। क्वान्टिटी तो स्वत: ही बढ़ती जायेगी। अभी भी देखो यह हाल भी छोटा हो गया है ना। क्वान्टिटी तो बढ़नी ही है, अभी ऐसे प्रैक्टिकल ग्रुप तैयार करो।

साथ-साथ ब्राह्मण आत्माओं में और भी समीप लाने के लिए, हर एक तरफ वा मधुबन में चारों ओर ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने के लिए, चाहे जिसको भट्ठी कहते हो वह करो, चाहे आपस में संगठन में रूहरिहान करके ज्वाला स्वरूप का अनुभव कराओ और आगे बढ़ाओ। जब इस सेवा में लग जायेंगे तो जो छोटी-छोटी बातें हैं ना - जिसमें समय लगता है, मेहनत लगती है, दिलशिकस्त बनते हैं वह सब ऐसे लगेगा जैसे ज्वालामुखी हाइएस्ट स्टेज और उसके आगे यह समय देना, मेहनत करना, एक गुड़ियों का खेल अनुभव होगा। स्वत: ही सहज ही सेफ हो जायेंगे। बापदादा ने कहा ना कि सबसे ज्यादा बापदादा को रहम तब पड़ता है जब देखते हैं कि मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे

और छोटी-छोटी बातों के लिए मेहनत करते हैं। **मोहब्बत ज्वालामुखी रूप की कम है तब मेहनत लगती है।** तो अभी मेहनत से मुक्त बनो, अलबेले नहीं बनना लेकिन मेहनत से मुक्त होना। ऐसे नहीं सोचना मेहनत तो करनी नहीं है तो आराम से सो जाओ। लेकिन मोहब्बत से मेहनत खत्म करो। अलबेलेपन से नहीं। समझा - क्या करना है?

अभी बापदादा को आना तो है ही। पूछते हैं आगे क्या होगा? बापदादा आयेंगे या नहीं आयेंगे? बापदादा ना तो करते नहीं हैं, हाँ जी, हाँ जी करते हैं। बच्चे कहते हैं हजूर, बाप कहते हैं जी हाजिर। तो समझा क्या करना है, क्या नहीं करना है। मेहनत मोहब्बत से कट करो। **अभी मेहनत मुक्त वर्ष मनाओ - मोहब्बत से, आलस्य से नहीं।** यह पक्का याद रखना - आलस्य नहीं।

ठीक है - सब संकल्प पूरे हुए? कोई रह गया? जनक से (दादी जानकी से) पूछते हैं - कुछ रहा? दादी तो मुस्करा रही है। खेल पूरा हो गया? यह आपरेशन भी क्या है? खेल में खेल है। खेल अच्छा रहा ना!

अच्छा - सभी विशेष टीचर्स भी बैठी हैं। एक पंथ दो कार्य किया है, टीचर्स बड़ी होशियार हैं। (मीटिंग भी है और बापदादा से मिलन भी हुआ)

अच्छा - अनेक कल्प में तो आये हो लेकिन जो इस कल्प में पहली बार आये हैं वह हाथ उठाओ। जो भी पहली बार आये हैं चाहे आगे बैठे हैं, चाहे पीछे बैठे हैं, उन्हों को बापदादा विशेष स्नेह की दृष्टि भी दे रहे हैं और पदम गुणा मुबारक भी दे रहे हैं। बहुत अच्छे समय पर आ गये। आप देखो अभी भी इतनी संख्या है, आगे चलकर इतना भी नहीं मिल सकेगा। बैठना भी मिले, यह भी मुश्किल होगा। इसीलिए अभी आ गये, बहुत अच्छा किया। मुबारक हो। अच्छा - गर्मी लग रही है सभी को। (रंग-बिरंगी हाथ के पंखे सबके पास हैं) देखो भक्ति की यात्राओं से तो बहुत सुखी बैठे हो, मिट्टी में नहीं बैठे हो, दरी और चादर पर ही बैठे हो। (ड्रिल)

सेकण्ड में बिन्दी स्वरूप बन मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बार-बार करो। स्टॉप कहा और सेकण्ड में व्यर्थ देह-भान से मन-बुद्धि एकाग्र हो

जाए। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर सारे दिन में यूज़ करके देखो। ऐसे नहीं आर्डर करो - कन्ट्रोल और दो मिनट के बाद कन्ट्रोल हो, ३४ मिनट के बाद कन्ट्रोल हो, इसलिए बीच-बीच में कन्ट्रोलिंग पावर को यूज़ करके देखते जाओ। सेकण्ड में होता है, मिनट में होता है, ज्यादा मिनट में होता है, यह सब चेक करते जाओ।

अभी सभी को तीन मास का चार्ट और पक्का करना है। सर्टीफिकेट लेना है। पहले स्वयं, स्वयं को सर्टीफिकेट देना फिर बापदादा देंगे। अच्छा।

चारों ओर के परमात्म पालना के अधिकारी आत्माओं को, परमात्म पढ़ाई के अधिकारी श्रेष्ठ आत्माओं को, परमात्म प्राप्तियों से सम्पन्न आत्माओं को, सदा बिन्दी की विधि से तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा मेहनत से मुक्त रहने वाले मोहब्बत में समाये हुए बच्चों को, ज्वाला स्वरूप विशेष आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादी जी से :- जो भी कुछ ड्रामा होता है - सभी का स्नेह बढ़ता है। निमित्त आत्माओं में सभी के जैसे प्राण हैं। इसलिए आपरेशन तो निमित्त है लेकिन सबके स्नेह और दुआओं का खजाना बहुत जमा हो गया। देखो, ड्रामा में मुरलियां भी कितनी समय प्रमाण रिपीट हुई, बापदादा ने सभी को सकाश देने और लेने का पाठ पढ़ा लिया। समय अनुसार मुरलियां भी वही चली। बापदादा का तो प्यार है ही लेकिन हर एक बच्चों का भी दिल से प्यार है। परमात्म प्यार और ब्राह्मण आत्माओं का प्यार यह उड़ा देता है क्योंकि आपके साकार में थोड़ा समय भी मिलने का सभी को महत्व है। इतना समय मिलने के बजाए फरिश्ते मुआफ़िक यह मिलन - यह भी ड्रामा में पार्ट अच्छा रहा। अभी अपने को ब्रह्मा बाप के समान फरिश्ता रूप से मिलना, चलना और उड़ना - यही पार्ट चल रहा है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा एकदम न्यारा, कर्मातीत अनुभव रहा। ऐसे आप सभी महारथियों को अभी ऐसे ब्रह्मा समान कर्मातीत अवस्था के समीप आना ही है। फालो फादर। एक सेकण्ड की आपकी दृष्टि कई घण्टों की प्राप्ति का अनुभव करायेगी। अभी बोलने की, बैठने की भी मेहनत कम होती जायेगी। एकदम ब्रह्मा बाप ही दिखाई देगा। यह दादियां नहीं हैं, ब्रह्मा बाप है। अव्यक्त ब्रह्मा,

अव्यक्त रूप से पालना दे रहे हैं और आप द्वारा साकार ब्रह्मा बाप की अनुभूति बढ़ती जायेगी। आपको दादी नहीं देखेंगे, ब्रह्मा देखेंगे। होता है ना ऐसे? अच्छा। कीमती रत्न हो। कीमती रत्नों की सम्भाल की जाती है।

आप निमित्त बनी हुई आत्माओं के उमंग-उत्साह से चारों ओर की आत्मायें उमंग-उत्साह से चल रही हैं क्योंकि एक दो के सहयोगी हो। जैसे बाप कहते हैं ना - हाजिर हजूर। वैसे एक दो में हाज़िर - हाज़िर इस स्नेह और संगठन से शक्ति औरों को मिल रही है और दुआयें आपको मिल रही हैं। दोनों को प्राप्ति है। सबसे ज्यादा दुआओं का खजाना किसका जमा होता है? आपका। इसमें पहले मैं कहने में अभिमान नहीं है, स्वमान है। कुछ दो तो दुआयें मिलें।

अभी भी वैराग्य वृत्ति नहीं आई है, इसमें बापदादा भी देख रहे हैं, कब आरम्भ होता है। अभी तो साधन यूज़ करने के अनुभवी ज्यादा हैं। बापदादा जानते हैं कि जब तक ब्राह्मणों में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज नहीं हुई है तो विश्व में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती। सारे विश्व में वैराग्य वृत्ति ही कुछ पापों से मुक्त करेगी। अभी शक्ति सेना को रहम आना चाहिए। अभी रहम कम है, सेवा है। लेकिन रहमदिल, वह अभी ज्यादा इमर्ज चाहिए। पाप कर्म का बिचारे बोझ उठाते जाते हैं। बोझ से झुकते जा रहे हैं। तो रहम आना चाहिए, तरस आना चाहिए। अच्छा। ओम् शान्ति।

समय की पुकार - दाता बनो

आज सर्व श्रेष्ठ भाग्य विधाता, सर्व शक्तियों के दाता बापदादा चारों ओर के सर्व बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। चाहे मधुबन में सम्मुख में हैं, चाहे देश विदेश में याद में सुन रहे हैं, देख रहे हैं, जहाँ भी बैठे हैं लेकिन दिल से सम्मुख हैं। उन सब बच्चों को देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं। आप सभी भी हर्षित हो रहे हो ना! बच्चे भी हर्षित और बापदादा भी हर्षित। और यही दिल का सदा का सच्चा हर्ष सारी दुनिया के दु:खों को दूर करने वाला है। यह दिल का हर्ष आत्माओं को बाप का अनुभव कराने वाला है क्योंकि बाप भी सदा सर्व आत्माओं के प्रति सेवाधारी है और आप सब बच्चे बाप के साथ सेवा-साथी हैं। साथी हैं ना! बाप के साथी और विश्व के दु:खों को परिवर्तन कर सदा खुश रहने का साधन देने की सेवा में सदा उपस्थित रहते हो। सदा सेवाधारी हो। सेवा सिर्फ चार घण्टा, छ: घण्टा करने वाले नहीं हो। हर सेकण्ड सेवा की स्टेज पर पार्ट बजाने वाले परमात्म-साथी हो। याद निरन्तर है, ऐसे ही सेवा भी निरन्तर है। अपने को निरन्तर सेवाधारी अनुभव करते हो? या ८-१० घण्टे के सेवाधारी हैं? यह ब्राह्मण जन्म ही याद और सेवा के लिए है। और कुछ करना है क्या? यही है ना! हर श्वांस, हर सेकण्ड याद और सेवा साथ-साथ है या सेवा के घण्टे अलग हैं और याद के घण्टे अलग हैं? नहीं है ना! अच्छा, बैलेन्स है? अगर १०० परसेन्ट सेवा है तो १०० परसेन्ट ही याद है? दोनों का बैलेन्स है? अन्तर पड़ जाता है ना? कर्म योगी का अर्थ ही है - कर्म और याद, सेवा और याद - दोनों का बैलेन्स समान, समान होना चाहिए। ऐसे नहीं कोई समय याद ज़्यादा है और सेवा कम, या सेवा ज़्यादा है याद कम। जैसे आत्मा और शरीर जब तक स्टेज पर है तो साथ-साथ है ना। अलग हो सकते हैं? ऐसे याद और सेवा साथ-साथ रहे। याद अर्थात् बाप समान, स्व के स्वमान की भी याद। जब बाप की याद रहती है तो स्वत: ही स्वमान की भी याद रहती है। अगर स्वमान में नहीं रहते तो याद भी पावरफुल नहीं रहती।

स्वमान अर्थात् बाप समान। सम्पूर्ण स्वमान है ही बाप-समान। और ऐसे याद में रहने वाले बच्चे सदा ही दाता होंगे, लेवता नहीं। देवता माना देने वाला। तो आज बापदादा सभी बच्चों के दातापन की स्टेज चेक कर रहे थे कि कहाँ तक दाता के बच्चे दाता बने हैं? जैसे बाप कभी भी लेने का संकल्प नहीं कर सकता, देने का करता है। अगर कहते भी हैं, सब कुछ पुराना दे दो तो भी पुराने के बदले नया देता है। लेना माना बाप का देना। तो वर्तमान समय बापदादा को बच्चों की एक टॉपिक बहुत अच्छी लगी। कौन सी टॉपिक? विदेश की टॉपिक है। कौन सी? (काल आफ टाइम।)

तो बापदादा देख रहे थे कि बच्चों के लिए समय की क्या पुकार है! आप देखते हो विश्व के लिए, सेवा के लिए, बापदादा सेवा के साथी तो हैं ही। लेकिन बापदादा देखते हैं कि बच्चों के लिए अभी समय की क्या पुकार है? आप भी समझते हो ना कि समय की क्या पुकार है? अपने लिए सोचो। सेवा प्रति तो भाषण किये, कर रहे हैं ना! लेकिन अपने लिए, अपने से ही पूछो कि हमारे लिए समय की क्या पुकार है? वर्तमान समय की क्या पुकार है? तो बापदादा देख रहे थे कि अभी के समय अनुसार हर समय, हर बच्चे को 'दातापन' की स्मृति और बढ़ानी है। चाहे स्व-उन्नति के प्रति दाता-पन का भाव, चाहे सर्व के प्रति स्नेह इमर्ज रूप में दिखाई दे। कोई कैसा भी हो, क्या भी हो, मुझे देना है। तो दाता सदा ही बेहद की वृत्ति वाला होगा, हद नहीं और दाता सदा सम्पन्न, भरपूर होगा। दाता सदा ही क्षमा का मास्टर सागर होगा। इस कारण जो हद के अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार वह इमर्ज नहीं होंगे, मर्ज होंगे। मुझे देना है। कोई दे, नहीं दे लेकिन मुझे दाता बनना है। किसी भी संस्कार के वश परवश आत्मा हो, उस आत्मा को मुझे सहयोग देना है। तो किसी का भी हद का संस्कार आपको प्रभावित नहीं करेगा। कोई मान दे, कोई नहीं दे, वह नहीं दे लेकिन मुझे देना है। ऐसे दातापन अभी इमर्ज चाहिए। मन में भावना तो है लेकिन..... लेकिन नहीं आवे। मुझे करना ही है। कोई ऐसी चलन वा बोल जो आपके काम का नहीं

है, अच्छा नहीं लगता है, उसे लो ही नहीं। बुरी चीज़ ली जाती है क्या? मन में धारण करना अर्थात् लेना। दिमाग तक भी नहीं। दिमाग में भी बात आ गई ना, वह भी नहीं। जब है ही बुरी चीज, अच्छी है नहीं तो दिमाग और दिल में लो नहीं यानी धारण नहीं करो। और ही लेने के बजाए शुभ भावना, शुभ कामना, दाता बन दो। लो नहीं; क्योंकि अभी समय के अनुसार अगर दिल और दिमाग खाली नहीं होगा तो निरन्तर सेवाधारी नहीं बन सकेंगे। दिल या दिमाग जब किसी भी बातों में बिजी हो गया तो सेवा क्या करेंगे? फिर जैसे लौकिक में कोई ES घण्टा, कोई DD घण्टा वर्क करते हैं, ऐसे यहाँ भी हो जायेगा। ES घण्टे के सेवाधारी, ಒ घण्टे के सेवाधारी। निरन्तर सेवाधारी नहीं बन सकेंगे। चाहे मन्सा सेवा करो, चाहे वाणी से, चाहे कर्म अर्थात् सम्बन्ध, सम्पर्क से। हर सेकण्ड दाता अर्थात् सेवाधारी। दिमाग को खाली रखने से बाप की सेवा के साथी बन सकेंगे। दिल को सदा साफ रखने से निरन्तर बाप की सेवा के साथी बन सकते हैं। आप सबका वायदा क्या है? साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। वायदा है ना? या आप आगे रहो हम पीछे-पीछे आयेंगे? नहीं ना? साथ का वायदा है ना? तो बाप सेवा के बिना रहता है? याद के बिना भी नहीं रहता। जितना बाप याद में रहता उतना आप मेहनत से रहते हैं। रहते हैं लेकिन मेहनत से, अटेन्शन से। और बाप के लिए है ही क्या? परम आत्मा के लिए हैं ही आत्मायें। नम्बरवार आत्मायें तो हैं ही। सिवाए बच्चों की याद के बाप रह ही नहीं सकता। बाप बच्चों की याद के बिना रह सकता है? आप रह सकते हो? कभी-कभी नटखट हो जाते हैं।

तो क्या सुना? **समय की पुकार है - दाता बनो।** आवश्यकता है बहुत। सारे विश्व के आत्माओं की पुकार है - हे हमारे इष्ट......इष्ट तो हो ना! किसी न किसी रूप में सर्व आत्माओं के लिए इष्ट हो। तो अभी सभी आत्माओं की पुकार है - हे इष्ट देव-देवियाँ परिवर्तन करो। यह पुकार सुनने में आती है? पाण्डवों को यह पुकार सुनने में आती है? सुनकर फिर क्या करते हो? सुनने में आती है तो सैलवेशन देते हो या सोचते हो, हाँ करेंगे? पुकार सुनने

में आती है? तो समय की पुकार सुनाते हो और आत्माओं की पुकार सिर्फ सुनते हो? तो इष्ट देव-देवियों अभी अपने दाता-पन का रूप इमर्ज करो। देना है। कोई भी आत्मा वंचित नहीं रह जाए। नहीं तो उल्हनों की मालायें पड़ेंगी। उल्हनें तो देंगे ना! तो उल्हनों की माला पहनने वाले इष्ट हो या फूलों की माला पहनने वाले इष्ट हो? कौन से इष्ट हो? पूज्य हो ना! ऐसे नहीं समझना कि हम तो पीछे आने वाले हैं। जो बड़े-बड़े हैं वही दाता बनेंगे, हम कहाँ बनेंगे। लेकिन नहीं, सबको दाता बनना है।

जो फ़र्स्ट टाइम मधुबन में आने वाले हैं वह हाथ उठाओ। जो फ़र्स्ट टाइम आये हैं वह दाता बन सकते हैं या दूसरे तीसरे साल में दाता बनेंगे? एक साल वाले दाता बन सकते हैं? (हाँ जी) बहुत अच्छे होशियार हैं। बापदादा हिम्मत के ऊपर सदा खुश होते हैं। चाहे एक मास वाला भी है, यह तो एक साल या ६ मास हुआ होगा लेकिन बापदादा जानते हैं कि एक साल वाले हों या एक मास वाले हों, एक मास में भी अपने को ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी कहलाते हैं ना! तो ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के वर्से के अधिकारी बन गये। ब्रह्मा को बाप माना तब तो कुमार-कुमारी बने ना? तो ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी, बाप ब्रह्मा, शिव बाप के वर्से के अधिकारी बने ना! या एक मास वालों को वर्सा नहीं मिलेगा? एक मास वालों को वर्सा मिलता है? जब वर्सा मिल गया तो देने के लिए दाता तो होंगे ना! जो चीज़ मिलती है वह देना तो शुरू करना ही चाहिए ना।

अगर बाप समझकर कनेक्शन जोड़ा तो एक दिन में भी वर्सा ले सकता है। ऐसे नहीं कि हाँ अच्छा है, कोई शक्ति है, समझ में तो आता है...यह नहीं। वर्से के अधिकारी बच्चे होते हैं। समझने वाले, देखने वाले नहीं। अगर एक दिन में भी दिल से बाप माना तो वर्से का अधिकारी बन सकता है। आप लोग तो सभी अधिकारी हैं ना? आप लोग तो ब्रहमाकुमार-कुमारियाँ हैं ना या बन रहे हैं? बन गये हैं या बनने आये हैं? कोई आपको बदल नहीं सकता? ब्रह्माकुमार-कुमारी के बजाए सिर्फ कुमार-कुमारी बन जाओ,

नहीं हो सकता? ब्रह्माकुमार और कुमारी बनने में फायदे कितने हैं? एक जन्म के भी फायदे नहीं, अनेक जन्मों के फायदे। पुरुषार्थ आधा जन्म, चौथाई जन्म का और प्रालब्ध है अनेक जन्मों की। फायदा ही फायदा है ना!

बापदादा समय के अनुसार वर्तमान समय विशेष एक बात अटेन्शन में दिलाते हैं क्योंकि बापदादा बच्चों की रिज़ल्ट तो देखते रहते हैं ना! तो रिजल्ट में देखा गया, हिम्मत बहुत अच्छी है। लक्ष्य भी बहुत अच्छा है। लक्ष्य अनुसार अभी तक लक्ष्य और लक्षण उसमें अन्तर है। लक्ष्य सबका नम्बरवन है, कोई से भी बापदादा पूछेंगे आपका लक्ष्य ३१ जन्म का राज्य भाग्य लेना है, सूर्यवंशी बनने का है वा चन्द्रवंशी? तो सब किसमें हाथ उठायेंगे? सूर्यवंशी में ना! कोई है जो चन्द्रवंशी बनना चाहता है? कोई राम बनने वाला है? कोई नहीं। एक तो बन जाओ। कोई तो राम बनना ही है ना। (एक ने हाथ उठाया) अच्छा है, नहीं तो राम की सीट खाली रह जायेगी। तो लक्ष्य सभी का बहुत अच्छा है, लक्ष्य और लक्षण की समानता - उस पर अटेन्शन देना जरूरी है। उसका कारण क्या है? जो आज सुनाया कभी कभी लेवता बन जाते हैं। यह हो, यह करे, यह मदद दे, यह बदले तो मैं बदलूं। यह बात ठीक हो तो मैं ठीक हूँ। यह लेवता बनना है। दातापन नहीं है। कोई दे या न दे, बाप ने तो सब कुछ दे दिया है। क्या बाप ने किसको थोड़ा दिया है किसको ज़्यादा दिया है? एक ही कोर्स है ना! चाहे ६D साल वाले हो, चाहे एक मास वाले हो, कोर्स तो एक ही है या ६D साल वाले का कोर्स अलग है एक मास वालों का अलग है? उन्हों ने भी वही कोर्स किया और अभी भी वही कोर्स है। वही ज्ञान है, वही प्यार है, वही सर्व शक्तियां हैं। सब एक जैसा है। उसको ८६ शक्तियां, उसको ५ शक्तियाँ नहीं है। सबको एक जैसा वर्सा है। तो जब बाप ने सभी को भरपूर कर दिया तो फिर भरपूर आत्मा दाता बनती है, लेने वाली नहीं। मुझे देना है। कोई दे न दे, लेने के इच्छुक नहीं, देने के इच्छुक। और जितना देंगे, दाता बनेंगे उतना खज़ाना बढ़ता जायेगा। मानों किसको आपने स्वमान दिया, तो दूसरे को देना अर्थात् अपना स्वमान बढ़ाना। देना नहीं होता

है लेकिन देना अर्थात् लेना। लो नहीं, दो तो लेना हो ही जायेगा। तो समझा - समय की पुकार क्या है? दाता बनो। एक अक्षर याद रखना। कोई भी बात हो जाए ''दाता'' शब्द सदा याद रखना। इच्छा-मात्रम्-अविद्या। न सूक्ष्म लेने की इच्छा, न स्थूल लेने की इच्छा। **दाता का अर्थ ही है इच्छा-मात्रम्-अविद्या।** सम्पन्न। कोई अप्राप्ति अनुभव नहीं होगी जिसको लेने की इच्छा हो। सर्व प्राप्ति सम्पन्न। तो लक्ष्य क्या है? सम्पन्न बनने का है ना? या जितना मिले उतना अच्छा? सम्पन्न बनना ही सम्पूर्ण बनना है।

आज विदेशियों को खास चांस मिला है। अच्छा है। पहला चांस विदेशियों ने लिया है, लाडले हो गये ना। सभी को मना किया है और विदेशियों को निमन्त्रण दिया है। बापदादा को भी याद तो सभी बच्चे हैं फिर भी डबल विदेशियों को देख, उन्हों की हिम्मत देख बहुत खुशी होती है। अभी वर्तमान समय इतनी हलचल में नहीं आते हैं। अभी फ़र्क आ गया है। शुरू-शुरू के क्वेश्चन जो होते थे ना - इन्डियन क्लचर है, फ़ारेन कल्चर है.... अभी समझ में आ गया। अभी ब्राह्मण क्लचर में आ गये। न इन्डियन क्लचर, न फ़ारेन कल्चर, ब्राह्मण कल्चर में आ गये। इन्डियन कल्चर थोड़ा खिटखिट करता है लेकिन ब्राह्मण कल्चर सहज है ना! ब्राह्मण कल्चर है ही स्वमान में रहो और स्व-राज्य अधिकारी बनो। यही ब्राह्मण कल्चर है। यह तो पसन्द है ना? अभी क्वेश्चन तो नहीं है ना, इन्डियन कल्चर कैसे आये, मुश्किल है? सहज हो गया ना? देखना फिर वहाँ जाकर कहो थोड़ा यह मुश्किल है! वहाँ जाकर ऐसे नहीं लिखना। सहज कह तो दिया लेकिन यह थोड़ा मुश्किल है! सहज है या थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? ज़रा भी मुश्किल नहीं है। बहुत सहज है। अभी सारे खेल पूरे हो गये हैं इसलिए हंसी आती है। अभी पक्के हो गये हैं। बचपन के खेल अभी समाप्त हो गये हैं। अभी अनुभवी बन गये हैं और बापदादा देखते हैं कि जितने पुराने पक्के होते जाते हैं ना तो जो नये-नये आते हैं वह भी पक्के हो जाते हैं। अच्छा है, एक-दो को अच्छा आगे बढ़ाते रहते हैं। मेहनत अच्छी करते हैं। अभी दादियों के पास किस्से तो नहीं ले जाते

हैं ना। किस्से-कहानियां दादियों के पास ले जाते हैं? कम हो गये हैं! फर्क है ना? (दादी जानकी से) तो आप अभी बीमार नहीं होना? किस्से-कहानियों में बीमार होते, वह तो खत्म हो गये। अच्छे हैं, सबमें अच्छे ते अच्छा विशेष गुण है - दिल की सफाई अच्छी है। अन्दर नहीं रखते, बाहर निकाल लेंगे। जो बात होगी सच्ची बोल देंगे। ऐसा नहीं, वैसा। ऐसा वैसा नहीं करते, जो बात है वह बोल देते, यह विशेषता अच्छी है। इसीलिए बाप कहते हैं सच्ची और साफ़ दिल पर बाप राज़ी होता है। हाँ तो हाँ, ना तो ना। ऐसे नहीं - देखेंगे...! मज़बूरी से नहीं चलते। चलते हैं तो पूरा, ना तो ना। अच्छा।

बापदादा ने फ़ारेन या इन्डिया, देश-विदेश दोनों की मीटिंग देखी। बहुत मीटिंग की है ना! बापदादा खुश होते हैं कि समय निकाल कर सभी ने जो प्लैन बनाये, मेहनत अच्छी की है, और संगठन भी अच्छा किया है। संगठन से जो भी कार्य होता है वह सहज सफल होता है। तो डबल फ़ारेनर्स ने मीटिंग में संगठन की शक्ति का बहुत अच्छा प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाया। जो भी प्लैन्स बनाये हैं, सबके हिम्मत और मेहनत पर बापदादा खुश है। आर.सी.ओ. ग्रुप, जो विशेष सेवा के लिए आये हैं, तो सभी जो भी आर.सी.ओ. वाले हैं, *(पाँचों खण्डों की सेवा के निमित्त मुख्य भाई-बहनें)* सभी को बापदादा मुबारक देते हैं। अच्छे-अच्छे प्लैन बनाये हैं। जहाँ जैसे चल सकता है, जितना चल सकता है उतना चलाओ, बड़े शहर और छोटे शहर में फ़र्क तो होता ही है। तो जितनी भी हिम्मत हो, उतना जो समय दिया है मेहनत की है, उन सबको प्रैक्टिकल में लाना। सिर्फ एक बात याद रखना कि सेवा और स्व-उन्नति के बैलेन्स में अन्तर नहीं आवे। प्लैन प्रैक्टिकल करने के बाद यह नहीं कहना कि सर्विस में बिजी हो गये ना इसलिए स्व-उन्नति में अन्तर आ गया - यह नहीं कहना। दोनों का बैलेन्स सदा रखना। क्यों? दूसरों की सेवा करो और स्व की सेवा नहीं तो यह अच्छा नहीं। दोनों का बैलेन्स रखना ही सफलता है। समझा। अच्छा।

जो आर.सी.ओ. के आये हैं वह हाथ उठाओ। इण्टरनेशनल सर्विस ग्रुप

भी हाथ उठाओ। अच्छा। मुबारक हो। समय निकालकर भट्ठी में भी बैठे, यह अच्छा है। मधुबन में चांस भी अच्छा है। सब मिल भी जाते हैं एक-दो को। सब तरफ़ का समाचार भी सभी को मिल जाता है। तो बापदादा मुबारक दे रहे हैं। बहुत अच्छा किया। अच्छा, और सभी जो भी जहाँ से आये हैं, उन सभी को भी बापदादा स्नेह भरी मुबारक दे रहे हैं। और समाचार भी मिला कि सभी ने, पत्र याद-प्यार बहुत भेजे हैं। तो बापदादा तो पत्र पहुँचने के पहले ही यादप्यार दे रहे हैं। जब आप बच्चे लिखते हैं ना, संकल्प करते हैं तो जैसे यहाँ साइंस के साधन हैं ना, उसमें जल्दी से पहुँच जाता है, पत्र पीछे पहुँचता है, सबसे फास्ट ई-मेल पहुँचता है। तो ई-मेल देना शुरू करते हो ना, उससे पहले बाप के पास पहुँच जाता है। यह सब साधन आप बच्चों की सेवा के सहयोग के लिए निकले हैं। ब्रह्मा बाप जब समाचार सुनते हैं - यह ई-मेल है, ये यह है, तो खुश होते हैं कि वाह बच्चे, वाह! इतना सहज साधन ब्रह्मा बाप को भी साकार में नहीं मिला लेकिन बच्चों के पास हैं। खुश होते हैं। सिर्फ सेवा का साधन समझकर यूज़ करना। सेवा के लिए साधन है क्योंकि विश्व-कल्याण करना है तो यह भी साधन सहयोग देते हैं। साधनों के वश नहीं होना। लेकिन साधन को सेवा में यूज़ करना। यह बीच का समय है जिसमें साधन मिले हैं। आदि में भी कोई इतने साधन नहीं थे और अन्त में भी नहीं रहेंगे। यह अभी के लिए हैं। सेवा बढ़ाने के लिए हैं। लेकिन यह साधन हैं, साधना करने वाले आप हो। साधन के पीछे साधना कम नहीं हो। बाकी बापदादा खुश होते हैं। बच्चों की सीन भी देखते हैं। फटाफट काम कर रहे हैं। बापदादा आपके आफ़िस का भी चक्कर लगाते हैं। कैसे काम कर रहे हैं। बहुत बिज़ी रहते हैं ना! अच्छी तरह से आफ़िस चलती है ना! जैसे एक सेकण्ड में साधन यूज़ करते हो ऐसे ही बीच-बीच में कुछ समय साधना के लिए भी निकालो। सेकण्ड भी निकालो। अभी साधन पर हाथ है और अभी अभी एक सेकण्ड साधना, बीच-बीच में अभ्यास करो। जैसे साधनों में जितनी प्रैक्टिस करते हो तो ऑटोमेटिक चलता रहता है ना। ऐसे एक

सेकण्ड में साधना का भी अभ्यास हो। ऐसे नहीं टाइम नहीं मिला, सारा दिन बहुत बिजी रहे। बापदादा यह बात नहीं मानते हैं। क्या एक घण्टा साधन को अपनाया, उसके बीच में क्या ३-५ सेकण्ड नहीं निकाल सकते? ऐसा कोई बिज़ी है जो ३ मिनट भी नहीं निकाल सके, ३ सेकण्ड भी नहीं निकाल सके। ऐसा कोई है? निकाल सकते हैं तो निकालो।

बापदादा जब सुनते हैं आज बहुत बिज़ी हैं, बहुत बिज़ी कह करके शक्ल भी बिज़ी कर देते हैं। बापदादा मानते नहीं हैं। जो चाहे वह कर सकते हो। अटेन्शन कम है। जैसे वह अटेन्शन रखते हो ना - ५० मिनट में यह लेटर पूरा करना है, इसीलिए बिज़ी होते हो ना - टाइम के कारण। ऐसे ही सोचो ५० मिनट में यह काम करना है, वह भी तो टाइम-टेबल बनाते हो ना। इसमें एक दो मिनट पहले से ही एड कर दो। ५ मिनट लगना है, ५-७ मिनट नहीं, ५ मिनट लगना है तो १० मिनट साधना में लगाओ। यह हो सकता है?

(अमेरिका की गायत्री से पूछते हैं) तो अभी कभी नहीं कहना, बहुत बिजी, बहुत बिजी। बापदादा उस समय चेहरा भी देखते हैं, फोटो निकालने वाला होता है। कितना भी बिजी हो, लेकिन पहले से ही साधन के साथ साधना का समय एड करो। होता क्या है – सेवा तो बहुत अच्छी करते हो, समय भी लगाते हो, उसकी तो मुबारक है। लेकिन स्व-उन्नति या साधना बीच-बीच में न करने से थकावट का प्रभाव पड़ता है। बुद्धि भी थकती है, हाथ पांव भी थकता है और बीच-बीच में अगर साधना का समय निकालो तो जो थकावट है ना, वह दूर हो जाए। खुशी होती है ना। खुशी में कभी थकावट नहीं होती है। काम में लग जाते हो, बापदादा तो कहते हैं कि काफी समय एक्शन-कान्सेस रहते हो। ऐसे होता है ना? एक्शन-कान्सेस की मार्क्स तो मिलती हैं, वेस्ट तो नहीं जाता है लेकिन सोल-कान्सेस की मार्क और एक्शन कान्सेस की मार्क में अन्तर तो होगा ना। फ़र्क होता है ना? तो अभी बैलेन्स रखो। लिंक को तोड़ो नहीं, जोड़ते रहो क्योंकि मैजारिटी डबल विदेशी काम करने में भी डबल बिज़ी रहते हैं। बापदादा जानते हैं कि मेहनत

बहुत करते हैं लेकिन बैलेन्स रखो। जितना समय निकाल सको, सेकण्ड निकालो, मिनट निकालो, निकालो जरूर। हो सकता है? पाण्डव हो सकता है? टीचर्स हो सकता है? और जो आफ़िस में काम करते हैं, उनका हो सकता है? हाँ, तो बहुत अच्छा करते हैं। अच्छा।

भारत वालों ने भी जो प्लैन्स बनाये हैं वह भी अच्छे प्लैन्स बनाये हैं। दोनों के अपने-अपने वायुमण्डल अनुसार प्लैन अच्छे हैं।

जिन बच्चों ने यादप्यार भेजी है, बापदादा उन सभी बच्चों को, जिन्होंने पत्र द्वारा या किसी भी द्वारा याद प्यार भेजा बापदादा को स्वीकार हुआ। और बापदादा रिटर्न में सभी बच्चों को 'दातापन का वरदान' दे रहे हैं। अच्छा – एक सेकण्ड में उड़ सकते हो? पंख पावरफुल है ना? बस, बाबा कहा और उड़ा। (ड्रिल)

चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ बाप समान दातापन की भावना रखने वाले, श्रेष्ठ आत्माओं को, निरन्तर याद और सेवा में तत्पर रहने वाले, परमात्म-सेवा के साथी बच्चों को, सदा लक्ष्य और लक्षण को समान बनाने वाले, सदा बाप के स्नेही और समान, समीप बनने वाले, बापदादा के नयनों के तारे, सदा विश्व-कल्याण की भावना में रहने वाले रहमदिल, मास्टर क्षमा के सागर बच्चों को दूर बैठने वाले, मधुबन में नीचे बैठने वाले और बापदादा के सामने बैठे हुए सर्व बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

इण्टरनेशनल मीटिंग ग्रुप से मुलाकात

एक-एक रत्न बहुत-बहुत वैल्युबुल है। बापदादा सदा एक-एक रत्न के विशेषताओं की माला जपते हैं। विशेषतायें हैं तब विशेष आत्मायें गाई हुई हैं। सिर्फ उस विशेषताओं को सदा कार्य में लगाते रहो। बापदादा हर एक के विशेषताओं की माला दोहराते रहते हैं और यही गीत गाते – वाह मेरे विशेष रत्न वाह! इसीलिए कहा ना कि बापदादा सदा बच्चों की याद में रहते हैं। बच्चे, महान हैं और अपनी महानता से विश्व को महान बनाने वाले हैं। कितनी महिमा है? जैसे बच्चे बाप की महिमा करते हैं वैसे बाप भी हर बच्चे

की महिमा करते हैं। रूहानी नशा रहता है ना? सदा अपने को निमित्त, विश्व की स्टेज पर हीरो पार्ट बजाने वाले हीरो एक्टर समझकर चलो। सभी हीरो हैं? बापदादा तो हर एक बच्चे से सारे दिन में अनेक बार मिलता रहता है। मिलता है ना! हर एक का एक्ट देख खुश होते रहते हैं। अच्छा पार्ट बजाने वाले हैं ना! तो बापदादा भी सदा बहुत अच्छा, बहुत अच्छा – यही गीत गाते रहते हैं। बहुत अच्छे हैं ना। अच्छे हैं और सदा अच्छे रहेंगे। गैरन्टी हैं ना, अच्छे रहने वाले ही हैं। रहेंगे, यह पूछने का नहीं है। क्वेश्चन है क्या? अच्छे रहेंगे, पूछें? नहीं। रहना है, रहेंगे। अच्छा – बहुत अच्छा संगठन है।

अच्छा – ओमशान्ति।

समझा – समय की पुकार क्या है? दाता बनो। एक अक्षर याद रखना। कोई भी बात हो जाए ''दाता'' शब्द सदा याद रखना। इच्छा-मात्रम्-अविद्या। न सूक्ष्म लेने की इच्छा, न स्थूल लेने की इच्छा। **दाता का अर्थ ही है इच्छा-मात्रम्-अविद्या।**

15-11-99

बाप समान बनने का सहज पुरुषार्थ आज्ञाकारी बनो

आज बापदादा अपने 'होलीहंस मण्डली' को देख रहे हैं। हर एक बच्चा होलीहंस है। सदा मन में ज्ञान-रत्नों का मनन करते रहते हैं। होलीहंस का काम ही है व्यर्थ के कंकड़ छोड़ना और ज्ञान-रत्नों का मनन करना। एक-एक रत्न कितना अमूल्य है। हर एक बच्चा ज्ञान-रत्नों की खान बन गये हैं। ज्ञान रत्नों के खज़ाने से सदा भरपूर रहते हैं।

आज बापदादा बच्चों में एक विशेष बात चेक कर रहे थे। वह क्या थी? ज्ञान वा योग की सहज धारणा का सहज साधन है बाप और दादा के 'आज्ञाकारी' बन चलना। बाप के रूप में भी आज्ञाकारी, शिक्षक के रूप में भी और सद्गुरु के रूप में भी। तीनों ही रूपों में आज्ञाकारी बनना अर्थात् सहज पुरुषार्थी बनना क्योंकि तीनों ही रूपों से बच्चों को आज्ञा मिली है। अमृतवेले से लेकर रात तक हर समय, हर कर्त्तव्य की आज्ञा मिली हुई है। आज्ञा के प्रमाण चलते रहे तो किसी भी प्रकार की मेहनत वा मुश्किल अनुभव नहीं होगी। हर समय के मन्सा संकल्प, वाणी और कर्म तीनों ही प्रकार की आज्ञा स्पष्ट मिली हुई है। सोचने की भी आवश्यकता नहीं कि यह करें या न करें। यह राईट है या रांग है। सोचने की भी मेहनत नहीं है। परमात्म-आज्ञा है ही सदा श्रेष्ठ। तो सभी कुमार जो भी आये हो, बहुत अच्छा संगठन है। तो हर एक ने बाप का बनते ही बाप से वायदे किये हैं? जब बाप के बने हैं तो सबसे पहले कौन-सा वायदा किया? बाबा, तन-मन-धन जो भी है, कुमारों के पास धन तो ज्यादा होता नहीं फिर भी जो है, सब आपका है। यह वायदा किया है? तन भी, मन भी, धन भी और सम्बन्ध भी सब आपसे - यह भी वायदा पक्का किया है? जब तन-मन-धन, सम्बन्ध सब आपका है तो मेरा क्या रहा! फिर कुछ मेरा-पन है? होता ही क्या है? तन, मन, धन, जन.... सब बाप के हवाले कर लिया। प्रवृत्ति वालों ने

किया है? मधुबन वालों ने किया है? पक्का है ना! जब मन भी बाप का हुआ, मेरा मन तो नहीं है ना! या मन मेरा है? मेरा समझकर यूज़ करना है? जब मन बाप को दे दिया तो यह भी आपके पास 'अमानत' है। फिर युद्ध किसमें करते हो? मेरा मन परेशान है, मेरे मन में व्यर्थ संकल्प आते हैं, मेरा मन विचलित होता है...., जब मेरा है नहीं, अमानत है फिर अमानत को मेरा समझ कर यूज़ करना, क्या यह अमानत में ख्यानत नहीं है? माया के दरवाजे हैं - ''मैं और मेरा''। तो तन भी आपका नहीं, फिर देह-अभिमान का मैं कहाँ से आया! मन भी आपका नहीं, तो मेरा-मेरा कहाँ से आया? तेरा है या मेरा है? बाप का है या सिर्फ कहना है, करना नहीं? कहना बाप का और मानना मेरा! सिर्फ पहला वायदा याद करो कि न बॉडी-कान्सेस की – 'मैं है, न मेरा'। तो जो बाप की आज्ञा है, तन को भी अमानत समझो। मन को भी अमानत समझो। फिर मेहनत की ज़रूरत है क्या? कोई भी कमज़ोरी आती है तो इन दो शब्दों से आती है - ''मैं और मेरा''। तो न आपका तन है, न बॉडी-कान्सेस का ''मैं''। मन में जो भी संकल्प चलते हैं अगर आज्ञाकारी हो तो बाप की आज्ञा क्या है? पॉजिटिव सोचो, शुभ भावना के संकल्प करो। फालतू संकल्प करो - यह बाप की आज्ञा है क्या? नहीं। तो जब आपका मन नहीं है फिर भी व्यर्थ संकल्प करते हो तो बाप की आज्ञा को प्रैक्टिकल में नहीं लाया ना! सिर्फ एक शब्द याद करो कि – 'मैं परमात्म-आज्ञाकारी बच्चा हूँ।' बाप की यह आज्ञा है या नहीं है, वह सोचो। जो आज्ञाकारी बच्चा होता है वह सदा बाप को स्वत: ही याद होता है। स्वत: ही प्यारा होता है। स्वत: ही बाप के समीप होता है। तो चेक करो मैं बाप के समीप, बाप का आज्ञाकारी हूँ? एक शब्द तो अमृतवेले याद कर सकते हो - ''मैं कौन?'' आज्ञाकारी हूँ या कभी आज्ञाकारी और कभी आज्ञा से किनारा करने वाले?

बापदादा सदा कहते हैं कि किसी भी रूप में अगर एक बाबा का सम्बन्ध ही याद रहे, दिल से निकले – 'बाबा', तो समीपता का अनुभव करेंगे। मन्त्र

मुआफ़िक नहीं कहो ''बाबा-बाबा'', वह राम-राम कहते हैं आप बाबा-बाबा कहते, लेकिन दिल से निकले – 'बाबा'! हर कर्म करने के पहले चेक करो कि मन के लिए, तन के लिए या धन के लिए बाबा की आज्ञा क्या है? कुमारों के पास चाहे कितना भी थोड़ा सा धन है लेकिन जैसे बाप ने आज्ञा दी है कि धन का पोतामेल किस प्रकार से रखो, वैसे रखा है? या जैसे आता वैसे चलाते? हर एक कुमार को धन का भी पोतामेल रखना चाहिए। धन को कहाँ और कैसे यूज़ करना है, मन को भी कहाँ और कैसे यूज़ करना है, तन को भी कहाँ लगाना है, यह सब पोतामेल होना चाहिए। आप दादियां जब धारणा की क्लास कराती हैं तो समझाती हैं ना कि धन को कैसे यूज़ करो! क्या पोतामेल रखो! कुमारों को पता है पोतामेल कैसे रखना है, कहाँ लगाना है, यह मालूम है? थोड़े हाथ उठा रहे हैं, नये-नये भी हैं, इन्हों को मालूम नहीं है। इन्हों को यह ज़रूर बताना कि क्या क्या करना है! निश्चिंत हो जायेंगे, बोझ नहीं लगेगा क्योंकि आप सबका लक्ष्य है, कुमार माना लाइट। डबल लाइट। कुमारों का लक्ष्य है ना कि हमको नम्बरवन आना है? तो लक्ष्य के साथ लक्षण भी चाहिए। लक्ष्य बहुत ऊँचा हो और लक्षण नहीं हो तो लक्ष्य तक पहुँचना मुश्किल है। इसलिए जो बाप की आज्ञा है उसको सदा बुद्धि में रख फिर कार्य में आओ।

बापदादा ने पहले भी समझाया है कि ब्राह्मण जीवन के मुख्य खजाने हैं - संकल्प, समय और श्वांस। आपके श्वांस भी बहुत अमूल्य हैं। एक श्वांस भी कामन नहीं हो, व्यर्थ नहीं हो। भक्ति में कहते हैं – श्वांसों-श्वांस अपने इष्ट को याद करो। श्वांस भी व्यर्थ नहीं जाये। ज्ञान का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना... यह तो है ही। लेकिन मुख्य यह तीनों खज़ाने - संकल्प, समय और श्वांस - आज्ञा प्रमाण सफल होते हैं? व्यर्थ तो नहीं जाते? क्योंकि व्यर्थ जाने से जमा नहीं होता। और जमा का खाता इस संगम पर ही जमा करना है। चाहे सतयुग, त्रेता में श्रेष्ठ पद प्राप्त करना है, चाहे द्वापर, कलियुग में पूज्य पद पाना है लेकिन दोनों का जमा इस संगम पर करना है। इस हिसाब से सोचो

कि संगम समय की जीवन के, छोटे से जन्म के संकल्प, समय, श्वांस कितने अमूल्य हैं? इसमें अलबेले नहीं बनना। जैसा आया वैसे दिन बीत गया, दिन बीता नहीं लेकिन एक दिन में बहुत-बहुत गँवाया। जब भी कोई फालतू संकल्प, फालतू समय जाता है तो ऐसे नहीं समझो - चलो ३० मिनट गया। बचाओ। समय अनुसार देखो प्रकृति अपने कार्य में कितनी तीव्र है। कुछ-न-कुछ खेल दिखाती रहती है। कहाँ-न-कहाँ खेल दिखाती रहती है। लेकिन प्रकृतिपति ब्राह्मण बच्चों का खेल एक ही है - उड़ती कला का। तो प्रकृति तो खेल दिखाती लेकिन ब्राह्मण अपने उड़ती कला का खेल दिखा रहे हो?

कोई बच्चे ने बापदादा को यह उड़ीसा की रिज़ल्ट लिखकर दी, यह हुआ, यह हुआ...। तो वह प्रकृति का खेल तो देख लिया। लेकिन बापदादा पूछते हैं कि आप लोगों ने सिर्फ प्रकृति का खेल देखा या अपने उड़ती कला के खेल में बिज़ी रहे? या सिर्फ समाचार सुनते रहे? समाचार तो सब सुनना भी पड़ता है, परन्तु जितना समाचार सुनने में इन्ट्रेस्ट रहता है उतना अपनी उड़ती कला की बाज़ी में रहने का इन्ट्रेस्ट रहा? कई बच्चे गुप्त योगी भी हैं, ऐसे गुप्त योगी बच्चों को बापदादा की मदद भी बहुत मिली है और ऐसे बच्चे स्वयं भी अचल, साक्षी रहे और वायुमण्डल में भी समय पर सहयोग दिया। जैसे स्थूल सहयोग देने वाले, चाहे गवर्मेन्ट, चाहे आस-पास के लोग सहयोग देने के लिए तैयार हो जाते हैं, ऐसे ब्राह्मण आत्माओं ने भी अपना सहयोग - शक्ति, शान्ति देने का, सुख देने का जो ईश्वरीय श्रेष्ठ कार्य है, वह किया? जैसे वह गवर्मेन्ट ने यह किया, फलाने देश ने यह किया... फौरन ही अनाउन्समेंट करने लग जाते हैं, तो बापदादा पूछते हैं - आप ब्राह्मणों ने भी अपना यह कार्य किया? आपको भी अलर्ट होना चाहिए। स्थूल सहयोग देना यह भी आवश्यक होता है, इसमें बापदादा मना नहीं करते लेकिन जो ब्राह्मण आत्माओं का विशेष कार्य है, जो और कोई सहयोग नहीं दे सकता, ऐसा सहयोग अलर्ट होके आपने दिया? देना है ना! या सिर्फ उन्हों को वस्त्र

चाहिए, अनाज चाहिए? लेकिन पहले तो मन में शान्ति चाहिए, सामना करने की शक्ति चाहिए। तो स्थूल के साथ सूक्ष्म सहयोग ब्राह्मण ही दे सकते हैं और कोई नहीं दे सकता है। तो यह कुछ भी नहीं है, यह तो रिहर्सल है। रीयल तो आने वाला है। उसकी रिहर्सल आपको भी बाप या समय करा रहा है। तो जो शक्तियाँ, जो खज़ाने आपके पास हैं, उसको समय पर यूज़ करना आता है?

कुमार क्या करेंगे? शक्तियाँ जमा हैं? शान्ति जमा है? यूज़ करना आता है? हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं, अभी प्रैक्टिकल में दिखाना। साक्षी होकर देखना भी है, सुनना भी है और सहयोग देना भी है। आखरिन रीयल जब पार्ट बजेगा, उसमें साक्षी और निर्भय होकर देखें भी और पार्ट भी बजावें। कौन-सा पार्ट? दाता के बच्चे, दाता बन जो आत्माओं को चाहिए वह देते रहें। तो मास्टर दाता हैं ना? स्टॉक जमा करो, जितना स्टॉक अपने पास होगा उतना ही दाता बन सकेंगे। अन्त तक अपने लिए ही जमा करते रहेंगे तो दाता नहीं बन सकेंगे। अनेक जन्म जो श्रेष्ठ पद पाना है, वह प्राप्त नहीं कर सकते हैं, इसीलिए एक तो अपने पास स्टॉक जमा करो। शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना का भण्डार सदा भरपूर हो। दूसरा – जो विशेष शक्तियाँ हैं, वह शक्तियाँ जिस समय, जिसको जो चाहिए वह दे सको। अभी समय अनुसार सिर्फ अपने पुरुषार्थ में संकल्प और समय दो, साथ-साथ दाता बन विश्व को भी सहयोग दो। अपना पुरुषार्थ तो सुनाया - अमृतवेले ही यह सोचो कि – 'मैं आज्ञाकारी बच्चा हूँ!' हर कर्म के लिए आज्ञा मिली हुई है। उठने की, सोने की, खाने की, कर्मयोगी बनने की। हर कर्म की आज्ञा मिली हुई है। **आज्ञाकारी बनना यही बाप समान बनना है।** बस, श्रीमत पर चलना, न मनमत, न परमत। एडीशन नहीं हो। कभी मनमत पर, कभी परमत पर चलेंगे तो मेहनत करनी पड़ेगी। सहज नहीं होगा क्योंकि मनमत, परमत उड़ने नहीं देगी। मनमत, परमत बोझ वाली है और बोझ उड़ने नहीं देगा। श्रीमत डबल लाइट बनाती है। श्रीमत पर चलना अर्थात् सहज बाप समान

बनना। श्रीमत पर चलने वाले को कोई भी परिस्थिति नीचे नहीं ले आ सकती। तो श्रीमत पर चलना आता है?

अच्छा - तो कुमार अभी क्या करेंगे? निमन्त्रण मिला। स्पेशल खातिरी हुई। देखो, कितने लाड़ले हो गये हो। तो अभी आगे क्या करेंगे? रेसपाण्ड देंगे या वहाँ गये तो वहाँ के, यहाँ आये तो यहाँ के? ऐसे तो नहीं है ना? यहाँ तो बहुत मज़े में हो। माया के वार से बचे हुए हो, ऐसा कोई है जिसको यहाँ मधुबन में भी माया आई हो? ऐसा कोई है जिसको मधुबन में भी मेहनत करनी पड़ी हो? सेफ हो, अच्छा है। बापदादा भी खुश होते हैं। समय आयेगा जब यूथ ग्रुप पर गवर्मेन्ट का भी अटेन्शन जायेगा लेकिन तब जायेगा जब आप विघ्न-विनाशक बन जाओ। 'विघ्न-विनाशक' किसका नाम है? आप लोगों का है ना! विघ्नों की हिम्मत नहीं हो जो कोई कुमार का सामना करे, तब कहेंगे 'विघ्न-विनाशक'। विघ्न की हार भले हो, लेकिन वार नहीं करे। विघ्न-विनाशक बनने की हिम्मत है? या वहाँ जाकर पत्र लिखेंगे दादी बहुत अच्छा था लेकिन पता नहीं क्या हो गया! ऐसे तो नहीं लिखेंगे? यही खुशखबरी लिखो - ओ. के., वेरी गुड, विघ्न-विनाशक हूँ। बस एक अक्षर लिखो। ज़्यादा लम्बा पत्र नहीं। ओ. के.। लम्बा पत्र हो तो लिखने में भी आपको शर्म आयेगा। शर्म आयेगा ना कि कैसे लिखें, क्या लिखें! कई बच्चे कहते हैं पोतामेल लिखने चाहते हैं लेकिन जब सोचते हैं कि पोतामेल लिखें तो उस दिन कोई-न-कोई ऐसी बात हो जाती है जो लिखने की हिम्मत ही नहीं होती है। बात हुई क्यों? विघ्न-विनाशक टाइटल नहीं है क्या? बाप कहते हैं लिखने से, बताने से आधा कट जाता है। फायदा है। लेकिन लम्बा पत्र नहीं लिखो, ओ. के. बस। अगर कभी कोई गलती हो जाती है तो दूसरे दिन विशेष अटेन्शन रख विघ्न-विनाशक बन फिर ओ. के. का लिखो। लम्बी कथा नहीं लिखना। यह हुआ, यह हुआ... इसने यह कहा, उसने यह कहा.... यह रामायण और उनकी कथायें हैं। ज्ञान मार्ग का एक ही अक्षर है, कौन-सा अक्षर है? – ओ. के. (ও কে)। जैसे शिवबाबा गोल-गोल होता है

ना वैसे ओ (ஜ) भी लिखते हैं। और के (கே) अपनी किंगडम। तो ओ.के. माना बाप भी याद रहा और किंगडम भी याद रही। इसलिए ओ. के.... और ओ.के. लिखकर ऐसे नहीं रोज़ पोस्ट लिखो और पोस्ट का खर्चा बढ़ जाए। ओ.के. लिखकर अपने टीचर के पास जमा करो और टीचर फिर ८७ दिन वा मास में एक साथ सबका समाचार लिखे। पोस्ट में इतना खर्चा नहीं करना, बचाना है ना। और यहाँ पोस्ट इतनी हो जायेगी जो यहाँ समय ही नहीं होगा। आप रोज़ लिखो और टीचर जमा करे और टीचर एक ही कागज़ में लिखे - ओ.के. या नो (நோ)। इंग्लिश नहीं आती लेकिन ओ.के. लिखना तो आयेगा, नो लिखना भी आयेगा। अगर नहीं आये तो बस यही लिखो कि ठीक रहा या नहीं ठीक रहा। तो यूथ की रिज़ल्ट क्या आयेगी? ओ.के. की आयेगी? या कहेंगे वहाँ गये ना ऐसा हुआ, वैसा हुआ! ऐसा वैसा नहीं करना। यूथ अपनी कमाल दिखाओ। जो सब कहें कि नम्बरवन यूथ ग्रुप है। तो स्पेशल मिला? वैसे पार्टी में आते हो तो सामने थोड़े ही बैठने को मिलता है। कोई कहाँ, कोई कहाँ बैठते, अभी तो बिल्कुल सामने बैठे हो। तो इस मधुबन के स्नेह, शक्ति को भूल नहीं जाना। सदा कुछ भी हो, मधुबन की रिफ्रेशमेंट को याद करना। ऐसे है यूथ? देखेंगे। सारे ब्राह्मण परिवार की नज़र इस समय यूथ पर है। यूथ क्या कर रहा है, क्या आगे करता है! सब यही सोच रहे हैं।

बापदादा को भी यह प्रोग्राम अच्छा लग रहा है। सब खुश हैं? तो सदा खुश-राज़ी रहना। सिर्फ मधुबन में खुश नहीं रहना। बापदादा ने पहले भी सुनाया, कि चलते-चलते कोई भी नाराज़ क्यों होते हैं? कोई-न-कोई ज्ञान का राज़ भूलता है तब नाराज़ होते हैं। तो आप तो सब राज़ को समझ, सोच पक्के होके जा रहे हैं ना! कभी नाराज़ नहीं होना - न अपने ऊपर, न कोई आत्मा के ऊपर। खुश रहना। ऐसे तो नहीं सेन्टर पर जाकर खुशी का खज़ाना एक मास जमा रहेगा फिर धीरे-धीरे खत्म हो जायेगा? खत्म तो नहीं होगा ना? सदा साथ रखना। अच्छा - तन-मन-धन बाप को दे दिया है

ना? अच्छा, दिल भी दे दी है? दिल बाप को दी है? अगर दिल दे दी है तो बाप जैसे डायरेक्शन दे वैसे चलो, आपके पास दिल – आपके लिए नहीं है। तो बताओ जिसने दिल, दिलाराम को दे दी वह कभी किसी भी आत्माओं से दिल लगायेगा? नहीं लगायेगा ना! तो किसी से भी दिल लगी की बातें, बोल-चाल, दृष्टि वा वृत्ति से तो नहीं करेंगे? या थोड़ी दिल दी है थोड़ी औरों से लगाने के लिए रखी है? दिल दे दी है? तो दिल नहीं लगाना। बाप की अमानत, दिलाराम को दिल दे दी। दिल लगी की कहानियाँ बहुत आती हैं। तो कुमार याद रखना, ऐसे तो प्रवृत्ति वाले भी याद रखना। लेकिन आज कुमारों का दिन है ना। तो बापदादा यह अटेन्शन दिलाते हैं कभी ऐसी रिपोर्ट नहीं आवे। हमारी दिल है ही नहीं, बाप को दे दी। तो दिल कैसे लगेगी! ज़रा भी अगर किसकी दृष्टि, वृत्ति कमज़ोर हो तो कमज़ोर दिल को यहाँ से ही मज़बूत करके जाना। इसमें हाँ जी है! या वहाँ जाकर कहेंगे कि सरकमस्टांश ही ऐसे थे? कुछ भी हो जाए। जब बापदादा से वचन कर लिया, कितनी भी मुश्किल आवे लेकिन वचन को नहीं छोड़ना। बाप के आगे वचन करना, वचन लेना... इस बात को भी याद रखना। कोई आत्मा के आगे वचन नहीं कर रहे हो, परमात्मा के आगे वचन दे कभी भी मिटाना नहीं। जन्म की प्रतिज्ञा कभी भी भूलना नहीं।

अभी सभी एक मिनट के लिए अपने दिल से, वैसे दिल तो आपकी नहीं है, बाप को दे दी है फिर भी दिल में एक मिनट वचन करो कि – ''सदा विघ्न-विनाशक, आज्ञाकारी रहेंगे।'' **(ड्रिल)** सभी ने वचन किया?

अच्छा - डबल विदेशी हाथ उठाओ। डबल विदेशियों को देखकर आप सभी भी खुश होते हो ना। देखो आप सबको देखकर सभी कितने खुश हो रहे हैं! क्योंकि डबल विदेशियों का संगमयुग पर ड्रामा में बाप को प्रत्यक्ष करने का बहुत अच्छा पार्ट है। बापदादा कहते हैं कि डबल विदेशियों ने बाप का एक टाइटल प्रत्यक्ष किया। पहले थे भारत-कल्याणी और अब हैं प्रैक्टिकल में विश्व-कल्याणी। तो निमित्त बने ना! जब विदेश से कल्प पहले वाली

नई-नई आत्मायें आती हैं तो बापदादा भी उनकी विशेषता वा कमाल देखते हैं। बापदादा तो भारत के फिलासॉफी की भी बहुत बातें सुनाते हैं, जो विदेशियों को बिल्कुल पता नहीं, गणेश क्या होता है, हनुमान क्या होता है, रामायण क्या, भागवत क्या, भक्ति क्या, कुछ पता नहीं। लेकिन कल्प पहले के होने कारण सब बातें कैच कर लेते हैं। तो कैचिंग पावर अच्छी है। समझ जाते हैं क्योंकि एक विशेषता है कि जो सुनते हैं, उसका अनुभव करते हैं। सिर्फ सुनने पर नहीं चलते हैं। चाहे शान्ति का अनुभव हो, चाहे खुशी का अनुभव हो, चाहे नि:स्वार्थ प्यार का अनुभव हो, कोई-न-कोई अनुभव परिवर्तन कर देता है। तो बापदादा डबल विदेशियों की कमाल देखते रहते हैं और वाह बच्चे वाह कहते रहते हैं। और आजकल चारों ओर विदेश के समाचारों में सेवा का उमंग अच्छा है। सिर्फ याद और सेवा में थोड़ा सा बैलेन्स और चाहिए। लेकिन फिर भी सेवा का उमंग-उत्साह अच्छा है, और आगे बढ़ते रहते हैं। एक और विशेषता भी है - कभी भी कोई कमज़ोरी छिपाते नहीं हैं। साफ़ दिल हैं। इसलिए मेकअप कर लेते हैं। सुना - डबल विदेशियों ने। बापदादा – वाह बच्चे, वाह! का गीत गाते रहते हैं। जनरल में भी पर्सनल विदेशियों की मुलाकात हुई? फिर भी देखो सरकमस्टांश को पार करके पहुँच तो जाते हैं। बापदादा देखते हैं मैजारिटी विदेशी हर साल आते ही हैं। भारत वाले कभी मिस भी कर सकते हैं लेकिन यह नहीं करते हैं। आना ही है, क्या भी करें। देखो रशिया वालों को भी देखो, पैसा कम है लेकिन ग्रुप बहुत बड़ा आता है। तो विदेशियों की हिम्मत अच्छी है। इसलिए हर एक विदेशी को बापदादा विशेष यादप्यार और मुबारक दे रहे हैं।

विदेश की टीचर्स सामने बैठी हैं, इन्हों को मधुबन में सेवा करने का चांस ज़्यादा मिलता है। अच्छा। गुजरात वाले सेवा में हैं। गुजरात के सेवाधारी हाथ उठाओ। निर्विघ्न गुजरात? टीचर्स भी सभी हिम्मत वाली हैं। जब बुलाओ तब गुजरात ''जी हाज़िर'' का पाठ पढ़ता है। अच्छा है। हाँ जी, हाँ

जी करने वालों को अनेक जन्म सभी सामने से हाँ जी, हाँ जी करेंगे। अच्छा है। देखो पहला चांस गुजरात को सेवा का मिला है। दादियों की हुज्जत है, बुलाओ और हाजिर। अच्छा है। अच्छा।

मधुबन में भी चार पाँच भुजायें हैं, तो बापदादा के पास मधुबन की विशेषता पहुँच गई है। मधुबन वालों ने अपने चार्ट भेजे हैं। बापदादा के पास पहुंचे हैं। बापदादा सभी बच्चों को, आज्ञा मानने वाले आज्ञाकारी बच्चों की नज़र से देखते हैं। विशेष कार्य मिला और एवररेडी बन किया है, इसकी विशेष मुबारक दे रहे हैं। अच्छा हर एक ने अपना स्पष्ट लिखा है। (दादी से) आप भी रिज़ल्ट देखकर क्लास कराना। अपनी अवस्था का चार्ट अच्छा लिखा है। बापदादा तो मुबारक दे ही रहे हैं। सच्ची दिल पर सच्चा साहेब राजी होता है।

अच्छा - सभी सुन रहे हैं ना। दूर-दूर भी सुन रहे हैं। (देश-विदेश में इन्टरनेट पर मुरली सुन रहे हैं) देह, देश से दूर भिन्न-भिन्न समय होते हुए भी सुनने के लिए पहुंच जाते हैं, इसलिए बापदादा उन सभी बच्चों को सम्मुख ही देख रहे हैं। सभी दिल से समीप और सम्मुख हैं। अच्छा - साइन्स के साधन का फायदा तो उठा रहे हैं ना। वास्तव में यह सब साधन रिफाइन हो आपके ही काम में आयेंगे। लेकिन संगम पर भी कार्य में ले आ रहे हैं, उसके लिए मुबारक हो। अच्छा –

चारों ओर के बापदादा के आज्ञाकारी बच्चों को, सदा विघ्न-विनाशक बच्चों को, सदा श्रीमत पर सहज चलने वाले, मेहनत से मुक्त रहने वाले, सदा मौज में उड़ने और उड़ाने वाले, सर्व खजानों के भण्डार से भरपूर रहने वाले ऐसे बाप के समीप और समान रहने वाले बच्चों को बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते। कुमारों को भी विशेष अथक और एवररेडी, सदा उड़ती कला में उड़ने वालों को बापदादा का विशेष यादप्यार।

बापदादा ने डायमण्ड हाल में बैठे हुए सभी भाई-बहिनों को दृष्टि देने के लिए हाल का चक्र लगाया

बापदादा का हर एक बच्चे से बहुत-बहुत-बहुत प्यार है। ऐसे नहीं समझें कि हमारे से बापदादा का प्यार कम है। आप चाहे भूल भी जाओ लेकिन बाप निरन्तर हर बच्चे की माला जपते रहते हैं क्योंकि बापदादा को हर बच्चे की विशेषता सदा सामने रहती है। कोई भी बच्चा विशेष न हो, यह नहीं है। हर बच्चा विशेष है। बाप कभी एक बच्चे को भी भूलता नहीं है, तो सभी अपने को; विशेष आत्मा हैं और विशेष कार्य के लिए निमित्त हैं, ऐसे समझ के आगे बढ़ते चलो। अच्छा। अभी सबसे मिलना हुआ, सभी मिले ना!

(दादी जानकी ने जगदीश भाई की याद दी) सब ठीक हो जायेगा। बहुत-बहुत याद देना। फिर भी शुरू से सेवा की इन्वेन्शन में अच्छा पार्ट बजाया है। विशेषता दिखाने वालों को बाप की विशेष दुआयें मिलती हैं।

दादी जानकी से – आप तो ठीक हैं ना! बापदादा ने कहा था ''रेस्ट इज बेस्ट'' - यह सदा याद रखना। सेवा है लेकिन आप लोगों को आगे भी रहना है। शरीर आप दोनों के विशेष हैं। आत्मायें तो विशेष हो लेकिन शरीर भी विशेष हैं। वैसे तो दुआयें हैं सबकी। परन्तु शरीर को भी देखना। जब सबको सन्तुष्ट करने वाली हो तो शरीर को भी तो सन्तुष्ट करो ना। अच्छा -

दादी जी से – बहुत अच्छा चला रही हो। बापदादा पद्मगुणा खुश है। दोनों की कमाल है। बापदादा तो है ही। आप लोगों के रोम-रोम में 'बाबा' है, तभी सभी के रोम-रोम में बाबा की याद दिलाने के निमित्त हो। उमंग-उत्साह दिलाने में नम्बरवन हो। बापदादा दोनों को देख बहुत खुश होते हैं। रोज़ अनेक बार आपकी माला जपते हैं। यह सभी (दादियां) भी साथ हैं। सभी अपना-अपना काम कर रहे हैं। आगे यह दो हैं बाकी साथ में आप सभी हो। सब साथी हैं। पाण्डव भी साथी हैं। यह देखो कैबिन वाले बहुत अच्छी सेवा करते हैं। किसके नाम लेवें, इसीलिए निमित्त इन्हों का ले लेते हैं, बाकी हैं सभी। बापदादा अगर एक-एक की महिमा करे तो सारी रात लग जाये।

अच्छा।

वल्लभ भाई से – (बम्बई में हार्ट की बाईपास सर्जरी हुई है, ES दिन में वापस मधुबन आ गये हैं)

योगयुक्त होने के कारण, अच्छा पार्ट बजाने के कारण हिसाब सहज चुक्तू हो गया। लम्बा नहीं हुआ। थोड़े में हिसाब चुक्तू हो गया। यह अच्छी विशेषता दिखाई। ठीक है। बहुत अच्छा। ऐसे लगता है जैसे हुआ ही नहीं। (डा.बनारसी से) इसको भी पुण्य मिलेगा। पुण्य जमा हो जायेगा। अच्छा।

काठमाण्डु की शीला बहन से – (एक्सीडेंट के DD वर्षो बाद बापदादा से मिल रही है)

(शीला बहन कह रही हैं – ''मेरा बाबा'') बाबा भी कहते – ''बच्ची मेरी'' है। आप बाबा की, बाबा आपका। सदा खुश रहो। सदा खुश रहती हो यही विशेषता है। बहुत अच्छा।

इसके बाद बापदादा को ज्योर्तिलिंगम् यात्राओं का मैप दिखाया गया तथा बापदादा ने स्विच ऑन कर लांचिग की और कहा कि यह रूहानी अलौकिक यात्रा है। सभी उमंग-उत्साह में रहकर लाइट हाउस बनकर जाओ जिससे अनेकों को बाबा का सन्देश मिलेगा।

ज्ञान वा योग की सहज धारणा का
सहज साधन है बाप और दादा के
आज्ञाकारी बन चलना।
बाप के रूप में भी आज्ञाकारी,
शिक्षक के रूप में भी और
सद्गुरू के रूप में भी।
तीनों ही रूपों में आज्ञाकारी बनना
अर्थात् सहज पुरुषार्थी बनना ।

पास विद् ऑनर बनने के लिए सर्व खज़ानों के खाते को जमा कर सम्पन्न बनो

आज बापदादा किस सभा को देख रहे हैं? आज की सभा में हर एक बच्चा हाइएस्ट और अविनाशी खज़ानों से रिचेस्ट है। दुनिया वाले कितने भी रिचेस्ट हो लेकिन एक जन्म के लिए रिचेस्ट हैं। एक जन्म भी रिचेस्ट रहेगा या नहीं, यह भी निश्चित नहीं है। चाहे कितना भी रिचेस्ट इन वर्ल्ड हो परन्तु एक जन्म के लिए, और आप हो जो निश्चय और नशे से कहते हो कि हम अनेक जन्म रिचेस्ट हैं क्योंकि आप सभी अविनाशी खज़ानों से सम्पन्न हो। आप सभी जानते हो कि हम इस समय के पुरुषार्थ से एक दिन में भी बहुत कमाई करने वाले हैं। जानते हो कि एक दिन में आप कितनी कमाई करते हो? हिसाब जानते हो ना! गाया हुआ है, अनुभव है - 'एक कदम में पद्म'। तो एक दिन में बाप द्वारा, बाप की नॉलेज द्वारा, याद द्वारा हर कदम में पद्म जमा होते हैं। तो सारे दिन में जितने भी कदम याद में उठाते हो उतने पद्म जमा करते हो। तो ऐसा कमाई करने वाला, खज़ाना जमा करने वाला विश्व में कोई होगा! वा है? विश्व में चक्कर लगाकर आओ, सिवाए आपके इतना जमा कोई कर नहीं सकता। इसलिए बाप कहते हैं – इस श्रेष्ठ स्मृति में रहो कि हम आत्माओं का भाग्य परम आत्मा द्वारा ऐसा श्रेष्ठ बना है।

अपने खज़ाने तो जानते हो ना! समय के खज़ाने को भी जानते हो कि इस संगमयुग का समय कितना श्रेष्ठ है, जो प्राप्ति चाहिए वह अधिकारी बन बाप से ले रहे हो। सर्व अधिकार प्राप्त कर लिया है ना? एक-एक श्रेष्ठ संकल्प कितना बड़ा खज़ाना है, समय भी बड़ा खज़ाना है, संकल्प भी बड़ा खज़ाना है। सर्व शक्तियाँ बड़े से बड़ा खज़ाना है। एक-एक ज्ञान-रत्न कितना बड़ा खज़ाना है। हर एक गुण कितना बड़ा खज़ाना है। दुनिया वाले

भी मानते हैं कि श्वांसों श्वांस याद से श्वांस सफल होते हैं। तो आप सबके श्वांस सफलता स्वरूप हैं, व्यर्थ नहीं। हर श्वांस में सफलता का अधिकार समाया हुआ है। बापदादा ने सभी बच्चों को सर्व खजाने एक जैसे ही दिये हैं। सर्व भी दिये हैं और समान दिये हैं। कोई को एक गुणा, कोई को दस गुणा, कोई को DDD गुणा... ऐसे नहीं दिया है। देने वाले दाता ने एक-एक बच्चे को सर्व खज़ाने ब्राह्मण बनते ही समान रूप में दिये हैं। लेकिन खज़ाने को कितना जमा करते हैं या गँवाते हैं, यह हर एक के ऊपर है। हर एक को चेक करना है कि हम सारे दिन में कितना जमा करते हैं या गँवाते हैं? चेक करते हो? चेक ज़रूर करना है क्योंकि एक जन्म के लिए नहीं है लेकिन हर जन्म के लिए है। अनेक जन्म के लिए जमा चाहिए। जमा करने की विधि जानते हो? बहुत सहज है। सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ। बिन्दी याद है तो जमा होता है। जैसे स्थूल खज़ाने में भी एक के साथ बिन्दी लगाते जाओ तो बढ़ता जाता है ना! ऐसे ही आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो बीत चुका वह भी फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दी। अगर हर खज़ाने को बिन्दी रूप से याद करो तो जमा होता जाता। अनुभव है ना! बिन्दी लगाई और व्यर्थ से जमा होता जाता है। बिन्दी लगाने आती है? कई बार ऐसे होता है जो कोशिश करते हो बिन्दी लगाने की लेकिन बिन्दी के बजाए लम्बी लाइन हो जाती है, बिन्दी के बजाए क्वेश्चनमार्क हो जाता है, आश्चर्य की लाइन लग जाती है। तो जमा का खाता बढ़ाने की विधि है 'बिन्दी' और गँवाने का रास्ता है लम्बी लाइन लगाना, क्वेश्चनमार्क लगाना, आश्चर्य की मात्रा लगाना। सहज क्या है? बिन्दी है ना! तो विधि बहुत सहज है – **स्वमान और बाप की याद तथा फालतू को फुलस्टॉप लगाना।**

बापदादा ने पहले भी कहा है - रोज़ अमृतवेले अपने आपको तीन बिन्दियों की स्मृति का तिलक लगाओ तो एक खज़ाना भी व्यर्थ नहीं जायेगा। हर समय, हर खज़ाना जमा होता जायेगा। बापदादा ने सभी बच्चों के हर खज़ाने के जमा का चार्ट देखा। उसमें क्या देखा? अभी तक भी जमा का

खाता जितना होना चाहिए उतना नहीं है। समय, संकल्प, बोल व्यर्थ भी जाता है। चलते-चलते कभी समय का महत्त्व इमर्ज रूप में कम होता है। अगर समय का महत्व सदा याद रहे, इमर्ज रहे तो समय को और ज़्यादा सफल बना सकते हो। सारे दिन में साधारण रूप से समय चला जाता है। गलत नहीं लेकिन साधारण। ऐसे ही संकल्प भी बुरे नहीं चलते लेकिन व्यर्थ चले जाते हैं। एक घण्टे की चेकिंग करो, हर घण्टे में समय या संकल्प कितने साधारण जाते हैं? जमा नहीं होते हैं। फिर बापदादा इशारा भी देता है, तो बापदादा को भी दिलासे बहुत देते हैं। बाबा, ऐसे थोड़ा सा संकल्प है बस। बाकी नहीं, संकल्प में थोड़ा चलता है। सम्पूर्ण हो जायेंगे। ठीक हो जायेंगे। अभी अन्त थोड़े ही आया है, थोड़ा समय तो पड़ा है। समय पर सम्पन्न हो जायेंगे। लेकिन बापदादा ने बार-बार कह दिया है कि जमा बहुत समय का चाहिए। ऐसे नहीं जमा का खाता अन्त में सम्पन्न करेंगे, समय आने पर बन जायेंगे! बहुत समय का जमा हुआ बहुत समय चलता है। वर्सा लेने में तो सभी कहते हैं हम तो लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। अगर हाथ उठवायेंगे कि त्रेतायुगी बनेंगे? तो कोई नहीं हाथ उठाता। और लक्ष्मी-नारायण बनेंगे? तो सभी हाथ उठाते। अगर बहुत समय का जमा का खाता होगा तो पूरा वर्सा मिलेगा। अगर थोड़ा-सा जमा होगा तो फुल वर्सा कैसे मिलेगा? इसलिए सर्व खज़ाने को जितना जमा कर सको उतना अभी से जमा करो। हो जायेगा, आ जायेंगे....गे गे नहीं करो। ''**करना ही है**'' - यह है दृढ़ता। अमृतवेले जब बैठते हैं, अच्छी स्थिति में बैठते हैं तो दिल ही दिल में बहुत वायदे करते हैं - यह करेंगे, यह करेंगे। कमाल करके दिखायेंगे... यह तो अच्छी बात है। श्रेष्ठ संकल्प करते हैं लेकिन बापदादा कहते हैं इन सब वायदों को कर्म में लाओ। सिर्फ वायदा नहीं करो लेकिन जो भी वायदे करते हो वह मन-वचन और कर्म में लाओ। बच्चे संकल्प बहुत अच्छे-अच्छे करते हैं, बापदादा उस समय खुश होते हैं क्योंकि हिम्मत तो रखते हैं ना। यह बनेंगे, यह करेंगे... हिम्मत बहुत अच्छी रखते हैं। तो हिम्मत पर बापदादा खुश होते हैं। परन्तु जब

कर्म में आना होता है तो कभी-कभी हो जाता है। वायदा करना बहुत सहज है। लेकिन कर्म में करना माना वायदा निभाना। वायदे करने वाले तो बहुत हैं लेकिन निभाने में नम्बरवार हो जाते हैं। तो **संकल्प और कर्म को, प्लैन और प्रैक्टिकल दोनों को समान बनाओ।** बना सकते हो ना? बिज़नेस वाले आये हैं। बिज़नेस वाले तो बिज़नेस करना जानते हैं ना! जमा करना जानते हैं ना! और इन्जीनियर व वैज्ञानिक भी प्रैक्टिकल में काम करते हैं। और जो रूरल (ग्रामीण प्रभाग) है, बापदादा उन्हों को 'रूलर' कहते हैं, क्योंकि अगर यह सेवा नहीं करते तो कोई नहीं चल पाते। तो तीनों ही विंग जो आये हैं वह कर्म करने वाले हैं। सिर्फ कहने वाले नहीं, करने वाले हैं। तो सभी वायदे कर्म में निभाने वाली आत्माये हो ना! या सिर्फ वायदा करने वाले हो? वायदे के समय तो बापदादा को हिम्मत दिखाकर खुश कर देते हैं। बापदादा के पास हर एक बच्चे के वायदों का फाइल है। वहाँ (वतन में) वायदों का फाइल रखने के लिए अलमारी वा जगह की तो बात है नहीं। कभी-कभी बापदादा अपनी अलौकिक टी.वी. अचानक खोलते हैं। सदा नहीं खोलते हैं, कभी-कभी खोलते हैं तो सब सुनने में आता है। जो आपस में बोलचाल करते हैं, वह भी सुनते हैं। इसीलिए बापदादा कहते हैं – व्यर्थ को जमा के खाते में जमा करो।

ब्राह्मण अर्थात् अलौकिक। ब्राह्मण जीवन का महत्त्व बहुत बड़ा है। प्राप्तियां बहुत बड़ी हैं। स्वमान बहुत बड़ा है और संगम के समय पर बाप का बनना, यह बड़े-से-बड़ा पद्मगुणा भाग्य है। इसलिए बापदादा कहते हैं कि हर खज़ाने का महत्त्व रखो। जैसे दूसरों को भाषण में संगमयुग की कितनी महिमा सुनाते हो। अगर आपको कोई टॉपिक देवें कि संगमयुग की महिमा करो तो कितना समय कर सकते हो? एक घण्टा कर सकते हो? टीचर्स बोलो। जो कर सकता है वह हाथ उठाओ। तो जैसे दूसरों को महत्त्व सुनाते हो, महत्त्व जानते बहुत अच्छा हो। बापदादा ऐसे नहीं कहेगा कि जानते नहीं हैं। जब सुना सकते हैं तो जानते हैं तब तो सुनाते हैं। सिर्फ है क्या कि मर्ज हो

जाता है। इमर्ज रूप में स्मृति रहे - वह कभी कम हो जाता है, कभी ज्यादा। तो अपना ईश्वरीय नशा इमर्ज रखो। हाँ मैं तो हो गई, हो गया... नहीं। प्रैक्टिकल में हूँ... यह इमर्ज रूप में हो। निश्चय है लेकिन निश्चय की निशानी है – 'रूहानी नशा'। तो सारा समय नशा रहे। रूहानी नशा - मैं कौन! यह नशा इमर्ज रूप में होगा तो हर सेकण्ड जमा होता जायेगा।

तो आज बापदादा ने जमा का खाता देखा इसलिए आज विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं कि समय की समाप्ति अचानक होनी है। यह नहीं सोचो कि मालूम तो पड़ता रहेगा, समय पर ठीक हो जायेंगे। जो समय का आधार लेता है, समय ठीक कर देगा, या समय पर हो जायेगा.... उनका टीचर कौन? समय या स्वयं परम-आत्मा? परम-आत्मा से सम्पन्न नहीं बन सके और समय सम्पन्न बनायेगा, तो इसको क्या कहेंगे? समय आपका मास्टर है या परमात्मा आपका शिक्षक है? तो ड्रामा अनुसार अगर समय आपको सिखायेगा या समय के आधार पर परिवर्तन होगा तो बापदादा जानते हैं कि प्रालब्ध भी समय पर मिलेगी क्योंकि समय टीचर है। समय आपका इन्तजार कर रहा है, आप समय का इन्तजार नहीं करो। वह रचना है, आप मास्टर रचता हो। तो रचता का इन्तजार रचना करे, आप मास्टर रचता समय का इन्तजार नहीं करो। और मुश्किल है भी क्या? सहज को स्वयं ही मुश्किल बनाते हो। मुश्किल है नहीं, मुश्किल बनाते हो। जब बाप कहते हैं जो भी बोझ लगता है वह बोझ बाप को दे दो। वह देना नहीं आता। बोझ उठाते भी हो फिर थक भी जाते हो फिर बाप को उल्हना भी देते हो - क्या करें, कैसे करें...! अपने ऊपर बोझ उठाते क्यों हो? बाप आफर कर रहा है – अपना सब बोझ बाप के हवाले करो। ६६ जन्म बोझ उठाने की आदत पड़ी हुई है ना! तो आदत से मज़बूर हो जाते हैं, इसलिए मेहनत करनी पड़ती है। कभी सहज, कभी मुश्किल। या तो कोई भी कार्य सहज होता है या मुश्किल होता है। कभी सहज कभी मुश्किल क्यों? कोई कारण होगा ना! कारण है - आदत से मज़बूर हो जाते हैं और बापदादा को बच्चों की मेहनत करना, यही

सबसे बड़ी बात लगती है। अच्छी नहीं लगती है। मास्टर सर्वशक्तिवान और मुश्किल? टाइटल अपने को क्या देते हो? मुश्किल योगी या सहज योगी? नहीं तो अपना टाइटल चेंज करो कि हम सहज योगी नहीं हैं। कभी सहजयोगी हैं, कभी मुश्किल योगी? और योग है ही क्या? बस, याद करना है ना। और पावरफुल योग के सामने मुश्किल हो ही नहीं सकती। योग लगन की अग्नि है। अग्नि कितना भी मुश्किल चीज़ को परिवर्तन कर देती है। लोहा भी मोल्ड हो जाता है। यह लगन की अग्नि क्या मुश्किल को सहज नहीं कर सकती है? कई बच्चे बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं, बाबा क्या करें वायुमण्डल ऐसा है, साथी ऐसा है। हंस, बगुले हैं, क्या करें पुराने हिसाब-किताब हैं। बातें बहुत अच्छी-अच्छी कहते हैं। बाप पूछते हैं – आप ब्राह्मणों ने कौन सा ठेका उठाया है? ठेका तो उठाया है – विश्व-परिवर्तन करेंगे। तो जो विश्व-परिवर्तन करता है वह अपनी मुश्किल को नहीं मिटा सकता?

तो आज क्या करेंगे? जमा का खाता बढ़ाओ। तो जो कहते हो सहज योगी, वह अनुभव करेंगे। कभी मुश्किल कभी सहज, इसमें मजा नहीं है। ब्राह्मण जीवन है मजे की। संगमयुग है मजे का युग। बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग है। तो चेक करो, अपने तकदीर की तस्वीर नॉलेज के आइने में अच्छी तरह से देखो। आइना तो है ना? या नहीं है? टूट तो नहीं गया है ना? सभी को आइना मिला है? मातायें, आइना मिला है या चोरी हो गया है? पाण्डव तो सम्भालने में होशियार हैं ना? आइना है? हाथ तो अच्छा उठाया। अच्छा है। तकदीर की तस्वीर देखो और सदा अपने तकदीर की तस्वीर देख वाह-वाह का गीत गाओ। वाह मेरी तकदीर! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा परिवार! परिवार भी वाह-वाह है! ऐसे नहीं यह तो बहुत वाह-वाह है, यह थोड़ा ऐसा है! नहीं। वाह मेरा परिवार! वाह मेरा भाग्य! और वाह मेरा बाबा! ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह! हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह! यह भी बोझ उतरता है। अगर ८८ मण से आपका ३-४ मण बोझ उतर जाए तो अच्छा है या हाय-हाय? क्या है? वाह बोझ

उतरा! हाय मेरा पार्ट ही ऐसा है! हाय मेरे को व्याधि छोड़ती ही नहीं है! आप छोड़ो या व्याधि छोड़ेगी? वाह-वाह करते जाओ तो वाह-वाह करने से व्याधि भी खुश हो जायेगी। देखो, यहाँ भी ऐसे होता है ना, किसकी महिमा करते हो तो वाह-वाह करते हैं। तो व्याधि को भी वाह-वाह कहो। हाय यह मेरे पास ही क्यों आई, मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है। प्राप्तियां सामने रखो और हिसाब-किताब सामने रखो, तो वह क्या लगेगा? बहुत छोटी सी चीज़ लगेगी। मतलब तो **ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाए, पॉजिटिव रूप में देखो।** निगेटिव से पॉजिटिव करना तो आता है ना। निगेटिव-पॉजिटिव का कोर्स भी तो कराते हो ना! तो उस समय अपने आपको कोर्स कराओ तो मुश्किल सहज हो जायेगा। मुश्किल शब्द ब्राह्मणों की डिक्शनरी में नहीं होना चाहिए। अच्छा - कोई भी हिसाब है, आत्मा से है, शरीर से है या प्रकृति से है; क्योंकि प्रकृति के यह ॐ तत्व भी कई बार मुश्किल का अनुभव कराते हैं। कोई भी हिसाब-किताब योग अग्नि में भस्म कर लो। समझा क्या करना है? जमा का खाता बढ़ाओ। बोल में भी साधारण बोल नहीं, बोल में भी भिन्न-भिन्न भाव और भावना होती है और बोल द्वारा भाव और भावना का पता पड़ जाता है। तो सदा जो भी बोल बोलो उसमें आत्मिक भाव हो और शुभ व श्रेष्ठ भावना हो। बोल भी और भावना भी। माया की जो भावना है वह है ईर्ष्या, हसद, घृणा... यह माया की भावना है। सदा शुभ भाव और भावना हो। ऐसा है? चेक करना। समय का खज़ाना, बोल का खज़ाना, संकल्पों का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना, ज्ञान का खज़ाना, गुणों का खज़ाना... एक-एक खज़ाने को चेक करो क्योंकि हर खज़ाने का खाता जमा करना है। इन सर्व खज़ानों का खाता भरपूर हो तब कहेंगे फुल मार्क्स अर्थात पास विद् ऑनर। ऐसे नहीं सोचना - एक खज़ाना अगर कम जमा है तो क्या हर्जा है लेकिन पास विद् ऑनर बनने के लिए सर्व खज़ानों में खाता भरपूर हो।

बापदादा के सामने जो आप बैठे हैं सिर्फ उन्हों को नहीं देख रहे हैं। जो भी

बच्चे देश में हैं या विदेश में हैं, सभी को देख रहे हैं। सम्मुख नहीं हैं लेकिन दिल में हैं। आज आप सम्मुख हो, कल और होंगे। लेकिन ऐसे नहीं कि आपको बापदादा नहीं देखते। वह दिल में हैं, आप सम्मुख हो। ऐसे नहीं आप दिल में नहीं हो लेकिन सम्मुख हो उसका महत्त्व है। समझा। अच्छा।

बिज़नेस वाले हाथ उठाओ। बिज़नेस वाले क्या सोचते हैं? खास आपको चांस मिला है। बिज़नेस वालों को बाप से भी बिज़नेस कराओ। सिर्फ खुद किया वह तो अच्छा किया लेकिन औरों को भी बाप से बिज़नेस कराओ क्योंकि आजकल सर्व बिज़नेसमैन टेन्शन में बहुत हैं। बिज़नेस समय अनुसार नीचे जा रहा है। इसलिए जितना भी पैसा है, पैसे के साथ चिंता है – क्या होगा! तो उन्हों को चिंता से हटाए अविनाशी खज़ाने का महत्व सुनाओ। तो जितने भी बिज़नेसमैन आये हैं चाहे छोटा बिज़नेस है, चाहे बड़ा है। लेकिन अपने हमजिन्स कार्य करने वालों को खुशी का रास्ता बताओ। जो भी आप बिज़नेसमैन आये हैं उन्हों को चिंता है? क्या होगा, कैसे होगा, चिंता है? चिंता नहीं है तो हाथ उठाओ। कल कुछ हो जाये तो? बेफिकर बादशाह हैं? बिज़नेसमैन बेफिक्र बादशाह हैं? थोड़ों ने हाथ उठाया? जिसको थोड़ा-थोड़ा फिकर है वह हाथ उठा सकते हो या शर्म आयेगा? बापदादा ने टाइटल ही दिया है - बेफिक्र बादशाह, बेगमपुर के बादशाह। तो जब भी कोई ऐसी बात आये, आयेगी तो ज़रूर लेकिन आप बेगमपुर में चले जाना। बेगमपुर में बैठ जाना तो बादशाह भी हो जायेंगे और बेगमपुर में भी हो जायेंगे। आपने ही आह्वान किया है कि पुरानी दुनिया जाये और नई दुनिया आये, तो जायेगी कैसे? नीचे ऊपर होगी तब तो जायेगी। कुछ भी हो जाए आपको बेफिक्र बनना ही है। आपने ही आह्वान किया है, पुरानी दुनिया खत्म हो। तो पुरानी दुनिया में पुराने मकान में क्या होता है? कभी क्या टूटता है, कभी क्या गिरता है, तो यह तो होगा ही। नथिंगन्यु। ब्रह्मा बाप का यही हर बात में शब्द था - ''नथिंगन्यु।'' होना ही है, हो रहा है और हम बेफिक्र बादशाह। ऐसे बेफिक्र हो? बेफिक्र होंगे तो देवाला भी बच जायेगा और फिक्र में होंगे,

निर्णय ठीक नहीं होगा तो एक दिन में क्या से क्या बन जाते हैं। यह तो जानते ही हो। बेफिक्र होंगे, निर्णय अच्छा होगा तो बच जायेंगे। टचिंग होगी - अभी समय अनुसार यह करें या नहीं करें! इसीलिए फिक्र माना बिज़नेस भी गिरना और अपनी स्थिति भी गिरना। तो सदैव यह याद रखो - बेफिक्र बादशाह हैं। फिक्र की बात भी बदल जायेगी। हिम्मत नहीं हारो, दिलशिकस्त कभी नहीं हो। हिम्मत से बाप की मदद मिलती रहेगी। बाप मदद के लिए बंधा हुआ है लेकिन हिम्मतहीन का मददगार नहीं है। आप सोचेंगे कि बाप की मदद तो मिली नहीं, लेकिन पहले यह सोचो हिम्मत है? हिम्मत बच्चे की मदद बाप की। आधा शब्द नहीं पकड़ो, बाप की मदद तो चाहिए ना! लेकिन हिम्मत रखी? दिलशिकस्त न होकर हिम्मत रखते चलो तो मदद गुप्त मिलती रहेगी। तो बोलो कौन हो? बिज़नेसमैन सभी बोलो कौन हो? बेफिक्र बादशाह हो? यह याद रखना। हिम्मत कभी नहीं छोड़ना, कुछ भी हो जाए मदद मिलेगी। लेकिन आधा नहीं याद करना। पूरा याद रखना। अच्छा। मातायें बिजनेसमैन नहीं हैं? (हैं) तो मातायें भी बेफिक्र बादशाह हैं? नौकर नहीं बन जाना। मालिक, बादशाह बनकर रहना। चिंता है तो उदासी है। उदासी माना दासी बनना। इसलिए बादशाह बनना। अच्छा।

दूसरे हैं - इन्जीनियर और वैज्ञानिक वह हाथ उठाओ। वैज्ञानिकों को बहुत अच्छा अनुभव है। जैसे साइंस दिनप्रतिदिन अति सूक्ष्म, महीन होती जाती है। ऐसे आप साइलेन्स और साइंस - दोनों के अनुभवी हो। तो अपने हमजिन्स को साइलेन्स का महत्त्व सुनाओ। उनका भी कल्याण करो। कल्याण करना आता है ना? साइलेन्स भी एक विज्ञान है, साइलेन्स का विज्ञान क्या है, उसकी इन्हों को पहचान दो। साइलेन्स के विज्ञान से क्या-क्या होता है, यह जानने से साइंस भी ज़्यादा रिफाइन कर सकेंगे क्योंकि हमारी नई दुनिया में भी विज्ञान तो काम में आयेगा ना! लेकिन रिफाइन रूप में होगा। अभी के विज्ञान की इन्वेन्शन में फायदा भी है, नुकसान भी है। लेकिन नई दुनिया में रिफाइन विज्ञान होने के कारण नुकसान का नाम-निशान नहीं होगा। तो ऐसे

जो बड़े-बड़े वैज्ञानिक हैं उन्हों को साइलेन्स का ज्ञान दो। तो फिर अपनी नई दुनिया में रिफाइन विज्ञान का कार्य करने में मददगार बनेंगे। कितनी संख्या है वैज्ञानियों की? जो अभी आये हैं वह कितने हैं? (८३D) फिर जब आओ तो कितने आयेंगे? ८३D ही आयेंगे? क्या करेंगे? एक-एक, एक को लायेंगे? लाना है तो हाथ उठाओ। आपका नाम तो नोट है। बापदादा देखेंगे। एक, एक को तो आप समान बनाकर लाओ। जो लायेंगे वह हाथ उठाओ, इन्हों का टी.वी. निकालो। यह भी एक मौज मनाना है और क्या है? अच्छा– बिज़नेसमैन हाथ उठाओ, इनका भी टी.वी. निकालो।

वैज्ञानिकों के साथ इन्जीनियर भी हैं। इन्जीनियर क्या करेंगे? इन्जीनियर कुछ न कुछ नया बनाते हैं। तो सतयुग में नई दुनिया बनाने के लिए औरों को तैयार करो। आप तो राजा बनेंगे ना! आप थोड़े ही मकान बनाने वाले बनेंगे। तो ऐसी आत्मायें तैयार करो जो नई दुनिया की रचना बहुत अच्छे-से-अच्छी कर सकें। ऐसी इन्जीनियरी करें जो सारे कल्प में ऐसी चीज़ें नहीं हों। चाहे द्वापर कलियुग में बहुत बढ़िया-बढ़िया चीज़ें बनाते हैं लेकिन नई दुनिया में ऐसी आश्चर्यजनक चीज़ें हों जो आजकल की श्रेष्ठ चीज़ों से सर्वश्रेष्ठ हों। ऐसे इन्जीनियर्स को तैयार करो। चलो पूरा ज्ञान नहीं लेवें, रेग्युलर नहीं बनें लेकिन बाप को तो पहचानें। कई ऐसी आत्मायें हैं जो रेग्युलर नहीं बनती हैं लेकिन निश्चय और खुशी में रहती हैं। सम्बन्ध में सहयोगी रहती हैं। ऐसी आत्मायें भी तैयार करो। समझा! बहुत अच्छा। देखो आपका खास पार्ट इस टर्न में रखा है। तो कोई खास कमाल करेंगे ना! अभी रिज़ल्ट देखेंगे – बिज़नेसमैन कितने लाते हैं, इंजीनियर और वैज्ञानिक कितने लाते हैं? संख्या का तो पता चलेगा ना। रिपोर्ट निकलती है ना कि इतनी संख्या बढ़ गई। तो जो विंग के ऊपर हैं उन्हों को एक वर्ष की रिज़ल्ट लिखनी है। यह सब एक वर्ष के बाद तो आयेंगे ना। संख्या देखेंगे कितनी बढ़ी!

हॉस्पिटल के ट्रस्टी – आप सभी क्या कमाल करेंगे? जो पेशेन्ट आवे उसको पेशेन्स देकर दूसरों को लेकर आओ। विदेश से भी लाओ।

अच्छा - तीसरा ग्रुप रूरल - हाथ उठाओ। इसमें मातायें भी हैं, टीचर्स भी हैं। अच्छा आप लोग क्या करेंगे? गाँव-गाँव को महल बनाना। गांव की ऐसी सेवा करो जो सतयुगी दुनिया में वह गाँव महल बन जायें। सभी को नई दुनिया का परिचय दो। गाँव वाले बहुत प्यार से सुनते हैं। बड़े-बड़े लोग तो कम सुनते हैं लेकिन गाँव वाले लोग बहुत प्यार से सुनते हैं और गाँव को बदलकर दिखाओ। जो गवर्मेन्ट को मालूम पड़े कि यह गाँव कितना बदल गया है। बदल सकते हो? कोई ऐसा गाँव हो जिसमें प्रैक्टिकल गवर्मेन्ट के आगे एक प्रूफ दिखाओ। गाँव-गाँव में सेवा तो की है लेकिन इनमें से कोई एक गाँव गवर्मेन्ट को दिखाओ कि देखो इस गाँव में कितना परिवर्तन आया है। ऐसा हो सकता है? (ऐसी सेवा की है) तो वह गवर्मेन्ट तक पहुंचाओ। गवर्मेन्ट के आगे रिकार्ड रखो। देखो - एक बात है, गवर्मेन्ट कहती है कि आप सोशल सेवा नहीं करते। लेकिन आजकल बाम्बे में जो बगीचे बदलकर अच्छे सुन्दर बनाये हैं और बढ़ते जाते हैं। तो किचड़े के स्थान को पार्क बनाना, अनेक आत्माओं के निमित्त बनना, क्या यह देश का सोशल वर्क नहीं है। कितने घरों को मच्छर और जो भी जर्मस हैं उनसे बचाया। सोशल वर्क क्या है? यह सोशल वर्क तो है। तो ऐसा एक्ज़ाम्पल आस-पास वालों का साइन लेकर गवर्मेन्ट को दो। वह लिखकर दें कि इन्होंने बहुत अच्छा काम किया है। बच्चों के लिए खेलने-कूदने का स्थान बनाना, उनकी तन्दरुस्ती बढ़ाना... यह सोशल वर्क नहीं है तो क्या है, तो ऐसे फोटो निकालो, बच्चों के भी फोटो निकालो, बड़ों के भी फोटो निकालो और जितनों का परिवर्तन हुआ है, उनके भी साइन कराओ फिर गवर्मेन्ट को दिखाओ कि हम सोशल वर्क करते हैं या नहीं करते हैं। समझा। ऐसा रिकार्ड तैयार करो। जितने बगीचे मिले हैं, उन सबका रिकार्ड तैयार करो। क्या है गवर्मेन्ट को पता तो पड़ता ही नहीं है और उल्टी बातें बहुत जल्दी फैलती हैं। अच्छी सेवा कम फैलती है। इसलिए यह सोशल वर्क का एक्ज़ाम्पल दिखाओ। जो कहते हैं ना सोशल वर्क नहीं करते उन्हों को यह दिखाओ। कितनी खुशी प्राप्त होती

है। सोशल वर्कर क्या करते हैं? किसका दु:ख दूर करके खुशी देते हैं। उसको सेट करते हैं, आप तो दिमाग को सेट कर देते हो। यह सोशल वर्क नहीं है तो क्या है! तो सेवा बहुत करते हो लेकिन रिकार्ड कम तैयार करते हो। जैसे बाम्बे की अखबारें हैं उसमें डाल सकते हो कि इतनी आत्मायें आती हैं, इतने बच्चे आते हैं उन्हों की खुशी के साधन हैं, उन्हों की तन्दरुस्ती बनती है, ऐसे-ऐसे रिकार्ड तैयार करो। अच्छा। (बाम्बे का कमला नेहरू पार्क भी मिल रहा है) वह भी मिल जायेगा। और आप लोगों को जो ऐसे लैटर मिलते हैं, वह और शहरों में दिखाकर वहाँ भी कर सकते हो। अच्छा।

नये-नये जो पहली बार आये हैं, वह हाथ उठाओ। ड्रामा अनुसार आये तो अभी हैं लेकिन बापदादा का स्लोगन याद है? लास्ट सो फास्ट और फास्ट जाकर फर्स्ट आ सकते हैं। मार्जिन है। फर्स्ट जा सकते हो। लेकिन जमा का खाता ज़्यादा से ज़्यादा इकट्ठा करो। अपना भाग्य याद रहता है ना? विशेष नयों को कह रहे हैं। जिसको भाग्य याद रहता है वह हाथ उठाओ।

अच्छा - जो एक सेकण्ड में अपने संकल्प को जहाँ चाहे, जो सोचना चाहें वही सोच चलता रहे, ऐसे जो समझते हैं, वह हाथ उठाओ। एक सेकण्ड में माइण्ड कण्ट्रोल हो जाए, ऐसे सेकण्ड में हो सकता है? अगर कर सकते हो तो हाथ उठाओ। ऐसे कहने से नहीं, अगर कण्ट्रोल होता है तो हाथ उठाओ? अच्छा जिन्होंने नहीं हाथ उठाया उन्हों को क्या एक मिनट लगता है? या उससे भी ज़्यादा लगता है? अभी यह अभ्यास बहुत ज़रूरी है क्योंकि अन्त के समय यह अभ्यास बहुत काम में आयेगा। जैसे इस शरीर के आरगन्स को, बाँह है, पाँव है, इनको सेकण्ड में जहाँ लेकर जाने चाहो वहाँ ले जा सकते हो ना! ऐसे मन और बुद्धि को भी मेरी कहते हो ना! जब मन के मालिक हो, यह सूक्ष्म आरगन्स हैं, तो इसके ऊपर कण्ट्रोल क्यों नहीं? संस्कार के ऊपर भी कण्ट्रोल होना चाहिए। जब चाहो, जैसे चाहो - जब यह अभ्यास पक्का होगा तब समझो पास विद् ऑनर होंगे। तो बनना लक्ष्मी-नारायण है, तो राज्य को कण्ट्रोल करने के पहले स्व-राज्य अधिकारी

तो बनो तब राज्य अधिकारी बनेंगे। इसका भी साधन यही है कि खजाने जमा करो। समझा। अच्छा - इस वायुमण्डल में, मधुबन में बैठे हो। मधुबन का वायुमण्डल पावरफुल है, इस वायुमण्डल में इस समय मन को कण्ट्रोल कर सकते हो? चाहे मिनट में करो, चाहे सेकण्ड में करो लेकिन कर सकते हो? ऑर्डर दो मन को, बस आत्मा परमधाम निवासी बन जाओ। देखो मन ऑर्डर मानता है या नहीं मानता है? (ड्रिल) अच्छा।

चारों ओर के सर्व खज़ानों के मालिक बच्चों को, सदा मुश्किल को सेकण्ड में परिवर्तन करने वाले सदा सहजयोगी, सदा संकल्प, समय, बोल, कर्म को श्रेष्ठ बनाने वाले, सदा बचत का खाता बढ़ाने वाले, सदा मन के मालिक, मन-बुद्धि-संस्कार को ऑर्डर में चलाने वाले, ऐसे स्व-राज्य अधिकारी बच्चों को, चाहे देश में हैं चाहे विदेश में हैं लेकिन दिल से दूर नहीं हैं, ऐसे चारों ओर के बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

सेवाधारी जो भी सेवा के प्रति आये हैं, विशेष - **यू.पी. का टर्न है।** यू.पी. के जो सेवाधारी आये हैं वह हाथ उठाओ। देखो सेवाधारियों को कितने फायदे हैं। सदा गाया हुआ है, ब्राह्मणों की सेवा महान पुण्य है। भक्ति मार्ग में ८DD या ७DD ब्राह्मणों की सेवा करते हैं और मधुबन में कितने ब्राह्मणों की सेवा करते हो और एक-एक ब्राह्मण की दुआ सेवाधारियों को स्वत: ही मिलती है। कहने की आवश्यकता नहीं है लेकिन जमा हो ही जाती है एक तो दुआओं का खाता जमा होता, दूसरा सेवा के पुण्य का खाता जमा होता, तीसरा ब्राह्मणों के समीप सम्बन्ध में आते हैं और बापदादा से मिलने का एक्स्ट्रा टर्न मिल जाता है। तो सेवा का फल कितना है! सेवाधारी अर्थात् जमा करने वाले। तो बहुत अच्छी सेवा की। दिल से सेवा की और दिलाराम के पास पहुंच गई। यू.पी. वाले ठीक हैं ना! तो जो भी सेवाधारी बनकर आता है उसको प्रत्यक्ष फल मिलता है। भविष्य तो मिलेगा लेकिन वर्तमान समय में भी जमा होता है।

डबल विदेशी भी बहुत बैठे हैं। डबल विदेशी हाथ उठाओ। देखो, डबल विदेशियों को चांस भी बहुत मिलता है। हर ग्रुप में डबल विदेशी हैं। डबल

विदेशियों को कोई भी टर्न में मना नहीं है। तो यह कम भाग्य है क्या? आप सभी जानते हो कि इन्हों का त्याग, इन्हों की हिम्मत और दिल की सफाई पर बापदादा सदा खुश होता है। आप लोग क्या कहते हो? सच्ची दिल तो मुराद हांसिल... तो यह साफ़ और सच्ची दिल वाले हैं। अगर गिरेंगे तो भी सच बतायेंगे, छिपायेंगे नहीं और सच सुनाने से आधा माफ हो जाता है। इसलिए बापदादा डबल विदेशियों को सदा याद करते हैं और सदा यादप्यार देते हैं। कमाल तो है और कमाल करते-करते बापदादा के साथ अपने घर में पहुँच जायेंगे। तो विशेष डबल विदेशियों को पद्मगुणा यादप्यार। ऐसे नहीं भारतवासियों को नहीं है। भारतवासियों को फिर पद्म-पद्मगुणा यादप्यार।

इन्दौर होस्टल की कन्यायें – कन्याओं के लिए गाया हुआ है कि हर एक कन्या ८DD ब्राह्मणों से उत्तम है, क्यों उत्तम है? क्योंकि सेवा कर इतने ब्राह्मणों की दुआ लेनी है। तो कुमारियां बोर्डिंग से निकल क्या करेंगी? क्या लक्ष्य रखा है? सेवा करेंगी? सिर पर ताज रखेंगी या टोकरी रखेंगी? क्या करेंगी? (ताज) नौकरी की टोकरी तो नहीं उठायेंगी? ८DD ब्राह्मणों से उत्तम का अर्थ ही है ८DD ब्राह्मण की दुआयें लेंगी। तो इतनी सेवा करेंगी? अच्छा। एडवांस में मुबारक हो। सभी की दुआयें लेना। अच्छा।

बापदादा पूरे हाल का चक्कर लगाकर सभी बच्चों को दृष्टि देकर वापस स्टेज पर पहुँचे हैं, मोहिनी बहन की तबियत ठीक नहीं हैं, अहमदाबाद से चेकिंग कराकर बापदादा के सामने आई हैं।

है ही ठीक। ठीक थी, ठीक है और ठीक रहेगी। (डाक्टर ने ६-६ दिन की रेस्ट बोली है) बहुत जल्दी ठीक हो गई। हिम्मत रखी तो हिम्मत और मदद से पहुंच गई। यह बीच का चक्र लगाकर आई।

दादियों से – अच्छी सेवा की। बहुत अच्छा है। जो निमित्त हैं उन्हों को समय पर एक्स्ट्रा शक्ति मिल जाती है। देखो आप सब आदि रत्नों के आधार से स्थापना का कार्य चल रहा है। ऐसे है ना? बापदादा तो सदा सर्विसएबुल रत्नों को देखते रहते हैं। ठीक है ना। शरीर का हिसाब है लेकिन

'सूली से काँटा' हो जाता है। परेशान नहीं होते। हिसाब-किताब चुक्तू होता है लेकिन परेशान नहीं होते, शान में रहते हैं। औरों को भी शान याद दिलाते हैं। मालिक हैं ना। शरीर को चलाने की रमज़ (युक्ति) सीख गये हैं। शरीर का भी आपसे प्यार है ना! महारथियों से सबका प्यार है। प्यार है ना। (दादी जी को) देखो कितना काम करती हैं? लेकिन सदा हर्षित। सीखते हो ना। कभी थकावट के चिह्न नहीं होते। यह है बाप समान की निशानी। ब्रह्मा बाबा महारथियों को, विशेष बच्ची को सब वरदान, शक्तियाँ और ज़िम्मेवारी सब देकर गये। आप लोगों के लिए बापदादा ने विशेष इन्हों को अथक बनने का वरदान दिया है। आप सब भी अथक बन विश्व को परिवर्तन कर रहे हैं और करते रहेंगे। अच्छा। पाण्डव भी महान हैं।

ओमशान्ति।

ब्राह्मण अर्थात् अलौकिक।

ब्राह्मण जीवन का महत्त्व बहुत बड़ा है, प्राप्तियाँ बहुत बड़ी हैं, स्व-मान बहुत बड़ा है और संगम के समय पर बाप का बनना, यह बड़े-से-बड़ा पद्मगुणा भाग्य है। इसलिए बापदादा कहते हैं कि हर खज़ाने का महत्त्व रखो।

15-12-99

संकल्प शक्ति के महत्त्व को जान इसे बढ़ाओ और प्रयोग में लाओ

आज ऊँचे ते ऊँचा बाप अपने चारों ओर के श्रेष्ठ बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं क्योंकि सारे विश्व की आत्माओं से आप बच्चे श्रेष्ठ अर्थात् हाइएस्ट हैं। दुनिया वाले कहते हैं हाइएस्ट इन दी वर्ल्ड और वह भी एक जन्म के लिए लेकिन आप बच्चे हाइएस्ट श्रेष्ठ इन दी कल्प हैं। सारे कल्प में आप श्रेष्ठ रहे हैं। जानते हो ना? अपना अनादि काल देखो अनादि काल में भी आप सभी आत्मायें बाप के नजदीक रहने वाले हो। देख रहे हो, अनादि रूप में बाप के साथ-साथ समीप रहने वाले श्रेष्ठ आत्मायें हो। रहते सभी हैं लेकिन आपका स्थान बहुत समीप है। तो अनादि रूप में भी ऊँचे-ते-ऊँचे हो। फिर आओ आदिकाल में सभी बच्चे देव-पदधारी देवता रूप में हो। याद है अपना दैवी स्वरूप? आदिकाल में सर्व प्राप्ति स्वरूप हो। तन-मन-धन और जन चार ही स्वरूप में श्रेष्ठ हैं। सदा सम्पन्न हो, सर्व प्राप्ति स्वरूप हो। ऐसा देव-पद और किसी भी आत्माओं को प्राप्त नहीं होता। चाहे धर्म आत्मायें हैं, महात्मायें हैं लेकिन ऐसा सर्व प्राप्तियों में श्रेष्ठ, अप्राप्ति का नाम-निशान नहीं, कोई भी अनुभव नहीं कर सकता। फिर आओ मध्यकाल में, तो मध्यकाल में भी आप आत्मायें पूज्य बनते हो। आपके जड़ चित्र पूजे जाते हैं। कोई भी आत्माओं की ऐसे विधिपूर्वक पूजा नहीं होती। जैसे पूज्य आत्माओं की विधिपूर्वक पूजा होती है तो सोचो ऐसे विधिपूर्वक और किसकी पूजा होती है! हर कर्म की पूजा होती है क्योंकि कर्मयोगी बनते हो। तो पूजा भी हर कर्म की होती है। चाहे धर्म आत्मायें या महान आत्माओं को साथ में मन्दिर में भी रखते हैं लेकिन विधिपूर्वक पूजा नहीं होती। तो मध्यकाल में भी हाइएस्ट अर्थात् श्रेष्ठ हो। फिर आओ वर्तमान अन्तकाल में, तो अन्तकाल में भी अब संगम पर श्रेष्ठ आत्मायें हो। क्या श्रेष्ठता है? स्वयं बापदादा – परमात्म-आत्मा और आदि-आत्मा अर्थात् बापदादा, दोनों द्वारा पालना भी

लेते हो, पढ़ाई भी पढ़ते हो, साथ में सतगुरु द्वारा श्रीमत लेने के अधिकारी बने हो। तो अनादिकाल, आदिकाल, मध्यमकाल और अब अन्तकाल में भी हाइएस्ट हो, श्रेष्ठ हो। इतना नशा रहता है?

बापदादा कहते हैं इस स्मृति को इमर्ज करो। मन में, बुद्धि में इस प्राप्ति को दोहराओ। जितना स्मृति को इमर्ज रखेंगे उतना स्मृति से रूहानी नशा होगा। खुशी होगी, शक्तिशाली बनेंगे। इतना हाइएस्ट आत्मा बने हैं। यह निश्चय है पक्का? कि हम ही हाइएस्ट, श्रेष्ठ बने थे, बने हैं और सदा बनते रहेंगे। नशा है? पक्का निश्चय है तो हाथ उठाओ। टीचर्स ने भी उठाया।

मातायें तो सदा खुशी के झूले में झूलती हैं, झूलती हैं ना! माताओं को बहुत नशा रहता है, क्या नशा रहता है? हमारे लिए बाप आया है। नशा है ना! द्वापर से सभी ने नीचे गिराया, इसलिए बाप को माताओं पर बहुत प्यार है और खास माताओं के लिए बाप आये हैं। खुश हो रहे हैं, लेकिन सदा खुश रहना। ऐसे नहीं अभी हाथ उठा रहे हैं और ट्रेन में जाओ तो थोड़ा-थोड़ा नशा उतरता जाए, सदा एकरस, अविनाशी नशा हो। कभी-कभी का नशा नहीं, सदा का नशा सदा ही खुशी प्रदान करता है। आप माताओं के चेहरे सदा ऐसे होने चाहिए जो दूर से रूहानी गुलाब दिखाई दो क्योंकि इस विश्व विद्यालय की जो बात सबको अच्छी लगती है, विशेषता दिखाई देती है वह यही कि मातायें रूहानी गुलाब समान सदा खिला हुआ पुष्प हैं और मातायें ही ज़िम्मेवारी उठाए, मातायें इतना बड़ा कार्य कर रही हैं। चाहे महामण्डलेश्वर भी हैं लेकिन वह भी समझते हैं कि मातायें निमित्त बनी हैं और ऐसे श्रेष्ठ कार्य सहज चला रही हैं। माताओं के लिए कहावत है - सच है नहीं, लेकिन कहावत है – दो मातायें भी इकट्ठा कोई कार्य करें, बड़ा मुश्किल है। लेकिन यहाँ कौन निमित्त हैं? मातायें ही हैं ना! जब भी मिलने आते हैं तो क्या पूछते हैं? मातायें चलाती हैं, आपस में लड़ती नहीं हैं? खिटखिट नहीं करती हैं? लेकिन उन्हों को क्या पता कि यह साधारण मातायें नहीं हैं, यह परमात्मा द्वारा बनी हुई आत्मायें, मातायें हैं। परमात्म-वरदान इन्हों को चला रहा है। ऐसे तो नहीं कि

भाई (पाण्डव) समझते हैं कि माताओं का मान है, हमारा नहीं है क्या। आप का भी गायन है, ७ पाण्डव गाये हुए हैं। शक्तियों के साथ, ८ शीतलायें दिखाते हैं तो एक पाण्डव भी दिखाते हैं। और पाण्डवों के बिना मातायें नहीं चला सकती, माताओं के बिना पाण्डव नहीं चला सकते। दोनों भुजायें चाहिए लेकिन माताओं को बहुत गिरा दिया था ना, इसलिए बाप माताओं को जो दुनिया असम्भव समझती है, वह सम्भव करके दिखा रहे हैं। आप खुश हो ना माताओं को देख करके? या नहीं? खुश हैं ना! अगर माताओं को बाप निमित्त नहीं बनाता तो नया ज्ञान, नई सिस्टम होने कारण पाण्डवों को देखकर बहुत हंगामा होता। मातायें ढाल हैं क्योंकि नया ज्ञान है ना। नई बातें हैं। लेकिन बहनों के साथ भाई सदा ही साथ हैं। पाण्डव अपने कार्य में आगे हैं और बहनें अपने कार्य में आगे हैं। दोनों की राय से हर कार्य निर्विघ्न बन चल रहा है।

बापदादा हर रोज़ बच्चों के भिन्न-भिन्न कार्य देखते रहते हैं। नये-नये प्लैन बनते ही रहते हैं। समय तो सबको याद है। याद है? ६६ का चक्कर भी पूरा हो गया ना! क्या सोचते थे, ६६ आ गया, ६६ आ गया। लेकिन आप सबके लिए सेवा करने का वर्ष, निर्विघ्न रहने का वर्ष मिला। देखो ६६ में ही मौन भट्ठियाँ कर रहे हो ना! दुनिया घबराती है और आप, जितना वह घबराते हैं उतना ही आप सभी याद की गहराई में जा रहे हो। मन का मौन है ही – ज्ञान सागर के तले में जाना और नये-नये अनुभवों के रत्न लाना। जो बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है - सबसे बड़ा खज़ाना है जो वर्तमान और भविष्य बनाता है, वह है श्रेष्ठ खज़ाना, श्रेष्ठ संकल्प का खज़ाना। संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है जो आप बच्चों के पास है – श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति। संकल्प तो सबके पास हैं लेकिन श्रेष्ठ शक्ति, शुभ-भावना, शुभ-कामना की संकल्प शक्ति, मन-बुद्धि एकाग्र करने की शक्ति - यह आपके पास ही है। और जितना आगे बढ़ते जायेंगे इस संकल्प शक्ति को जमा करते जायेंगे, व्यर्थ नहीं गंवायेंगे, व्यर्थ गंवाने का मुख्य कारण है –

व्यर्थ संकल्प। व्यर्थ संकल्प, बापदादा ने देखा है मैजारिटी बच्चों के सारे दिन में व्यर्थ अभी भी है। जैसे स्थूल धन को एकानामी से यूज़ करने वाले सदा ही सम्पन्न रहते हैं और व्यर्थ गंवाने वाले कहाँ-न-कहाँ धोखा खा लेते हैं। ऐसे श्रेष्ठ शुद्ध संकल्प में इतनी ताकत है जो आपके कैचिंग पावर, वायब्रेशन कैच करने की पावर, बहुत बढ़ सकती है। यह वायरलेस, यह टेलीफोन.... जैसे यह साइंस का साधन कार्य करता है वैसे यह शुद्ध संकल्प का खज़ाना, ऐसा ही कार्य करेगा जो लण्डन में बैठे हुए कोई भी आत्मा का वायब्रेशन आपको ऐसे ही स्पष्ट कैच होगा जैसे यह वायरलेस या टेलीफोन, टी.वी. यह जो भी साधन हैं....कितने साधन निकल गये हैं, इससे भी स्पष्ट आपकी कैचिंग पावर, एकाग्रता की शक्ति से बढ़ेगी। यह आधार तो खत्म होने ही हैं। यह सब साधन किस आधार पर हैं? लाइट के आधार पर। जो भी सुख के साधन हैं मैजारिटी लाइट के आधार पर हैं। तो क्या आपकी आध्यात्मिक लाइट, आत्म लाइट यह कार्य नहीं कर सकती! जो चाहो वायब्रेशन नजदीक के, दूर के कैच कर सकेंगे। अभी क्या है, एकाग्रता की शक्ति मन-बुद्धि दोनों ही एकाग्र हो तब कैचिंग पावर होगी। बहुत अनुभव करेंगे। संकल्प किया - नि:स्वार्थ, स्वच्छ, स्पष्ट वह बहुत क्विक अनुभव करायेगा। साइलेन्स की शक्ति के आगे यह साइन्स झुकेगी। अभी भी समझते जाते हैं कि साइंस में भी कोई मिसिंग हैं जो भरनी चाहिए। इसलिए बापदादा फिर से अण्डरलाइन करा रहा है कि **अन्तिम स्टेज, अन्तिम सेवा - यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट सेवा करायेगी। इसीलिए संकल्प शक्ति के ऊपर और अटेन्शन दो। बचाओ, जमा करो। बहुत काम में आयेगी। प्रयोगी इस संकल्प की शक्ति से बनेंगे।** साइंस का महत्त्व क्यों है? प्रयोग में आती है तब सब समझते हैं हाँ साइंस अच्छा काम करती है। तो साइलेन्स की पावर का प्रयोग करने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और एकाग्रता का मूल आधार है - मन की कण्ट्रोलिंग पावर, जिससे मनोबल बढ़ता है। मनोबल की बड़ी महिमा है, यह रिद्धि-सिद्धि वाले भी मनोबल द्वारा अल्पकाल के

चमत्कार दिखाते हैं। आप तो विधिपूर्वक, रिद्धि-सिद्धि नहीं, विधिपूर्वक कल्याण के चमत्कार दिखायेंगे जो वरदान हो जायेंगे, आत्माओं के लिए यह संकल्प शक्ति का प्रयोग वरदान सिद्ध हो जायेगा। तो पहले यह चेक करो कि मन को कण्ट्रोल करने की कण्ट्रोलिंग पावर है? सेकण्ड में जैसे साइन्स की शक्ति, स्विच के आधार से, स्विच आन करो, स्विच आफ करो - ऐसे सेकण्ड में मन को जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो, उतना कण्ट्रोल कर सकते हैं? बहुत अच्छे-अच्छे स्वयं प्रति भी और सेवा प्रति भी सिद्धि रूप दिखाई देंगे। लेकिन बापदादा देखते हैं कि संकल्प शक्ति के जमा का खाता अभी साधारण अटेन्शन है। जितना होना चाहिए उतना नहीं है। संकल्प के आधार पर बोल और कर्म ऑटोमेटिक चलते हैं। अलग-अलग मेहनत करने की ज़रूरत ही नहीं है, आज बोल को कण्ट्रोल करो, आज दृष्टि को अटेन्शन में लाओ, मेहनत करो, आज वृत्ति को अटेन्शन से चेंज करो। **अगर संकल्प शक्ति पावरफुल है तो यह सब स्वत: ही कण्ट्रोल में आ जाते हैं। मेहनत से बच जायेंगे। तो संकल्प शक्ति का महत्त्व जानो।**

यह भट्ठियां विशेष इसीलिए कराई जाती हैं, आदत पड़ जाए। यहाँ की आदत भविष्य में भी अटेन्शन दे करते रहें तब अविनाशी हो। समझा। क्या महत्व है? आपके पास बड़ा ऊँचे-ते-ऊँचा खज़ाना बाप ने दिया है। यह श्रेष्ठ संकल्प, शुभ-भावना, शुभ-कामना के संकल्प का खज़ाना है? सबको बाप ने दिया है लेकिन जमा नम्बरवार करते हैं और प्रयोग में लाने की शक्ति भी नम्बरवार है। अभी भी शुभ-भावना वा शुभ-कामना इसका प्रयोग किया है? विधि पूर्वक करने से सिद्धि का अनुभव होता है? अभी थोड़ा-थोड़ा होता है। आखिर आपके संकल्प की शक्ति इतनी महान हो जायेगी - जो सेवा में मुख द्वारा सन्देश देने में समय भी लगाते हो, सम्पत्ति भी लगाते हो, हलचल में भी आते हो, थकते भी हो..लेकिन श्रेष्ठ संकल्प की सेवा में यह सब बच जायेगा। बढ़ाओ। इस संकल्प शक्ति को बढ़ाने से प्रत्यक्षता भी जल्दी होगी। अभी ६७-६८ वर्ष हो गये हैं, इतने समय में कितनी आत्मायें बनाई हैं?

६ लाख भी पूरे नहीं हुए हैं। और सारे विश्व को सन्देश पहुँचाना है तो कितनी करोड़ आत्मायें हैं? अभी तक भी भगवान इन्हों का टीचर है, भगवान इन्हों को चला रहा है, करावनहार परमात्मा करा रहा है...यह स्पष्ट नहीं हुआ है। अच्छा कार्य है और श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं यह आवाज़ तो है लेकिन करावनहार अभी भी गुप्त है। तो यह संकल्प-शक्ति से हर एक के बुद्धि को परिवर्तित कर सकते हो। चाहे अहो प्रभू कहके प्रत्यक्ष हो, चाहे बाप के रूप में प्रत्यक्ष हो। तो बापदादा अभी भी फिर से अटेन्शन दिलाता है कि संकल्प शक्ति को बढ़ाओ और प्रयोग में लाते रहो। समझा।

अच्छा - आज माताओं का चांस है, एक माताओं का ग्रुप और मेडीसिन (मेडिकल) वाले, दो वर्ग हैं। मातायें क्या कमाल करेंगी? मेम्बर तो बन गई? महिला वर्ग की मेम्बर हो, अच्छी बात है ना! लेकिन जो भी मेम्बर बने हैं, अच्छा किया है। अभी आप सबकी लिस्ट गवर्मेन्ट को भेजेंगे, क्यों भेजेंगे? डरना नहीं। इनकमटैक्स वाले नहीं आयेंगे आपके पास। इसीलिए भेजेंगे कि यह सब मातायें अभी जगत मातायें बन, जगत को सुधारेंगी। यह कार्य करेंगी ना? तो गवर्मेन्ट को आपका नाम भेजें कि इतनी मातायें दुनिया को स्वर्ग बनाने वाली हैं? भेजें, हाथ उठाओ, डरते तो नहीं हो। डरना नहीं लेकिन यह ध्यान रखना कि अगर आपकी ऐसी इन्क्वायरी करें तो पहले आपका घर स्वर्ग बना है क्योंकि पहले घर फिर विश्व। तो कोई भी माता के पास आकर देखे तो घर में सुख-शान्ति है? तो दिखाई देगा, घर स्वर्ग बनासर? या विश्व को स्वर्ग बनायेंगी, घर को नहीं। पहले घर को बनायेंगी तभी दूसरों पर भी प्रभाव पड़ेगा। नहीं तो कहेंगे घर में कलह लगा पड़ा है, स्वर्ग कहाँ है। तो इसीलिए माताओं को ऐसा वायुमण्डल बनाना है जो कोई भी देखे तो यही दिखाई दे कि माताओं ने परिवर्तन अच्छा किया है। अच्छा जो मेम्बर हैं वह हाथ उठाओ। कितने मेम्बर हैं? (एक हज़ार आये हैं) एक हज़ार भी बहुत हैं। तो जिन्होंने हाथ उठाया मेम्बर हैं, उन्हों के घर में सुख-शान्ति है? हाँ, वह हाथ उठाओ। खड़ी हो जाओ। समझ में आया या

ऐसे ही खड़ी हो गई। घर स्वर्ग है? घर में शान्ति है? अच्छा - इन्हों का फोटो निकालो। अच्छा है।

आपकी टीचर को आपके घर में भेजें देखने के लिए। वैसे तो हिम्मत वाली हैं, कोई ने समझा है, कोई ने नहीं भी समझा है। अच्छा है। अगर कोई भी थोड़ी खिटखिट हो तो अभी जाकर पहले घर को ठीक करना फिर विश्व की सेवा कर सकेंगी। ठीक है ना। जिन्होंने नहीं हाथ उठाया वह भी करना - शुभ-भावना से, जवाब नहीं देना, क्रोध नहीं करना, इससे भी फर्क पड़ जाता है। देखो यज्ञ की हिस्ट्री में ऐसे बहुत दृष्टान्त हैं, बहुत मारते थे, मारते हैं ना। तो बहुत माताओं की शुभ-भावना से सेवा करने से वह बाप के बच्चे बन गये। तो आप भी सोचेंगी कि हमारे घर में तो लड़ाई होती है, मारते भी हैं, यह होता है वह होता है लेकिन जब कोई बदल सकते हैं तो आप नहीं बदल सकती हो! शुभ-भावना और अपनी चलन परिवर्तन हो जाती तो वह भी नर्म हो जाते हैं। गर्म नहीं होते, नर्म हो जाते हैं। इसलिए मातायें पहले अपने घरों को, बच्चों को ठीक करो। अच्छा नहीं मानते हैं लेकिन प्यार से चलें, ज्ञान की ग्लानी नहीं करें, इतना तो हो सकता है ना। चलो क्रोधी हैं, क्या भी हैं, आदतें खराब हैं लेकिन यह तो कहें कि माता जी बहुत अच्छी हैं। हम ऐसे हैं लेकिन माता अच्छी है। इतना प्रभाव तो हो। बदली होना चाहिए ना। फिर देखो सेवा कितनी फैलती है। ठीक है मातायें। बहुत अच्छा, देखो आपके वर्ग को भी चांस मिला है ना। तो लक्की हो गई ना।

अच्छा - अभी है **मैडीकल वर्ग।** हाथ उठाओ। ग्लोबल हॉस्पिटल वाले भी हाथ उठाओ, वह भी मेडिकल विंग है। डबल विदेशियों में कोई हैं। मैडीकल विंग बहुत सहज सेवा कर सकता है, क्यों? जब पेशेन्ट आते हैं, आपके पास तो पेशेन्ट ही आयेंगे। तो पेशेन्ट हमेशा डाक्टर को भगवान का रूप समझते हैं और भावना भी होती है। अगर डाक्टर किसको कहता है कि यह चीज़ नहीं खानी है, तो डर के मारे नहीं खायेंगे और कोई गुरु कहेगा तो भी नहीं मानेंगे। तो मैडीकल वालों को सहज सेवा का साधन है जो भी आवे

उनको समय मुकरर करना पड़ता है, क्योंकि काम के समय तो आप कुछ कर नहीं सकते, लेकिन कोई ऐसा विधि बनाओ जो पेशेन्ट थोड़ा भी इन्ट्रेस्टेड हो, उनको एक टाइम बुलाकर और उन्हों को ८३ मिनट आधा घण्टा भी परिचय दो तो क्या होगा, आपकी सेवा बढ़ती जायेगी। सन्देश देना वह और बात है, सन्देश से खुश होते हैं लेकिन राजयोगी नहीं बनते हैं। सन्देश आप लोगों ने कितने बार दिया है। अभी भी देखो यात्रायें निकाल रहे हो ना! तो सन्देश कितनों को मिलेगा। कोई ने पर्चे छपाये है, कोई ने कोई रूपरेखा रखी है, फंक्शन रखा है, लेकिन जब तक थोड़ा टाइम भी किसको अनुभव नहीं होता तब तक स्टूडेन्ट नहीं बन सकता। आप देखो जो भी ज्यादा रिजल्ट निकलती है सेवा की, जो योग शिविर करते हैं और एक सप्ताह सम्पर्क में आते हैं, योग द्वारा कोई अनुभव कराते हैं तो वह रेग्युलर बनते हैं। तो आप लोग भी कोई ऐसी विधि बनाओ, जो स्टूडेन्ट बनें। क्योंकि ६ लाख जो बनेंगे तो सिर्फ सन्देश वाले नहीं, ६ लाख सतयुग की पहली प्रजा है। तो सिर्फ सन्देश वाले नहीं, रेग्युलर कुछ न कुछ अनुभूति करने वाले बनेंगे। तो ऐसी विधि बनाओ। सन्देश वाले भी चाहिए, क्योंकि लास्ट में ३३ करोड़ देवतायें कहते हैं। कलियुग अन्त तक वह भी चाहिए लेकिन पहले ६ लाख तो तैयार करो। आप जायेंगे तो प्रजा पीछे आयेगी क्या! प्रजा भी तो चाहिए जिस पर राज्य करो। तो पहले कुछ न कुछ अनुभव कराओ। जिसको कोई भी अनुभव होता है वह छोड़ नहीं सकते हैं। बाकी काम तो अच्छा है, किसके दुख को दूर करना। कार्य तो बहुत अच्छा करते हो, लेकिन सदा के लिए नहीं करते हो। दवाई खायेंगे तो बीमारी हटेगी, दवाई बन्द तो बीमारी फिर से आ जाती है। तो ऐसी दवाई दो, जो बीमारी का नाम निशान नहीं हो, वह है मेडीटेशन। फिर भी डाक्टर्स या नर्सेज या कोई भी काम करने वाले चाहिए जरूर। तो बापदादा खुश होते हैं। जब डाक्टर्स इक्ट्ठे होते हैं तो बापदादा भी खुश होते हैं कि ब्राह्मण परिवार में भी काम में आयेंगे ना। जितना समय नाज़ुक आयेगा, उतनी बीमारियां भी तो बढ़ेंगी ना। तो डाक्टर्स तो अच्छे

अच्छे चाहिए। तो डाक्टर्स से बापदादा पूछते हैं - कि मैडीकल कार्य में तो अच्छे हो लेकिन 'मैडीसिन और मैडीटेशन' – आप डाक्टर्स का दोनों में बैलेन्स है? जितना इस कार्य में बिज़ी हो और प्रोग्रेस करते जाते हो, इतना ही मैडीटेशन में भी बढ़ता जाता है। बढ़ता है? जो समझते हैं हमारा बैलेन्स रहता है, मैडीटेशन और मैडीसिन का काम करने में, वह हाथ उठाओ। बैलेन्स है? इन्हों का भी फोटो निकालो। यह सब काम में आने वाले हैं इसीलिए आपका फोटो निकाल रहे हैं। अच्छा।

बापदादा को हर वर्ग का महत्त्व है क्योंकि जैसे शरीर में एक अंग भी नहीं हो, कम हो तो कमी महसूस होती है ना। ऐसे यह हर वर्ग बहुत-बहुत महत्त्वपूर्ण है। तो डाक्टर्स का वर्ग भी बापदादा को सेवाधारी ग्रुप देखने में आता है। सिर्फ थोड़ा समय इस सेवा को भी देते रहो। कई डाक्टर्स कहते हैं हमको फुर्सत ही नहीं होती है। फुर्सत नहीं होती होगी फिर भी कितने भी बिज़ी हों, अपना एक कार्ड छपा के रखो, जिसमें यह इशारा हो, अट्रेक्शन का कोई स्लोगन हो, तो और आगे सफा चाहते हो तो यह यह एड्रेसेज़ हैं, जहाँ आप रहते हो वहाँ के सेन्टर्स की एड्रेस हो। यहाँ जाकर अनुभव करो, कार्ड तो दे सकते। जब पर्चा लिखकर देते हो यह दवाई लेना, यह दवाई लेना। तो पर्चा देने के समय यह कार्ड भी दे दो। हो सकता है कोई कोई को तीर लग जाए क्योंकि डाक्टरों की बात मानते हैं और टेन्शन तो सभी को होता है। एक प्रकृति की तरफ से टेन्शन, परिवार की तरफ से टेन्शन और अपने मन की तरफ से भी टेन्शन। तो टेन्शन फ्री लाइफ की दवाई यह है, ऐसा कुछ उसको अट्रेक्शन की छोटी सी बात लिखो तो क्या होगा, आपकी सेवा के खाते में तो जमा हो जायेगा ना। ऐसे कई करते भी हैं, जो नहीं करते हैं वह करो। डबल डाक्टर हो सिंगल थोड़ेही हो। डबल डाक्टर हो तो डबल सेवा करो। सब अपने अपने स्थान पर सेवा में ठीक हो, कोई खिटखिट तो नहीं है? सब ठीक हो? अच्छा। ठीक नहीं वाले तो उठायेंगे नहीं, शर्म आयेगा ना। लेकिन डबल सेवा से लौकिक सेवा भी ठीक हो जाती है क्योंकि सेवा का भी बल

है, जैसे योग का बल है, ज्ञान का बल है, दिव्य गुणों का बल है, धारणा का बल है...वैसे ही सेवा का भी बल है। चार ही सब्जेक्ट में 100-100 मार्क्स हैं। तो चार ही सब्जेक्ट वा चार ही बल अगर जमा हो जाता है तो मार्क्स तो बढ़ जायेंगी ना। चलो कोई में 90 हो, कोई में 29 हो लेकिन टोटल में तो बढ़ जायेगा ना। तो चार ही सब्जेक्ट में मार्क्स जमा करते चलो। यह नहीं सोचो कि इसमें तो थोड़ी हैं, कई बच्चे जवाब देते हैं। बाप कहते हैं ना चार्ट रखो तो कहते हैं चार्ट रखने की कोशिश की, उस दिन चार्ट ही खराब था इसलिए लिखा ही नहीं। है तो बहाना। अच्छा चार्ट खराब है और ही लिखने से सुधरेगा ना। बातें बनाने में तो होशियार हैं। तो समझा। डाक्टर्स को फ़र्स्ट नम्बर आना है या पीछे पीछे आना है। फ़र्स्ट आयेंगे ना। तो फ़र्स्ट आने के लिए यह अटेन्शन रखो, मार्क्स बढ़ाओ क्योंकि वहाँ सतयुग में तो डाक्टर्स बनना ही नहीं है। राजा बनना है ना। राजयोगी हो। तो राजयोगी हो, राजा बनना है तो अटेन्शन भी रखना पड़ेगा। अच्छा।

जो हार्ट का कोर्स कर रहे हैं, वह हाथ उठाओ। हार्ट तो ठीक है ना। डाक्टर कहाँ है? *(सतीष गुप्ता को)* अच्छा है अगर सहज साधन से ठीक हो जाता है, तो डबल फायदा है। दवाई भी है और मैडीटेशन भी है। तो डबल खाता एक चुक्तू होता है, एक जमा होता है, अच्छा फायदा है। अगर समझते हैं बहुत अच्छा है तो एक हाथ उठाओ। यह भी अच्छा रिसर्च है। ऐसे ही ठीक हो जाएँ तो अच्छा है ना! यह भी देखो कोई भी सर्च करते हैं तो यह भी क्या है? संकल्प शक्ति से ही इन्वेन्शन होती है। कोई भी इन्वेन्शन का आधार एकाग्रता से संकल्प शक्ति होती है। इसलिए इन्हों को तो बहुत अच्छा चांस मिल जाता है। मधुबन भी मिल जाता, बीमारी भी खत्म हो जाती और मैडीटेशन में भी बढ़ते जाते। अच्छा।

बाम्बे के सेवाधारी उठो। यह सेवा का चांस अच्छा लगता है? इसी बहाने से सेवा से ब्राह्मणों की पहचान मिलती है। ब्राह्मण परिवार में परिचय हो जाता है और बेहद में आने का चांस है। सेवा का बल भी कम नहीं है। देखो

जो भी पुराने, जिसको दादियां कहते हो, इन्हों में एक्स्ट्रा बल है। किसका बल है? सेवा का। (खाँसी आई) बाजा खराब हो जाता है ना!

और स्थापना में सेवा की है। आप सब जो यहाँ बैठे हो वह आदि में, इन्हों की मेहनत, सहनशक्ति, त्याग वृत्ति, इन्हों का फल आप हो। इन्हों को बल मिला आपको फल मिला। सभी की हिस्ट्रियां तो सुनी हैं ना। क्या नहीं त्याग किया! आप तो बने बनाये आधार पर आ गये हो। मक्खन इन्होंने निकाला आप खाने पर आ गये। अच्छा लगता है ना। आदि के पाण्डव भी हैं, उन्होंने भी त्याग किया है। अभी भी देखो जहाँ भी प्रोग्राम होता है, अभी तक भी कहते कोई दादियां आ जाएँ। तो दादियों का त्याग का भाग्य तो है ना। त्याग की हिस्ट्रियां तो, कहानियां तो बहुत हैं ना। अभी भी सेवाधारी सेवा चारों ओर करने वाले बहुत हैं, यह आदि हैं और आप अभी के सेवाधारी भी अच्छे अच्छे हैं। कितने-कितने सेन्टर्स खोले हैं? बापदादा तो एक-एक की महिमा करना शुरू करे तो कितनी रातें लग जाएं! और एक-एक की महिमा है, हर एक की विशेषता है और रहेगी। अच्छा।

जो बापदादा ने अभ्यास सुनाया, मन सेकण्ड में एकाग्र हो जाए, क्योंकि समस्या अचानक आती है और उसी समय अगर मनोबल है, तो समस्या समाप्त हो जाती है लेकिन समस्या एक पढ़ाई पढ़ाने वाली बन जाती है। इसलिए सभी मन बुद्धि को अभी-अभी एकाग्र करो। देखो होता है। (ड्रिल) ऐसे सारे दिन में अभ्यास करते रहो। अच्छा।

चारों ओर की श्रेष्ठ आत्माओं को, आदि मध्य और अन्त में श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाली आत्माओं को, सदा अपने श्रेष्ठ संकल्प की विधि को अनुभव करने वाले, सदा सहज योगी के साथ-साथ प्रयोगी बनने वाले, सदा संकल्प की शक्ति द्वारा सर्व शक्तियों को बढ़ाने वाले, मन और बुद्धि पर नियन्त्रण रखने वाले, सदा प्रयोगी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

देश विदेश के बच्चों को भी बापदादा देख रहे हैं। संकल्प द्वारा जो यादप्यार या रूह-रूहान करते हैं वह बापदादा के पास पहुँच जाता है। अभी भी जो साइन्स के बल द्वारा सुन रहे हैं, उन सभी बच्चों को हर देश के एक

एक बच्चे को यादप्यार। जनक बच्ची को भी विशेष बापदादा यादप्यार दे रहे हैं क्योंकि मन से यहाँ है, तन से वहाँ है। तो सभी को, एक-एक को विशेष यादप्यार। अच्छा, योग भट्ठी का प्रोग्राम बहुत अच्छा चल रहा है।

हाल में सभी भाई-बहनों को दृष्टि देने के पश्चात् बापदादा के सामने सभी दादियां बैठी हैं

सदा अपने को बापदादा के नयनों के नूर समझते हो ना? नयनों में सदा समाये हुए, नयनों में समाने से सदा ही दृष्टि में समाये रहेंगे। यह भी बाप और बच्चों को संगमयुग के सुहेज हैं। मिलना, सुनना, खाना पीना, यह संगम के सुहेज हैं। ऐसे ही सुहेज मनाते-मनाते अपने घर चले जायेंगे। फिर राज्य में आयेंगे। ब्रह्मा बाप के साथ राज्य करना। अच्छा है। दुनिया वाले सोचते रहते और आप सदा मनाते रहते। कोई सोच नहीं है, क्या होगा, कैसे होगा। किसी प्रकार का सोच नहीं है। अच्छा।

जयन्ती बहन से – यह आ गई। अच्छा पार्ट मिला है। एक देश से दूसरे देश में, दूसरे से तीसरे, उड़ते रहते, उड़ाते रहते। अच्छा। बापदादा खुश है। ठीक है।

दादियों से – आप लोगों के सहयोग से ही सारा कारोबार चल रहा है। सहयोगी विशेष भुजायें हैं। अच्छा है, ग्रुप अच्छा मिला है। (मोहिनी बहन से) ग्रुप में हो ना। सब साथी हैं। सबके साथ से कार्य चल रहा है। पाण्डव भी साथी अच्छे मिले हैं। कम्पनी है ना यह भी। तो अच्छी कम्पनी के कारोबार सम्भालने वाले भी हैं, सेवाधारी भी हैं, सबका हाथ हैं। ऐसे नहीं फ़ारेन में हैं तो यज्ञ में हाथ नहीं है। एक-एक बच्चे का हाथ यज्ञ सेवा में लगा हुआ है। चाहे कहाँ भी रहते हो, देश में रहते हो या विदेश में लेकिन आप एक-एक ब्राह्मण के हाथ से यज्ञ चल रहा है। यज्ञ रचने वाले ब्राह्मण हो। समझते हो ना हम यज्ञ रचने वाले हैं? बालक सो मालिक हैं। अच्छा।

p p p

31-12-99

नई सदी में अपने चलन और चेहरे से फ़रिश्ते स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

आज बापदादा अपने परमात्म-पालना के अधिकारी बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। कितने भाग्यवान हैं जो स्वयं परमात्मा की पालना में पल रहे हैं। दुनिया वाले कहते हैं कि हमें परम आत्मा पाल रहा है, लेकिन आप थोड़ी सी विशेष आत्मायें प्रैक्टिकल में पल रहे हो। परमात्म-पालना है, परमात्म-श्रीमत है, उसी श्रीमत से चल रहे हो, पल रहे हो। ऐसे अपने को विशेष आत्मायें अनुभव करते हो? अपनी महानता को जानते हो? वर्तमान समय तो ब्राह्मण आत्मायें महान हैं ही, और भविष्य में भी सर्व श्रेष्ठ महान हो। द्वापर में भी आपके जड़ चित्र इतने महान बनते हैं जो कोई भी चित्रों के आगे जायेगा तो नमन करेगा। इतनी आपकी महानता है जो आज दिन तक अगर किसी भी आत्मा को बनावटी देवता बना देते, लक्ष्मी-नारायण बनायेंगे, श्रीराम बनायेंगे, तो जब तक वह आत्मा देवता का पार्ट बजाता है, तो उस आत्मा को जानते हुए भी कि यह साधारण मनुष्य है, लेकिन जब देवता रूप का पार्ट बजाते हैं तो उस साधारण आत्मा को भी नमन करेंगे। तो आपके रूप की महानता तो है लेकिन नामधारी आत्माओं को भी महान समझते हैं। तो ऐसी महानता अनुभव करते हो? जानते हो, समझते हो वा इमर्ज रूप में अपने को अनुभव करते हो? क्योंकि मूल आधार ही है – अनुभव करना।

बापदादा सभी बच्चों को अनुभवी मूर्त बनाते हैं। सिर्फ सुनने वा जानने वाले नहीं। अनुभव का तो हर एक के चेहरे से, चलन से पता पड़ जाता है। चाल से उसके हाल का पता पड़ जाता है। तो सोचो हमारी चाल क्या है? ब्राह्मण चाल है? ब्राह्मण अर्थात् सदा सम्पन्न आत्मा। शक्तियों से भी सम्पन्न, गुणों से भी सम्पन्न... तो ऐसी चाल है? आपके चेहरे से दिखाई देता है कि यह साधारण होते हुए भी अलौकिक है? आप सबकी दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन्स अलौकिक अनुभव करते हैं? जब लास्ट जन्म तक आपकी दिव्यता, महानता

जड़ चित्रों से भी अनुभव करते हैं, तो वर्तमान समय चैतन्य श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा अनुभव होता है? जड़ चित्र तो आपके ही हैं ना!

अमृतवेले से लेकर हर चलन को चेक करो - हमारी दृष्टि अलौकिक है? चेहरे का पोज़ सदा हर्षित है? एकरस, अलौकिक है वा समय प्रति समय बदलता रहता है? सिर्फ योग में बैठने के समय वा कोई विशेष सेवा के समय अलौकिक स्मृति वा वृत्ति रहती है व साधारण कार्य करते हुए भी चेहरा और चलन विशेष रहता है? कोई भी आपको देखे - कामकाज में बहुत बिज़ी हो, कोई हलचल की बात भी सामने हो लेकिन आपको अलौकिक समझते हैं? तो चेक करो कि बोल-चाल, चेहरा साधारण कार्य में भी न्यारा और प्यारा अनुभव होता है? कोई भी समय अचानक कोई भी आत्मा आपके सामने आ जाए तो आपके वायब्रेशन से, बोल-चाल से यह समझेंगे कि यह अलौकिक फ़रिश्ते हैं? क्योंकि आज का दिन संगम का दिन है, पुराना जा रहा है, नया आ रहा है। तो क्या नवीनता विश्व के आगे दिखाई दे? अन्दर याद रहता है वा समझते हैं, वह बात अलग है लेकिन स्थापना के समय को सोचो - कितना समय स्थापना का बीत गया! बीते हुए समय के प्रमाण बाकी कितना समय थोड़ा रहा हुआ है? तो क्या अनुभव होना चाहिए? बापदादा जानते हैं कि बहुत अच्छे-अच्छे पुरुषार्थी, पुरुषार्थ भी कर रहे हैं, उड़ भी रहे हैं लेकिन बापदादा इस ७०वीं सदी में नवीनता देखने चाहते हैं। सब अच्छे हो, विशेष भी हो, महान भी हो लेकिन **बाप की प्रत्यक्षता का आधार है - साधारण कार्य में रहते हुए भी फरिश्ते की चाल और हाल हो।** बापदादा यह नहीं देखने चाहते कि बात ऐसी थी, काम ऐसा था, सरकमस्टांश ऐसे थे, समस्या ऐसी थी, इसीलिए साधारणता आ गई। फ़रिश्ता स्वरूप अर्थात् स्मृति स्वरूप में हो, साकार रूप में हो। सिर्फ समझने तक नहीं, स्मृति तक नहीं, स्वरूप में हो। ऐसा परिवर्तन किसी समय भी, किसी हालत में भी अलौकिक स्वरूप अनुभव हो। ऐसे है या थोड़ा बदलता है? जैसी बात वैसा अपना स्वरूप नहीं बनाओ। बात आपको क्यों बदले, आप बात को बदलो। बोल आपको

बदले या आप बोल को बदलो? परिवर्तन किसको कहा जाता है? प्रैक्टिकल लाइफ का सैम्पल किसको कहा जाता है? जैसा समय, जैसा सरकमस्टांश वैसे स्वरूप बने - यह तो साधारण लोगों का भी होता है। लेकिन फ़रिश्ता अर्थात् जो पुराने या साधारण हाल-चाल से भी परे हो।

अभी आपकी टॉपिक है ना – ''समय की पुकार''। तो अभी समय की पुकार आप विशेष महान आत्माओं के प्रति यही है कि अभी फ़रिश्ता अर्थात् अलौकिक जीवन स्वरूप में दिखाई दे। क्या यह हो सकता है? टीचर्स बोलो - हो सकता है? कब होगा? हो सकता है तो बहुत अच्छी बात है ना, कब होगा? एक साल चाहिए, दो हज़ार पूरा हो जाए? जो समझते हैं कुछ समय तो चाहिए चलो एक साल नहीं, ६ मास, ६ मास नहीं तो ३ मास, चाहिए? इसमें हाथ नहीं उठाते? आपका स्लोगन क्या है? याद है? ''अब नहीं तो कब नहीं''। यह स्लोगन किसका है? ब्राह्मणों का है या देवताओं का है? ब्राह्मणों का ही है ना! तो **इस नई सदी में बापदादा यही देखने चाहते हैं कि कुछ भी हो जाए लेकिन अलौकिकता नहीं जाए।** इसके लिए सिर्फ चार शब्दों का अटेन्शन रखना पड़े, वह क्या? वह बात नई नहीं है, पुरानी है, सिर्फ रिवाइज़ करा रहे हैं।

एक बात – शुभ-चिंतक। **दूसरा** – शुभ-चिंतन, **तीसरा** – शुभ-भावना, यह भावना नहीं कि यह बदले तो मैं बदलूं। उसके प्रति भी शुभ-भावना, अपने प्रति भी शुभ-भावना और **चौथा** – शुभ श्रेष्ठ स्मृति और स्वरूप। बस एक 'शुभ' शब्द याद कर लो, इसमें ४ ही बातें आ जायेंगी। बस हमको सबमें शुभ शब्द स्मृति में रखना है। यह सुना तो बहुत बारी है। सुनाया भी बहुत बारी है। अब और स्वरूप में लाने का अटेन्शन रखना है। बापदादा जानते हैं कि बनना तो इन्हों को ही है। और जो आने वाले भी हैं वह साकार रूप में तो आप लोगों को ही देखते हैं।

आज वर्ष के अन्त का दिन है ना! तो बापदादा ने मैजॉरिटी बच्चों का वर्ष का पोतामेल देखा। क्या देखा होगा? मुख्य एक कारण देखा। बापदादा

ने देखा कि 'मिटाने और समाने' की शक्ति कम है। मिटाते भी हैं, उल्टा देखना, सुनना, सोचना, बीता हुआ भी मिटाते हैं लेकिन जैसे आप कहते हो ना कि एक है – कान्सेस, दूसरा है – सबकान्सेस। मिटाते हैं लेकिन मन की प्लेट कहो, स्लेट कहो, कागज़ कहो, कुछ भी कहो, पूरा नहीं मिटाते। क्यों नहीं मिटा सकते? उसका कारण है - समाने की शक्ति पावरफुल नहीं है। समय अनुसार समा भी लेते लेकिन फिर समय पर निकल आता। इसलिए जो चार शब्द बापदादा ने सुनाये, वह सदा नहीं चलते। अगर मानों मन की प्लेट वा कागज पूरा साफ नहीं हुआ, पूरा नहीं मिटा तो उस पर अगर बदले में आप और अच्छा लिखने भी चाहो तो स्पष्ट होगा? अर्थात् सर्व गुण, सर्व शक्तियां धारण करने चाहो तो सदा और फुल परसेन्ट में होगा? बिल्कुल क्लीन भी हो, क्लीयर भी हो तब यह शक्तियां सहज कार्य में लगा सकते हो। कारण यही है, मैजारिटी की स्लेट क्लीयर और क्लीन नहीं है। थोड़ा-थोड़ा भी बीती बातें या बीती चलन, व्यर्थ बातें वा व्यर्थ चाल-चलन सूक्ष्म रूप में समाई रहती हैं तो फिर समय पर साकार रूप में आ जाती हैं। तो समय अनुसार पहले चेक करो, अपने को चेक करना, दूसरे को चेक करने नहीं लग जाना क्योंकि दूसरे को चेक करना सहज लगता है, अपने को चेक करना मुश्किल लगता है। तो चेक करना कि हमारे मन की प्लेट व्यर्थ से और बीती से बिल्कुल साफ है? सबसे सूक्ष्म रूप है - वायब्रेशन के रूप में रह जाता है। फरिश्ता अर्थात् बिल्कुल क्लीन और क्लीयर। समाने की शक्ति से निगेटिव को भी पॉजिटिव रूप में परिवर्तन कर समाओ। निगेटिव ही नहीं समा दो, पॉजिटिव में चेंज करके समाओ तब नई सदी में नवीनता आयेगी।

दूसरी बात बतायें क्या देखी? बतायें या भारी डोज़ है? जैसे बापदादा ने पहले कहा है कि कैसे भी करके मुझे अपने साथ परमधाम में ले ही जाना है, चाहे मार से चाहे प्यार से ले ही जाना है। अज्ञानियों को मार से और आप बच्चों को प्यार से। ऐसे ही बापदादा अभी भी कहते हैं कि कैसे भी करके

दुनिया के आगे महान आत्माओं को फ़रिश्ते रूप में प्रत्यक्ष करना ही है। तो तैयार हो ना? बापदादा ने सुनाया ना - कैसे भी करके बनाना तो है ही। नहीं तो नई दुनिया कैसे आयेगी! अच्छा - दूसरी बात क्या देखी?

साल का अन्त है ना! देखो, बापदादा 'मैजारिटी' शब्द कह रहा है, सर्व नहीं कह रहा है, मैजारिटी कह रहा है। तो दूसरी बात क्या देखी? क्योंकि कारण को निवारण करेंगे तब नव-निर्माण होगा। तो दूसरा कारण - अलबेलापन भिन्न-भिन्न रूप में देखा। कोई-कोई में बहुत रॉयल रूप का भी अलबेलापन देखा। एक शब्द अलबेलेपन का कारण - ''**सब चलता है**''। क्योंकि साकार में तो हर एक के हर कर्म को कोई देख नहीं सकता है, साकार ब्रह्मा भी साकार में नहीं देख सके लेकिन अब अव्यक्त रूप में अगर चाहे तो किसी के भी हर कर्म को देख सकते हैं। जो गाया हुआ है कि परमात्मा की हजार आंखे हैं, लाखों आँखें हैं, लाखों कान हैं। वह अभी निराकार और अव्यक्त ब्रह्मा दोनों साथ-साथ देख सकते हैं। कितना भी कोई छिपाये, छिपाते भी रॉयल्टी से हैं, साधारण नहीं। तो अलबेलापन एक मोटा रूप है, एक महीन रूप है, शब्द दोनों में एक ही है ''सब चलता है, देख लिया है क्या होता है! कुछ नहीं होता। अभी तो चला लो, फिर देखा जायेगा!'' यह अलबेलेपन के संकल्प हैं। बापदादा चाहे तो सभी को सुना भी सकते हैं लेकिन आप लोग कहते हो ना कि थोड़ी लाज़-पत रख दो। तो बापदादा भी लाज़ पत रख देते हैं लेकिन यह अलबेलापन पुरुषार्थ को तीव्र नहीं बना सकता। पास विद ऑनर नहीं बना सकता। जैसे स्वयं सोचते हैं ना ''सब चलता है''। तो रिजल्ट में भी चल जायेंगे लेकिन उड़ेंगे नहीं। तो सुना क्या दो बातें देखी! परिवर्तन में किसी न किसी रूप से, हर एक में अलग-अलग रूप से अलबेलापन है। तो बापदादा उस समय मुस्कराते हैं, बच्चे कहते हैं – देख लेंगे क्या होता है! तो बापदादा भी कहते हैं – देख लेना क्या होता है! तो आज यह क्यों सुना रहे हैं? क्योंकि चाहो या नहीं चाहो, जबरदस्ती भी आपको बनाना तो है ही और आपको बनना तो पड़ेगा ही। आज थोड़ा सख्त

सुना दिया है क्योंकि आप लोग प्लैन बना रहे हो, यह करेंगे, यह करेंगे... लेकिन कारण का निवारण नहीं होगा तो टैम्प्रेरी हो जायेगा, फिर कोई बात आयेगी तो कहेंगे बात ही ऐसी थी ना! कारण ही ऐसा था! मेरा हिसाब-किताब ही ऐसा है। इसलिए बनना ही पड़ेगा। मंजूर है ना! टीचर्स मंजूर है? फारेनर्स मंजूर है? बापदादा कहते हैं – बनना ही पड़ेगा। फिर नई सदी में कहेंगे बन गये। ऐसा है ना - कम से कम समय लेना चाहिए। लेकिन बापदादा एक वर्ष दे देता है फिर तो सहज है ना। आराम से करो। आराम का अर्थ है, आ राम अर्थात् बाप को याद करके फिर करना। वह डंलप वाला आराम नहीं करना। बापदादा का आपसे ज्यादा प्यार है, या आपका बाप से ज्यादा प्यार है? किसका है? बाप का या आपका?

बापदादा को आप सबमें निश्चय है कि आप सभी बच्चे प्यार का रिटर्न अव्यक्त ब्रह्मा बाप समान अवश्य बनेंगे। बनेंगे ना! बापदादा छोड़ेगा नहीं! प्यार है ना! जिससे प्यार होता है उसका साथ नहीं छोड़ा जाता है। तो ब्रह्मा बाबा का आपमें बहुत प्यार है। इन्तजार करता रहता है, कब मेरे बच्चे आयें! तो समान तो बनेंगे ना!

ब्रह्मा बाप की एक रूह-रूहान सुनाते हैं। अभी ०८ जनवरी आने वाली है ना! तो ब्रह्मा बाप, शिव बाप को कहते हैं कि आप बच्चों से डेट फिक्स कराओ, मैं कब तक इन्तजार करूं? यह डेट फिक्स कराओ। तो शिव बाप क्या कहेंगे? मुस्कराते हैं! बापदादा फिर भी कहते हैं – बच्चे ही डेट फिक्स करेंगे, बापदादा नहीं करेंगे। तो ब्रह्मा बाप बहुत याद करता है। तो डेट फिक्स करेंगे?

नये वर्ष में यह समान बनने का दृढ़ संकल्प करो। **लक्ष्य रखो कि हमें फ़रिश्ता बनना ही है। अब पुरानी बातों को समाप्त करो। अपने अनादि और आदि संस्कारों को इमर्ज करो। स्मृति में रखो – चलते-फिरते मैं बाप समान फ़रिश्ता हूँ, मेरा पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से कोई रिश्ता नहीं। समझा।** इस परिवर्तन के संकल्प को पानी देते रहना। जैसे बीज को पानी

भी चाहिए, धूप भी चाहिए तब फल निकलता है। तो इस संकल्प को, बीज को स्मृति का पानी और धूप देते रहना। बार-बार रिवाइज़ करो - मेरा बापदादा से वायदा क्या है! अच्छा। आज कौन-सा ग्रुप है? (ज्युरिस्ट और कल्चरल)

ज्युरिस्ट – आपस में मीटिंग की। अच्छा, क्या नया प्लैन बनाया? वारिस कब निकालेंगे, उसकी डेट फिक्स की? यह अच्छी बात है कि वारिस भी निकालेंगे, माइक भी लायेंगे लेकिन माइक थोड़े-थोड़े आये हैं, फारेन वाले लाये थे। अभी और समीप आयेंगे। जो लाये थे वह समीप हैं? ऐसे तैयार हैं जो भाषण करें? आपके बदलें में वह परिचय दें, ऐसे तैयार हैं? (मार्जिन है) तो भारत उनसे आगे जाओ। इन्होंने तो लाये, चाहे सेकण्ड नम्बर माइक हो या फर्स्ट हो, तो भारत वाले थोड़ी भी मार्जिन नहीं छोड़ो और लाओ। यह रेस है, रीस नहीं। रीस नहीं करना, रेस भले करना। फारेन वालों ने हिम्मत तो रखी। उसमें कुछ-कुछ क्वालिटी अच्छी है जो आगे बढ़ सकती है। भारत की टीचर्स क्या करेंगी? कब माइक लायेंगी? भारत की टीचर्स ने वारिस या माइक लाया है? पाण्डवों ने लाया है? *(अन्दर तैयार कर रहे हैं?)* स्टेज पर आवें ना! माइक उसको कहा जाता है जिसका प्रभाव जनता के ऊपर पड़ जाए। जैसे आप लोग स्पीच करते हो, कुछ तो प्रभाव पड़ता है ना! पूरा नहीं पड़ता है कुछ तो पड़ता है। तो ऐसे माइक तैयार करो। बापदादा ने कहा समय अनुसार आप माइट बनेंगे, वह माइक बनेंगे। क्या लास्ट तक आप लोग ही भाषण करते रहेंगे? अपना परिचय आपेही देते रहेंगे? तो सामने लाओ। अगर तैयार हो तो बापदादा के सामने नहीं लेकिन दादियों के आगे लाओ। अच्छा।

तो बापदादा ज्युरिस्ट मीटिंग को कहते हैं कि जैसे आपने मीटिंग में प्लैन बनाया है, प्लैन तो सब अच्छे बनाये हैं, मुबारक हो। अभी जैसे प्रोग्राम की डेट फिक्स बताई, दो प्रोग्राम बना दिये, *(एक जयपुर में ज्युरिस्ट कान्फ्रेन्स रखी है, दूसरी आबू में)* अच्छा किया राजस्थान को उठाया है। ऐसे ही ऐसी

मीटिंग करो जो वारिस या माइक की डेट फिक्स हो जाए। वकील और जज तो केस में फैंसला करते हैं ना तो यह भी फैंसला करो। ज्युरिस्ट मीटिंग वालों के नाम तो नोट हैं ना तो बापदादा उन्हों को खास विशेष लड्डू खिलायेंगे। बहुत ताकत वाले लड्डू दादी बनवाती है। (आज टीचर्स को खिलाया है) टीचर्स फिर तो माइक लायेंगी ना। लड्डू खाया है तो माइक तो आयेंगे ना।

कल्चरल विंग वाले हाथ उठाओ – आप लोगों ने क्या प्लैन बनाया, क्या मीटिंग की? आप लोगों ने कल्चरल का बनाया या कल्चर का बनाया? (मीटिंग करना बाकी है) तो लड्डू भी बाकी है। जो भी वर्ग पहले वारिस या माइक लायेगा उनको ५-५ लड्डू खिलायेंगे। भण्डारा तो भरपूर है। *(आप कहेंगे तो ५६ भी खिला देंगे)* बड़ी दादी है तो बड़ी दिल है। अच्छा है, यह वर्ग के प्रोग्राम भी अच्छे सेवा में समीप ला रहे हैं और सभी वर्ग अपनी-अपनी सेवा में अच्छे आगे बढ़ रहे हैं। और यह भी जो हर वर्ग वालों को चांस दिया है, वह भी अच्छा है। दिखाई तो देते हैं कौन-कौन हैं, कितने हैं! आये तो कम होंगे लेकिन यह वर्ग हैं, कुछ कर रहे हैं - यह तो पता पड़ता है।

अच्छा - आज का क्या प्रोग्राम है? मतलब ५७ बजायेंगे, संगम पूरा करेंगे। यह ५७ भले बजाना, लेकिन संगम का अन्त भी जल्दी लाना।

डबल विदेशी – जैसे भारत हर टर्न में आता है, फ़ारेन वाले भी कम नहीं हैं। हर टर्न में अपना अधिकार ले लेते हैं। अच्छा है, बापदादा सदा कहते हैं कि फ़ारेनर्स इस जन्म के फ़ारेनर्स हैं लेकिन अनेक जन्म के ब्राह्मण परिवार के हैं। अगर आप लोग विदेशी नहीं बनते तो विदेश के भिन्न-भिन्न देशों की सेवा कैसे होती! अगर आप विदेशी के रूप में नहीं आते तो बापदादा को सब देशों की भाषा के यहाँ क्लास रखने पड़ते, तैयार करने पड़ते। तो आप लोग जो भिन्न-भिन्न देश में गये हो, वह सेवा के प्रति गये हो। समझा। ओरीज्नल आप ब्राह्मण आत्मायें हो, विदेशी आत्मायें नहीं हो। भिन्न-भिन्न विश्व की सेवा के लिए गये हो, देखो भारत में भी हर भाषा के बच्चे आये हैं और सेवा कर रहे हैं, नहीं तो पहले एक ही सिन्ध का ग्रुप था। फिर धीरे-धीरे

भिन्न-भिन्न ग्रुप चाहे भारत के, चाहे विदेश के आते रहे और बढ़ते रहे, यह भी ड्रामा में बना हुआ खेल है। वैसे भी पहले जड़ में थोड़े होते हैं फिर धीरे-धीरे तना और शाखायें निकलती हैं। वह फाउण्डेशन बना - निमित्त सिन्ध देश का, फिर धीरे-धीरे वृक्ष बढ़ता गया। भाषायें और देश की शाखायें, आप शाखाओं में नहीं हो, आप तो बापदादा के साथ हो।

(दिल्ली ग्रुप सेवा में आया है) – दिल्ली वाले हाथ उठाओ। सेवा की सेवा और वैरायटी मेवा भी खाया ना! सेवा का मेवा अवश्य मिलता है। जो भी सेवा में आते हैं उनको सबसे अच्छा चांस क्या मिलता है, मालूम है? इतने बड़े परिवार की सेवा करते हैं तो सबसे पहले बापदादा की दुआयें हैं ही लेकिन इतने सारे परिवार के आत्माओं की दुआयें मिलती हैं और यह दुआयें बहुत काम में आती हैं। इस समय तो साधारण लगता है लेकिन दुआओं का खज़ाना समय पर बहुत बल देता है। अच्छा - आप लोगों ने नये वर्ष में बहुत कार्ड भेजे हैं ना। बापदादा ने देख लिया, कार्ड हैं, पत्र भी हैं। तो आप लोग सभी नये वर्ष में सिर्फ कार्ड देकर हैपी न्यु इयर नहीं करना लेकिन कार्ड के साथ हर एक आत्मा को दिल से रिगॉर्ड देना। रिगार्ड का कार्ड देना और एक-दो को सौगात में छोटी-मोटी कोई भी चीज़ें तो देते ही हो, वह भी भले दो लेकिन उसके साथ-साथ दुआयें देना और दुआयें लेना। कोई नहीं भी दे तो आप लेना। अपने वायब्रेशन से उसकी बद-दुआ को भी दुआ में बदल लेना। तो **रिगार्ड देना और दुआयें देना और लेना - यह है नये वर्ष की गिफ्ट।** शुभ भावना द्वारा आप दुआ ले लेना। अच्छा।

देश-विदेश के बच्चे साकार में भी बैठे हैं लेकिन आकारी रूप में भी मधुबन में हाज़िर हैं। तो ऐसे चारों ओर के हाज़िर होने वाले बच्चों को हज़ूर भी जी हाज़िर की यादप्यार दे रहे हैं। अच्छी हिम्मत से, मेहनत से कोई जागते भी हैं, कोई किस समय बैठते, कोई किस समय बैठते, इसलिए एक-एक बच्चे को नाम सहित पद्मगुणा मुबारक भी है और विदाई और बधाई के संगम की मुबारक भी है, ग्रीटिंग्स हैं। जिन्होंने भी कार्ड भेजे हैं, यादप्यार भेजे

हैं, उन सभी देश विदेश के बच्चों को बापदादा दिलाराम दिल से रिटर्न यादप्यार दे रहे हैं। सदा आगे उड़ते रहो।

जो देश-विदेश में इण्टरनेट पर मुरली भेजते हैं, बापदादा ने उन्हें सामने बुलाया

आप लोगों को सब तरफ़ से जिन्हों को भी पहुँच रहा है, उन सब आत्माओं की तरफ़ से और बापदादा की तरफ़ से बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो। यह तो बहुत अच्छा कर रहे हो, बाकी एक बात करनी है। करने के लिए तैयार हो? यह जो किया है उसकी मुबारक दी, अभी ऐसी अच्छी-अच्छी आत्मायें तैयार करो जो कम खर्चा बालानशीन हो। बापदादा के पास रिज़ल्ट आई, बहुत खर्चा है। तो जैसे आपने यह पुरुषार्थ किया तो सफलता मिली है ना तो अभी लक्ष्य रखो बापदादा फ्री नहीं कहता है, कम खर्चा बालानशीन। ऐसे कोई तैयार करो जो सहयोगी बनें। बन सकते हैं? अच्छा - अभी देखेंगे। काम तो बहुत अच्छा दुआओं का है। बहुत सभी दुआयें देते हैं, अभी सिर्फ एडीशन करो – 'कम खर्चा'। थोड़ा-थोड़ा कम कराते जाओ। इन्वेन्शन करते जाओ, बापदादा के पास यह रिपोर्ट आवे कि कम खर्चा बालानशीन है। भारत में करो, विदेश में करो, कहाँ से भी करो लेकिन यह लक्ष्य रखो, लक्ष्य से सब हो जाता है और होना ही है। यह साइंस बनी ही आप लोगों के लिए है। देखो स्थापना के DDD वर्ष पहले से ही यह सब धीरे-धीरे निकला है। तो किसके लिए निकला? सुख तो ब्राह्मणों को ही मिलना है ना! तो बहुत अच्छा, जब टोली बाँटें तो आप लेना, अभी टोली खाना फिर कम खर्च बालानशीन होगा तो लड्डू मिलेंगे। बहुत अच्छा।

चारों ओर की महान आत्माओं को, सदा परिवर्तन शक्ति को हर समय कार्य में लगाने वाले, विश्व परिवर्तक आत्माओं को, सदा दृढ़-निश्चय से प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाने वाले ब्राह्मण सो फरिश्ते आत्माओं को, सदा एक बाप दूसरा न कोई, बाप समान बनने वालों को, बापदादा के प्यार का रिटर्न देने वाली महावीर आत्माओं को, बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पहली जनवरी २००० प्रातः (रात्रि १२.०० बजे के बाद) बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष, नई सदी की मुबारक दी

सभी ने न्यु ईयर मनाया। चारों ओर के बच्चों को नये वर्ष, नये युग की, नये जीवन की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो! इस नये वर्ष में ब्रह्मा बाप के द्वारा उच्चारे हुए महावाक्य सदा याद रखना - **निराकारी, निरंहकारी साथ में नव निर्माणधारी।** सदा निर्मान और निर्माण के कर्तव्य का बैलेन्स रखते उड़ते रहना। इस वर्ष में विशेष स्व-परिवर्तन की विशेषता को सामने रखते हुए उड़ते और उड़ाते रहना। सदा ब्रह्मा बाप को हर कदम में फ़ालो फ़ादर करते रहना। तो मुबारक हो, मुबारक हो! पद्मगुणा मुबारक हो!!

दिल्ली में एकडमी बनाने के लिए जमीन ली गई है, बापदादा को समाचार सुनाया

आप सबको मालूम है कि बेहद के सेवा की सौगात दिल्ली को मिली है। इसमें सदा बेहद के प्लैन बनते चारों ओर सन्देश मिलते जायेंगे और सर्व का सहयोग है क्योंकि सर्व की राजधानी बनने वाली है। तो बीज डालने से फल मिलता है। अभी बीज डालेंगे तो वहाँ भविष्य में रिटर्न पदमगुणा होकर मिलना ही है। तो प्लैन भी ऐसे बनाओ, सिस्टम भी ऐसे बनाओ जो बेहद की फीलिंग आवे। कोई छोटा सा सेन्टर है यह नहीं। फलाने का है, फलानी का है यह नहीं, सबका है। और बेहद की सिस्टम से बेहद की स्थापना करते चलो, एक एक्जैम्पल बनें। नाम दिल्ली का है लेकिन सब समझें कि हमारा है। जैसे बापदादा को सब समझते हैं हमारे हैं, दादियों को सब समझते हैं हमारी दादियां हैं, ऐसे यह सेवा हमारी सेवा है, इस बेहद रूप से, नवीनता के रूप से स्थान चलाकर दिखाना। दिल्ली वालों को यह बेहद की सौगात मिली है। देश-विदेश के बीज से यह वरदान मिला है। तो हर एक समझे कि बेहद का स्थान है और इससे ही बेहद को सन्देश मिलेगा। अच्छा है नये वर्ष में यह फाइनल करके आप लोगों को सौगात मिल गई। मिली है ना सौगात!

(नाम क्या रखें?) पहले सजाओ तो सही। मकान बनाओ फिर नाम पड़ेगा। लेकिन सदा बाबा और बाबा का बेहद का स्थान। सदा मन, वाणी और कर्म- जिससे भी सहयोग दे सको वह देते रहो। एक एक्ज़ाम्पल हो, नवीनता हो। तो आपस में राय करके ऐसा प्लैन बनाओ। अच्छा - सभी को गुडनाइट भी हो गई, गुडमार्निंग भी हो गई।

श्रीलंका गवर्मेन्ट ने १० एकड़ जमीन सेवा के लिए दी है। ग्लोबल हाउस के पास भी जमीन मिल गई है

आप लोग सुन रहे हैं, तो यह नहीं समझो दिल्ली को मिली, लण्डन को मिली, श्रीलंका को मिली, नहीं। आप सबको मिली। आप सबका है। राजस्थान को भी मिलनी है। तो सभी को कितने स्थान मिल रहे हैं। आपके हैं ना। तो नये वर्ष की बहुत-बहुत सौगातें सेवा प्रति मिली हैं। अभी सभी खूब तालियां बजाओ। अभी ऐसी कोशिश करो जो दिल्ली को और जमीन फ्री मिले, फिर ज़्यादा तालियां बजाना। *(सभी ने खूब ज़ोर की तालियां बजाई)* ऐसी तालियां बजाते हो इससे सिद्ध है मिलेगी। अच्छा - तालियां तो बहुत जल्दी बजा दी, अभी एक सेकण्ड में फ़रिश्ता बन सकते हो? तो अभी फ़रिश्ता बन जाओ। अच्छा।

कोई हलचल की बात भी सामने हो लेकिन आपको अलौकिक समझते हैं? तो चेक करो कि बोल-चाल, चेहरा साधारण कार्य में भी न्यारा और प्यारा अनुभव होता है? कोई भी समय अचानक कोई भी आत्मा आपके सामने आ जाए तो आपके वायब्रेशन से, बोल-चाल से यह समझेंगे कि यह अलौकिक फ़रिश्ते हैं?